श्री शुक्लयजुर्वेदीय

# रुद्राष्टाध्यायी

(रुद्री पाठ)





गग नमः सरस्वत्यै नमः राधा कृष्णाय नमः

गग नमः सरस्वत्यै नमः राधा कृष्णाय नमः

# शुक्ल यजुर्वेदीय सपूजन
# सम्पूर्ण
# रुद्राष्टाध्यायी

## स्तोत्र, स्तुति एवं आरती सहित

सम्पादनकर्ता :
पं० शिवस्वरूप 'यज्ञिक भाष्कर प्रयाग (भटवाडी), उत्तरकाशी
फोन : 01334-225619

प्रकाशक :
बी०एस० प्रमिन्दर
प्रकाशन, दिल्ली-51

मूल्य—60

मुख्य वितरक :
कर्मसिंह अमरसिंह, पुस्तक विक्रेता
बड़ा बाजार हरिद्वार-249401

# ॥निवेदन॥

लोकहित के लिये विषपान करने वाले सम्पूर्ण चराचर संसार के कर्ता, जो संसार की उत्पत्ति के हेतु तथा उसका अन्तकाल भी स्वयं हैं, जो मोह, तमोगुण, रजोगुण से परे जिनका योगीजन निरन्तर ध्यान करते हैं, जिनके मस्तक पर तीनों भुवनों को पवित्र करने वाली मां गंगा विराजमान है जिन्होंने देव, दानव, यक्ष, किन्नर, मनुष्यों को वरदान दिये, आचार्य शुक्र को संजीवनी विद्या प्रदान करने वाली मां गंगा विराजमान है, जिन्होंने देव, दानव, यक्ष, किन्नर, मनुष्यों को वरदान दिये, आचार्य शुक्र को संजीवनी विद्या प्रदान करने वाले भगवान शंकर ही इस कलियुग में सबकी मनोकामना पूर्ण करने में सक्षम हैं।

कोई भी मनुष्य अहिंसा के द्वारा इन्द्रियों को विषयों से हटाकर प्राणीमात्र पर दया करते हुए, शक्तिपूर्वक, मन को वश में रखते हुए, स्वधर्म का पालन करते हुए भगवान शिव का ध्यान सच्चे मन से कर न्यायोपार्जित द्रव्य के द्वारा शिव का पूजन करता है तो उसे अवश्य ही भगवान शिव संसार के बन्धनों से मुक्ति तथा इहलोक में सुख प्रदान करने वाले हो जाते हैं। भगवान शंकर तो सभी कामनाओं को पूर्ण करने में समर्थ हैं, उनके प्रसन्न होने पर संसार में कुछ भी दुर्लभ नहीं है जो भगवान शिव का ध्यान पूजन या अनन्य भाव से भजन करते हैं, उन्हें तो वे अन्तर्यामी

परमात्मा स्वयं अपना परम पद ही दे देते हैं। दीर्घायु एवं मोक्ष के हेतु भगवान शंकर की आराधना अवश्य ही करणीय है।

शिव पूजन की कई पुस्तकें आज उपलब्ध हैं, परन्तु इस पुस्तक में साधकों की सुविधार्थ मैंने देवताओं के पूजन के साथ शिव का पूजन अच्छे ढंग से लिखकर रुद्राष्टाध्यायी का पाठ लिख अनेक स्तोत्रों का समावेश कर दिया जो पुरोहित कर्म करने वाले ब्राह्मणों, साधकों को मनोइच्छित कामना पूर्ण करने में सफल होगी।

अन्त में मैं उन सभी पूज्य आचार्यों, पवित्र हृदय सन्त महात्माओं, लेखक, विद्वान महानुभावों मार्ग प्रदर्शक जंगम तीर्थरूपी ब्राह्मणों के श्री चरणों में प्रणाम करते हुए विश्व के कल्याण के लिये प्रार्थना करता हूँ।

**यतोयतः समीहसे ततो नोऽअभयंकुरु।**
**शन्नःकुरु प्रजाभ्यो भयन्नः पशुभ्यः॥**

**पं० शिव स्वरूप 'यज्ञिक'**
भाष्कर प्रयाग (भटवाड़ी) टकनौर उत्तरकाशी
उत्तरांचल प्रदेश

# ॥ शिव पूजन सामग्री ॥

१. रौली ५० पैसा
२. मौली ५० पैसा
३. धूपबत्ती १ रुपया
४. केशर २ रुपया
५. कपूर १ रुपया
६. रुई ५० पैसा
७. चावल १ रुपया
८. अबीर ५० पैसा
९. बुक्का (अभ्रक) ५० पै
१०. सिन्दूर ५० पैसा
११. पान २०
१२. सुपारी २५
१३. ऋतुफल १ दर्जन
१४. नारियल २
१५. इत्र शीशी १
१६. वरण-सामग्री ११
१७. कुशासन ११
१८. पंचपात्र १
१९. आचमनी
२०. रुद्राक्षमाला
२१. गोबर
२२. गोमूत्र
२३. थाली १
२४. कटोरी १
२५. पुष्पमाला १५
२६. विल्वपत्र १ रुपया
२७. दूर्वा ५० पैसा
२८. गंगाजल अभिषेकार्थ
२९. इलायची १ रुपया
३०. लवंग १ रुपया
३१. दुग्ध ५०० ग्राम
३२. दधि २५० ग्राम
३३. घृत १०० ग्राम
३४. शहद १०० ग्राम
३५. चीनी २०० ग्राम
३६. कुशा
३७. शिवजी के लिये १ धोती
३८. शिवजी के लिए १ अंगोछा
३९. अभिषेकपात्र १
४०. मिट्टी के सकोरे ११
४१. ब्राह्मणों के लिये दक्षिणा
४२. तुलसी ५० पैसा
४३. चन्दन
४४. यज्ञोपवीत ५० पैसा
४५. धतूरे के फूल २
४६. नैवेद्य (पेड़ा) ५०० ग्राम

# ॥शिवपूजन विधि॥

यजमान पूर्व अथवा उत्तर मुंह कर अपने दक्षिण भाग में पत्नि को बिठा रक्षा दीप घी अथवा तिल के तेल से जला कर भगवान शंकर का ध्यान करे।

शुद्धस्फटिकसंकाशं त्रिनेत्रं पंचवक्कम्।
गंगाधरं दश भुजं सर्वाभरण भूषितम्॥२॥
नीलग्रीवं शशाङ्काङ्कन्नागयज्ञोपवीतिनम्।
व्याघ्रचर्मोत्तरीयञ्चवरेण्यमभयप्रदम्॥२॥
कमण्डल्वक्षसूत्राभ्यामन्वितं शूलपाणिनम्।
ज्वलन्तम्पिङ्गलजटाजूटमुद्योतकारिणम्॥३॥
अमृतेनालुप्तं हृष्टमुमादेहार्धधारिणम्।
दिव्य सिंहासनासीनन्दिव्यभोगसमन्वितम्॥४॥
दिग्देवतासमायुक्तं सुरासुरनमस्कृतम्।
नित्यं च शाश्वतं शुद्धं ध्रुवमक्षरमव्ययम्॥५॥

सर्वव्यापिनमीशानं रुद्रं वै विश्वरूपिणम्।
एवंध्यात्वा द्विजः सम्यक् ततो यजनमारभेत्॥६॥

भगवान शंकर को पुष्प अर्पण करें।

**आचमन**- ॐ केशवाय नमः ॐ नारायणाय नमः ॐ ॐमाधवाय नमः॥ ॐ गोविन्दाय नमः॥ हस्तप्रक्षालनम्॥

बांये हाथ में जल लेकर दाहिनें हाथ की अनामिका में तीन कुशाओं की पवित्री धारण कर जल अभिमंत्रित करे-

ॐ पवित्रे स्थो व्वैष्णव्यौ सवितुर्व्वः प्प्रसवऽउत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्य्यस्य रश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्॥

यजमान अपने शरीर तथा पूजन सामग्री पर जल के छींटे लगावे-

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थांगतोऽपि वा।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

भूत्तोत्सारण–ये भूतानामधि पतयो विशिखासः कपर्दिनः।
तेषा ॐ सहस्त्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि॥

**आसन पूजन**– ॐ स्योना पृथिवि नो भवान्नृक्षरा निवेशनी यच्छानः शर्म सप्रथाः॥ पृथिव्यैनमः॥

**घण्टा पूजन**–ॐ सुपर्णोऽसि गरुत्माँस्त्रिवृत्ते शिरो गायत्रं चक्षुर्वृहद्रथन्तरे पक्षौ। स्तोम आत्मा छन्दाँ स्यङ्गानि यजूँ षि नाम। साम ते तनुर्वामदेव्यं यज्ञायज्ञियं पुच्छं धिष्ण्या शफाः सुपर्णोऽसि गरुत्मान्दिवं गच्छ स्वः पत॥

**शंख पूजन**–ॐ अग्निरिषिः पवमानः पांचजन्यः पुरोहितः तमीमहे महागयम्॥

**धूप पात्र पूजन**–ॐ ऋताषाडऋत धामाग्निर्गन्धर्वस्तस्यौषधयौऽप्यसरसो मुदो नाम। सनऽ इन्द्रं ब्रह्मक्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट् ताभ्यः स्वाहा॥

**भस्मधारण**– तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्॥

**रुद्राक्ष धारण**– ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव **बन्धनान्मृत्यौर्मुक्षीय माऽमृतात्॥** यजमान रुद्राक्षमाला धारण कर लेवे।

**शिखाबन्धनमंत्र**-ॐ मा नस्तोके तनये मा न ऽ आयुषि मा नो गोषु मानो ऽश्वेषु रीरिषः। मा नो व्वीरान्नुद्र भामिनो व्वधीर्हविष्मन्तः सदमित्वा हवामहे॥ 

शिखा बांधकर प्राणायम करें-

**प्राणायाम**-ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यं ॐ तत्सवितुर्वरेण्यम्भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्॥

पुनः आचमन करें

**दीपक पूजन**-भो दीप दीप रूपस्त्वं कर्म साक्षीह्यविघ्नकृत। यावत्कार्य समाप्तिः स्यातावदत्र स्थिरौ भव॥ दीपक का पूजन गंध अक्षतादि से कर लेवें।

**ब्राह्मण पूजन**- ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचोवेन ऽआवः। सबुध्न्या ऽउपमाऽअस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः॥

यजमान ब्राह्मण का पूजन कर लेवे।

**यजमान तिलक मंत्र**-ॐ युजन्तिव्रध्नंमरुषंचरंतंपरितस्तुषः। रोचन्तेरोचनादिवि। युजन्त्यस्यकाम्याहरी विपक्षसारथे। शोणाधृष्णूनृवाहसा॥

आदित्या वसवोरुद्रा विश्वेदेवाः सपैत्रृकाः।
तिलकं ते प्रयच्छन्तु इष्टकामार्थसिद्धये।। ब्राह्मण यजमान को तिलक देवे।

## ।। स्वस्तिवाचन ।।

हाथ में पुष्प अक्षत लेवें-

ॐ आनोभद्राः क्रतवोयन्तु विश्वतोदब्धासो ऽ अपरीतासऽउद्भिदः।
देवा नो यथा सदमिद्वृधे ऽअसन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे।।१।।
देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवाना ँ रातिरभि नो निवर्ततताम्।
देवाना ँ सख्यमुपसे दिमा वयं देवा न ऽ आयुः प्रतिरन्तु जीवसे।।२।।
तान्पूर्वया निविदा हूमहे वयं भगं मित्रमदितिं दक्षमस्त्रिधम्।
अर्यमणं वरुण ँ सोममश्विना सरस्वती नः सुभगा मयस्करत्।।३।।
तन्नो वातो मयोभु वातु भेषजं तन्माता पृथिवी तत्पिता द्यौः।
तद् ग्रावाणः सोमसुतो मयोभुवस्तदश्विना श्रृणुतं धिष्ण्या युवम्।।४।।
तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियंजिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा नो

यथा वेदसामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये॥५॥
स्वस्ति न ऽ इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो ऽ अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥६॥
पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभंयावानो विदथेषु जग्मयः।
अग्नि जिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वे नो देवा ऽ अवसागमन्निह॥७॥
भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवा ᳪ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः॥८॥
सतमिन्नु शरदो ऽ अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम्।
पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः॥९॥
अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता सपुत्रः।
विश्वे देवा ऽ अदितिः पंच जना ऽ अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम्॥१०॥
द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ᳪ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः।
व्वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्मशान्तिः

सर्व्व ॐ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामाशान्तिरेधि॥११॥

यतोयतः समीहसे ततो नो ऽ अभयं कुरु शन्नः

कुरु प्रजाभ्यो ऽ भयं नः पशुभ्यः॥१२॥

विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव यद्भद्रं तन्न ऽआ सुव॥१३॥

गणानान्त्वा गणपति ॐ हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपति ॐ हवामहे निधीनान्त्वा निधिपति ॐ हवामहे ब्वसो मम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासिगर्भधम्॥१४॥

अम्बे ऽ अम्बिके ऽम्बालिके नमानयति कश्चन।

ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकांकाम्पीलवासिनीम्॥१५॥

शुशान्तिर्भवतु॥ ॐ श्रीमन्महागणाधिपतये नमः।

ॐ लक्ष्मी नारायणाभ्यां नमः। ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः।

ॐ वाणी हिरण्यगर्भाभ्यां नमः। ॐ शचीपुरन्दराभ्यां नमः।

ॐ मातृपितृ चरण कमलेभ्यो नमः। ॐ इष्टदेवताभ्यो नमः।

ॐ कुलदेवताभ्यो नमः। ॐ ग्रामदेवताभ्यो नमः।

ॐ स्थान देवताभ्यो नमः। ॐ वास्तु देवताभ्यो नमः।
ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। ॐ सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः।
ॐ सिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नमः॥

॥ इति श्री स्वस्तिवाचन ॥

# ॥ गणेश ध्यान ॥

रक्ताक्षत दूर्वा हाथ में रख गणेश का ध्यान करे-

ॐ सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः॥१॥
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।
द्वादशै तानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि॥२॥
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
संग्रामे सङ्कटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते॥३॥
शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनन्ध्यायेत्सर्वविघ्नोपशान्तये ॥४॥
अभीप्सितार्थसिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः।
सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः॥५॥
यत्रयोगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवानीतिर्मतिर्मम॥६॥

अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते।
तेषां नित्याभियुक्तानां योग क्षेमं वहाम्यहम्॥७॥
स्मृते सकलकल्याणं भाजनं यत्र जायते।
पुरुषं तमजं नित्यं व्रजामि शरणं हरिम्॥८॥
सर्वदा सर्व कार्येषु नास्ति तेषाममङ्गलम्॥
येषां हृदिस्थो भगवान् मङ्गलायतनं हरिः॥९॥
लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजय।
येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः॥१०॥
तदेव लग्नं सुदिनंतदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव।
विद्याबलं दैवबलं तदेव लक्ष्मीपते तेऽङ्घ्रियुगं स्मरामि॥११॥
विश्वेशं माधवं ढुण्डी दण्डपाणि च भैरवम्।
वन्दे काशीं गुहा गङ्गा भवानी मणिकर्णिकाम्॥१२॥
सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोस्तु ते॥१३॥

भगवान गणेश को पुष्पाक्षत चढ़ा देवें।

# ॥ सङ्कल्प ॥

तिल अक्षत पुष्प जल हाथ में लेकर संकल्प करे-ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्री ब्रह्मणोऽह्निद्वितीय-परार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे सप्तमे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जन्बूद्वीपे भरतखण्डे भारतवर्षे आर्यावर्तैकदेशान्तर्गते ऽमुकक्षेत्रे भागीरथ्याः अमुकतीरे विक्रमशके वौद्धावतारे अमुक संवत्सरेऽमुकायनेऽमुकऋतौ महामागल्यप्रदमासोत्तमे मासे पुण्यपवित्रे मासे शुभे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुक करणे अमुकराशिस्थे चन्द्रे अमुकराशिस्थे सूर्ये अमुकराशिस्थेदेवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथायथा राशिस्थानस्थितेषु सत्सु एवंग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टे अस्मिन् शुभक्षणे अमुकगोत्रोत्पनः अमुक शर्म्माहं वा ( नामाहं ) सपत्नीकः श्रुतिस्मृतिपुराणोक्त पुण्यफलप्राप्त्यर्थं मम सकुटुम्बस्य एश्वर्याभिवृद्ध्यर्थं अप्राप्तलक्ष्मीप्राप्त्यर्थं प्राप्तलक्ष्म्याचिरकालसंरक्षणार्थं सकलमनईप्सित- कामनासंसिद्ध्यर्थं लोके वा सभायां राजद्वारे वा सर्वत्र

ॐ नमो शिवाय: ॐ नमो शिवाय: ॐ नमो शिवाय: रुद्राष्टाध्यायी

यशोविजय लाभादि प्राप्त्यर्थं पुत्रपौत्राद्यभिवृद्ध्यर्थं च इह जन्मनिजन्मान्तरे वा 
सकलदुरितोपशमनार्थं तथा मम सभार्यस्य सपुत्रस्य सबान्धवस्य अखिलकुटुम्बस्य समस्तभयव्याधिजरापीडामृत्युपरिहार द्वारा आयुरारोग्यैश्वर्याभि वृद्ध्यर्थ मम समस्तजन्मराशे अखिल कुटुम्बस्य च जन्मराशेः सकाशाद्ये केचिविरुद्ध चतुर्थाष्टमद्वादशस्थानस्थित क्रूरग्रहास्तैः संसूचितं संसूचयिष्यमाणंयत्सर्वाष्टिं तद्विनाशद्वारा एकादश स्थानस्थितवच्छुभफलप्राप्त्यर्थं पुत्रपौत्रादिसन्ततेर-विच्छिन्नभिवृद्ध्यर्थं आधिदैविकाधिभौतिकाध्यात्मिकत्रिविधतापोपशमनार्थं धर्मार्थकाममोक्ष चतुर्विध पुरुषार्थसिद्ध्यर्थ सांबसदाशिव प्रीत्यर्थं अमुकलिंगोपरि यथोपचारैः पूजन पूर्वकंदुग्धधारया जलधारया च अमुकसंख्याकब्राह्मणद्वारा रुद्राभिषेकं कर्म करिष्ये॥ तत्राधिकारप्राप्त्यर्थं कायिकवाचिक मानसिक सांसर्गिकदोषोपशमनार्थं शरीरशुद्ध्यर्थं च गोनिष्क्रयीभूतं द्रव्यं यथानाम गोत्राय ब्राह्मणायदातुमहमुत्सृजे तथा च निर्विघ्नतासिद्ध्यर्थं गणेशाम्बिकयोः पूजनं करिष्ये॥



अक्षत पुष्प जल गणेश पर चढ़ा दे।

# ॥ गणेश पूजन ॥

गणेश पूजन के लिये आचमन लेवें-

**विनियोग-** गणानान्त्वेति प्रजापति ऋषिः यजुश्छन्दो गणपतिर्देवता गणपत्यावाहने पूजने विनियोगः।

**गणेशाम्बिका आवाहन-** ॐ गणानान्त्वा गणपति ँ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति ँ हवामहे निधीनां त्वा निधिपति ँ हवामहे वसोमम। आहमजानि गर्ब्भधमात्वमजासि गर्ब्भधम॥ ॐ अम्बेऽ अम्बिकेऽ म्बालिकेनमानयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकाङ्काम्पीलवासिनीम्॥

आवाहन कर स्थापन करें।

**स्थापन-**ॐ मनोजूतिर्जुषतामाजस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमंतंनो त्वरिष्टंयज्ञ ँ समिमन्दधातु। विश्वेदेवासऽइहमादयन्तामों ३ प्रतिष्ठ॥ गणेशाम्बिकासुप्रतिष्ठितो

वरदोभव।। (रुद्र पंचायत देवताओं के पूजन क्रम में "श्री विष्णु रुद्र विनायक सूर्यशक्तिभ्यो नमः आवाहनं" "स्थापनं" आदि उच्चारण करे शिव पूजन पृथक भी दिया गया है)

**पंचायतनदेवता आवाहन**- ॐ सहस्त्रशीर्षा पुरुषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात्।
सभूमि ँ सर्वतः स्पृत्वात्यतिष्ठद्दशांगुलम्।।

**आसन**- ॐ पुरुषऽएवेद ँ सर्वयद्भूतंयच्च भाव्यम्।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति।।



**पाद्य**- ॐ एतावानस्य महिमातो ज्यायांश्च पुरुषः।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि।।
पैर धोने के लिए जल देवें।

**अर्घ्य**- ॐ त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोस्येहा भवत्पुनः।
ततो विष्वङ्व्यक्रामत्साशनानशनेऽअभि।।
हाथ धोने के लिये अर्घ्य देवें

**आचमन-** ॐततोविराडजायत विराजोऽअधि पूरुषः स
जातो अत्यरिच्यत पश्चाद् भूमिमथोपुरः॥
मुख प्रक्षालन के लिये आचमन देवें।

**स्नानियजल-** ॐ तस्माद्यज्ञातसर्व्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम्।
पशूँस्तांश्चक्रे वायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये॥
स्नान के लिये आचमन देवें।

**पयस्नान-** ॐ पयः पृथिव्यां पयऽओषधीषु पयोदिव्यन्तरिक्षेपयोधाः।
पयस्वतीः प्रदिशः सन्तुमह्यम्॥ दूध से स्नान करावें।

**दधिस्नान-** ॐ दधि क्राव्णोऽ अकारिषं जिष्णोरश्वस्य व्वाजिनः।
सुरभिनोमुखाकरत्प्रणऽआयु ँ षितारिषत्॥ दधि स्नान करावें।

**घृतस्नान-** ॐ घृतं मितिक्षेधृतमस्ययोनिर्धृतेश्रितो धृतंवस्यधाम।
अनुष्वधमावहमादयस्वस्वाहा कृतं वृषभव्वक्षि हव्यम्॥ घी धारा देवें।

**मधुस्नान**-ॐ मधुव्वाता ऽ ऋतायते मधुक्षरन्तिसिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः। मधुनक्तमुतोषसोमधुमत्पार्थिव ँ रजः। मधुद्यौरस्तुनः पिता। मधुमान्नोव्वनस्पतिर्म्मधुमां ऽ अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावोभवन्तुनः॥

मधु से स्नान करावें।

**शर्करास्नान**- ॐ अपा ँ रसमुद्वयस ँ सूर्य्येसन्त ँ समाहितम्। अपा ँ रसस्ययोरसस्तंव्वोगृह्णाम्युत्तममुपयाम गृहीतो ऽसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम॥ शक्कर से स्नान करावें।



**पंचामृतस्नान**- ॐ पंचनद्यः सरस्वतीमपि यन्तिसरत्रोतसः।
सरस्वती तु पंचधा सो देशे भवत्सरित्॥

पंचामृत से स्नान कर शुद्ध जल से स्नान करावें।

**शुद्धोदक स्नान**- ॐ शुद्धवालः सेर्व्वशुद्धवालामणिवालस्तऽआश्विनाः।
श्येतः श्येताक्षेऽरुणास्ते रुद्राय पशुपतये कर्णायामाऽ-
अवलिप्सा रौद्रा नभो रुपाः पार्जन्याः॥

**वस्त्र**- ॐ तस्माद्यज्ञात् सर्वहुत ऽऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दा ँ सिजज्ञिरे तस्माद्य जुस्तस्मादजायत॥
वस्त्र चढ़ाकर एक आचमन जल चढ़ा देवें।

**यज्ञोपवीत**- ॐ तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोभयादतः।
गावोह जज्ञिरे तस्मात्तस्माजाता अजावयः॥
यज्ञोपवीत चढ़ाकर एक आचमन जल चढ़ा देवें।

**चन्दन**- ॐ तं यज्ञं वर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रतः।
तेन देवा ऽ अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये॥
चन्दन चढ़ावें।

**अक्षत**- ॐ अक्षन्नमीमदन्तह्यवप्रिया अधूषत अस्तोषतस्वभानवो
विप्रा न विष्ट्या मतीयो जान्विन्द्र ते हरिः॥ अक्षत चढ़ावें।

**पुष्प**- ॐ यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधाव्यकल्पयन्।
मुखं किमस्यासीत् किम्बाहू किमूरू पादा उच्च्येते॥ पुष्प चढ़ावें।

**धूप**- ॐ ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः ऊरु
तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्या ँ शूद्रोअजायत॥ धूप दिखायें।

**दीप**- ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्योऽअजायत।
श्रोत्राद्वायुश्य प्राणश्च मुखादग्निरजायत।। दीपक दिखायें।

**नैवेद्य**- ॐ नाभ्याऽआसीदन्तरिक्षँ शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत।
पद्भ्या भूमिर्दिशः श्रोत्रातथा लोकांऽअकल्पयन्।। नैवेद्य चढ़ा जल छोड़ दें।

**ऋतुफल**-ॐ याः फलिनीर्या ऽ अफला ऽ अपुष्पा याश्चपुष्पिणीः।
बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वँ हसः।। फल चढ़ायें।

**पूगीफल**-ॐयत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वतः।
वसन्तो ऽ स्यासीदाज्यं ग्रीष्म ऽइध्मः शरद्धविः।। सुपारी चढ़ावें।

**दक्षिणा**-ॐयद्दतं यत्परादानं यत्पूर्तं याश्चदक्षिणाः।
तदग्निर्वैश्वकर्मणः स्वर्देवेषुनो दधत्।। दक्षिणा चढ़ायें।

**प्रदक्षिणा**- ॐ सप्तास्यासन् परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः।
देवा यद्यज्ञं तन्वानाऽअवध्नन् पुरुषं पशुम्।।
परिक्रमा कर पुष्प हाथ में रखें।

**पुष्पाञ्जलि-** ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
तेह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।।
पुष्प चढ़ा अर्घ्य देवें।

**विशेषार्घ्य-** रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष रक्ष त्रैलोक्य रक्षक।
भक्तानां अभयं कर्त्ता त्राता भव भवार्णवात्।।१।।
द्वैमातुर कृपासिन्धो षाणमातुरग्रज प्रभो।
वरदत्त्वं वरं देहि वाञ्छितं वाञ्छितार्थद।।२।।
गृहाणार्घ्यमिदं देव सर्वदेव नमस्कृतम्।
अनेन सफलार्घ्येण फलदोऽस्तु सदामम।।३।।

**प्रार्थना-** विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय
लम्बोदराय सकलायजगद्धिताय।
नागाननाय सुरयज्ञ विभूषिताय
गौरी सुताय गणराज नमो नमस्ते।।१।।

भक्तार्तिनाशनपराय गणेश्वराय
शर्वेश्वराय शुभदाय सुरेश्वराय।
विद्याधराय विकटाय च वामनाय
भक्तप्रसन्न वरदाय नमो नमस्ते॥२॥
नमस्ते ब्रह्म रूपाय विष्णु रूपाय ते नमः,
नमस्ते रुद्र रूपाय करि रूपाय ते नमः॥३॥
विश्वरूप स्वरूपाय नमस्ते ब्रह्मचारिणे,
भक्त प्रियाय देवाय नमस्तुभ्यं विनायक॥४॥
लम्बोदरं नमस्तुभ्यं सततंमोदकप्रिय,
निर्विघ्न कुरुमे देव सर्वकार्येषुसर्वदा॥५॥
अनया पूजया गणपति प्रीयताम्॥

॥इतिगणेश पूजनम्॥

## ॥ ब्राह्मण वरण ॥

यजमान वरण सामग्री अथवा उसका मूल्य हाथ में लेकर संकल्प करे-

**देशकालौ संकीर्त्य अमुक गोत्रः अमुकशर्मा अहं संकल्पिते रुद्राभिषेक कर्मणि ( वा महारुद्रे अतिरुद्रेकर्मणि ) एभिर्वरणद्रव्यैः ( पाठकरणार्थं अभिषेक होमकरणार्थं वा ) अमुक गोत्रं शर्माणं ब्राह्मणं त्वाम् वृणे॥**

यदि अधिक ब्राह्मण हों तो ऐसा कहें-

**अमुकगोत्रान्नाना शर्म ब्राह्मणान् युष्मान् वृणे।** ब्राह्मण कहे-**वृतोस्मीति॥** अथवा **वृतास्मः॥**

**मौली को हाथ में बांध दे- ॐ यदाबध्नन्दा- क्षायणा हिरण्यँ शतानीकायसुमनस्यमानाः। तन्म ऽ आवध्नामि शतशारदायायुष्माञ्जरदष्टिर्यथासम्॥**

**यजमान के मौली बाँधने का मंत्र- व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोतिदक्षिणाम्। दक्षिणाश्रद्धामाप्नोतिश्रद्धया सत्यमाप्यते॥**

पूजन क्रम में कलश, मातृका, वसु, ग्रह का पूजन कर शिव पूजन करने का विधान है॥ अतः उपरोक्त पूजन कर शिव का पूजन करें।

# शिव पूजन

पुष्प हाथ में लेकर भगवान शंकर का ध्यान-

ध्याये नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं
रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्।
पद्मासीनं समन्तात्स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं
विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रंत्रिनेत्रम्।।

भगवान शंकर को पुष्प अर्पण कर आवाहन करें[1]।

ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शङ्कराय
च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिव तराय च।।

**स्थापन**- ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्य्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्ट्टं
यज्ञठ. समिमं दधातु। विश्वदेवासऽ इह मादयन्तामो३म्प्रतिष्ठ।।



१. पूर्व प्रतिष्ठि लिंग का आवाहन तथा विसर्जन नहीं होता है।

**पाद्य-** ॐ नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्त्राक्षाय मीढुषे।
अथोये ऽ अस्य सत्वानोहंतेभ्यो ऽ करं नमः।।

**अर्घ्य-**ॐ गायत्रीत्रिष्टुब्जगत्यनुष्टुप्पंक्तया सह बृहत्युष्णिहाककुप्सूचीभिः सम्यन्तुत्वा।।

**आचमन-** ॐ त्र्यम्बकंयजामहेसुगन्धिम्पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात्।

**जलस्नान-** वरुणस्योत्तम्भनमसिवरुणस्य स्कम्भसर्ज्जनीस्थोवरुणस्यऽ
ऋतसदन्यसिवरुणस्यऽऋतसदनमसि वरुणस्य ऽऋतसदनमासीद।।

**गन्धोदकस्नान-** ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वयेश्रियम्।।

**उद्वर्तस्नान-** अँ शुना ते अँ शुः पृच्यतां परुषा परुः।
गन्धस्ते सोम मवतुमदाय रसोऽअच्युतः।।

**विजयास्नान-**ॐ विज्यं धनुः कपर्द्दिनो विशल्यो बाणवाँ २ ऽ उत।
अनेशन्नस्य या ऽ इषव ऽ आभुरस्य निषङ्गधिः।।

**पंचामृतस्नान-** ॐ पञ्चनद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्त्रोतसः।
सरस्वती तु पञ्चधा सोदेशे ऽभवत्सरित्॥

**पृथक् पयस्नान्-** ॐ पयः पृथिव्यां पयऽओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः।
पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्॥

**दधिस्नान-** ॐ दधि क्राब्णो ऽअकारिषं जिष्णो रश्वस्य व्वाजिनः।
सुरभि नो मुखा करत्प्रण ऽ आयूँ षि तारिषत्॥ खौं व

**घृतस्नान-**ॐ घृतंघृत पावानः पिबतव्वसाँव्वसापावानः पिबतान्तरिक्षस्य- षुज्ज
हविरसिस्वाहादिशमधु प्रदिशऽआदिशो व्विदिशऽउद्दिशोदिग्भ्यः स्वाहा॥

**मधुस्नान-** ॐ मधुव्वाता ऽऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः।
माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः॥ मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवँ रजः।
मधुद्यौरस्तु नः पिता॥ मधुमान्नो व्वनस्पतिर्म्मधुमाँ ऽ अस्तु
सर्य्यः माध्वीर्गावो भवन्तु नः॥

सख्यः माध्वीगावी भवन्तु नः॥



**शर्करास्नान**- ॐ अपा ँ रसमुद्वयस ँ सूर्य्ये सन्त ँ समाहितम्।
अपा ँ रसस्य यो रसस्तं बो गृह्णाम्युत्तममुपयायामगृहीतो
ऽसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येषते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्॥

**शुद्धोदकस्नान**-ॐ शुद्धवालः सर्व्वशुद्धवालो मणिवालस्त ऽ आश्विनाः।
श्येतः श्येताक्षो ऽ रुणास्ते रुद्राय पशुपतये कर्णायामा ऽ
अवलिप्ता रौद्रा नभो रूपाः पार्जन्याः॥

**वस्त्र**- ॐ युवासुवासाः परिवीतऽआगात्स उश्रेयान्भवति जायमानः।
तंधीरासः कवयउन्नयन्ति स्वाध्यो मनसादेवयन्तः॥

**यज्ञोपवीत**- यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥
यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वा यज्ञोपवीतेनोपनह्यामि॥

**उपवस्त्र**- ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म्मव्वरूथमासदत्स्वः।
व्वासोऽअग्ने विश्वरूपर्ठं० संव्ययस्व व्विभावसो॥

**गन्ध-** ॐत्वां गन्धर्व्वा ऽ अखनँस्त्वा मिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः।
त्वामोषधे सोमोराजा व्विद्वान् यक्ष्मादमुच्यत्॥

**भस्मलेपन-** ॐ प्रसद्य भस्मना योनिमपश्च पृथिवीमग्ने।
सर्ठ० सृज्य मातृभिष्ट्वं ज्ज्योतिष्मान् पुनरासदः॥

**अक्षत-** ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रिया ऽ अधूषत।
अस्तोषत स्वभानवो व्विप्रान विष्ठ्ठयामती योजनान्विन्द्रते हरी॥ खीं

**पुष्प-** ॐ नमः पार्य्यायचावार्य्यायच नमः प्रतरणायचोत्तरणायचनमस्ती- गं
र्थ्यायचकूल्यायचनमः शष्प्यायच फेन्यायचनमः॥

**पुष्पमाला-** ॐ ओषधीः प्रतिमोदध्वम्पुष्पवतीः प्रसूवरीः॥
अश्वा ऽ इव सजित्त्वरी व्वीरुधः पारयिष्णवः॥

**विल्वपत्र-** ॐ नमो बिल्मिने च कवचिने च नमो व्वर्मिणे च व्वरूथिने
च नमः श्श्रुताय च श्श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुब्भ्याय चाहनन्याय च॥

दूर्वा- ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।
एवानो दूर्व्वे प्रतनु सहस्त्रेण शतेन च॥

धत्तूरफल- कार्षिरसि समुद्द्रस्य त्त्वाक्षित्त्या ऽउन्नयामि।
समापो ऽ अद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधीः॥

परिमलद्रव्य-ॐ अहिरिव भोगैः पर्य्येति बाहुं ज्याया हेतिं परिबाधमानः
हस्तघ्नो व्विश्वा व्वयुनानि व्विद्वान् पुमान् पुमाँ सम्परि पातु व्विश्वतः॥

सुगन्धिद्रव्य-ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्।
उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मा ऽ मृतात्॥
त्र्यम्बकंयजामहे सुगन्धिं पतिवेदनम्।
उर्व्वारुकमिव बन्धनादितो मुक्षीय मामुतः॥

धूप-ॐ धूरसि धूर्व्व धूर्व्वन्तं धूर्व तं योऽस्मान् धूर्वति तं धूर्व्व यं व्वयं धूर्वामः।
देवानामसि व्वह्नितमर्ठ० सस्नितमं पप्रितमं जुष्टतमं देवहूतमम्॥

दीपक-ॐ अग्निर्ज्ज्योतिज्ज्योतिरग्निः स्वाहा यूर्यो ज्ज्योतिर्ज्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा। ३२
अग्निर्व्वर्च्चोज्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहा सूर्योव्वर्चोज्ज्योतिर्वर्च्चः स्वाहा।
ज्ज्योतिः सूर्य्यः सूर्य्यो ज्ज्योतिः स्वाहा॥

नैवेद्य-ॐ अन्नपते ऽन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः प्रप्प्रदातारं तारिष ऽ
ऊर्ज्जं नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे॥ नैवेद्यान्ते आचमनीयं समर्पयामि॥

ऋतुफल- ॐ याः फलिनिर्य्या ऽ अफला ऽ अपुष्पा याश्चपुष्पिणीः।
बृहस्पति श्रप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वर्ठ०हसः॥

ताम्बूल- ॐ उत स्मास्य द्रवतस्तुरण्यतः पर्ण्णं न वेरनुवाति प्रगर्धिनः
श्येनस्येव ध्रजतोऽअङ्कसं परि दधिक्राव्णः सहोर्ज्जा तरित्रतः स्वाहा॥

दक्षिणा- ॐ यद्दतं यत्परादानं यत्पूर्तयाश्च दक्षिणाः।
तदग्निर्वैश्वकर्मणः स्वर्द्देवेषुनो दधत॥

निराजन- ॐ आरात्रिपार्थिवँ रजः पितुरप्रायिधामभिः।
दिवः सदाँ वृहति व्वितिष्ठस ऽ आत्वेषंवर्तततेतमः॥

**प्रार्थना-** कर्पूरगौरंकरुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारं।
सदावसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानि सहितं नमामि॥१॥
शान्तं पद्मासनस्थं शशिधरमुकुटं पंचवक्त्रं त्रिनेत्रम्।
शूलंव्रजं चखड्गं परशुमभयदं दक्षभागे वहन्तम्॥
नागं पाशं च घण्टा डमरुकसहितं सांकुशंवामभागे।
नानालंकारयुक्तं स्फटिकमणिनिभं पार्वतीशं नमामि॥२॥

**क्षमापान-** मंत्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर।
यत्पूजितं मया देव परिपूर्ण तदस्तु मे॥१॥
आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।
पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर॥२॥
यदक्षरपदभ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत्।
तत्सर्वं क्षम्यतांदेवः प्रसीद परमेश्वर॥३॥

**अर्पण**– अनेनावाहनासनपाद्यार्घाचमनीयस्नानवस्त्रोपवीतिगधपुष्पधूपदीपनैवेद्यताम्बूलदक्षिणानमस्कारप्रदाक्षिणामंत्र पुष्परूपैः षोडशोपचारैः अन्योपचारैश्च यथाज्ञानेनयथा मिलिपोपचार द्रव्यैः कृतपूजनेन श्रीशिव देवताः प्रीयन्तां न मम॥ ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु॥

यस्यस्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञ क्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्योवन्दे तमच्युतम्॥
ॐ विष्णवे नमः। विष्णवे नमः। विष्णवेनमः॥





# ॥रुद्राभिषेक॥

शिव लिंग के अभिषेक में जल से वर्षा की प्राप्ति, व्याधि के नाश के लिए कुश जल से अभिषेक करे। दही से पशु वाहन की प्राप्ति, लक्ष्मी प्राप्ति के लिए गन्ने के रस से, शहद घी से धन के इच्छुक तथा मोक्ष के चाहने वाले तीर्थ जल से अभिषेक करें। दूध के अभिषेक से बन्ध्या, काकवन्ध्या तथा मृतवत्सा को भी निश्चित रूप से पुत्र की प्राप्ति होती है। ज्वरादि की शान्ति के लिए जलधारा, वंश विस्तार के लिए घी, प्रमेह रोग शान्ति के लिए केवल दूध धारा, श्रेष्ठ बुद्धि की प्राप्ति के लिए दूध शक्कर, शत्रुनाश के लिए सरसों के तेल, पाप नाश के लिए शहद, व्याधि (हर प्रकार की) नाश के लिए घी से भगवान शिव के लिंग का अभिषेक करें। इस अभिषेक को कोई गो के सींग से* धारा देकर रुद्री पाठकर शिव की प्रसन्नता के लिए अभिषेक करते हैं।

ग्यारह रुद्रीपाठ करने पर एक लघु रुद्र तथा ग्यारह लघु रुद्र पाठ करने से एक महारुद्र तथा ग्यारह महारुद्र का पाठ करने से एक अतिरुद्र होता है।

---

१- शिवं गवय श्रृंगेश केशवं शंख वारिणा।
विघ्नेशं ताम्र पात्रेण स्वर्णेन जगद्रम्बिकाम्॥

## अथ षडङ्गन्यासः ।

ॐ मनोर्जूतिर्जुषतामाज्यंस्यबृहस्पति-
र्य्यज्ञमिमन्तंनोत्वरिष्ट्ंयज्ञꣳसमिमन्दंधातु ।
विश्वे देवासऽइहमादयन्तामो३ प्रतिष्ठ ॥ ॐ
हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ अबोद्ध्यग्निःसमिधाज-
नानाम्प्रतिधेनुमिवायतीमुषासम् । यह्वाऽइव
प्प्रवयामुज्जिहानाःप्प्रभानवंः सिस्रतेनाकम-

च्छं ॥ ॐ शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ मूर्द्धानन्दिवो
ऽअरतिम्पृथिव्या वैश्वानरमृतऽआजातमग्निम् ।
कविꣳसम्म्राजमतिथिञ्जनानामासन्नापात्रञ्जन-
यन्तदेवाः ॥ ॐ शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ मर्म्माँ-
णितेवर्म्मणाच्छादयामिसोमस्त्वाराजामृतेना-
नुवस्ताम् । उरोर्वरीयोवरुणस्तेकृणोतुजयन्त-
न्त्वानुदेवामदन्तु ॥ ॐ कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ

अथ षडङ्गन्यासः

व्विश्वतंश्चक्षुरुतव्विश्वतोंमुखोव्विश्वतोंबाहुरुतव्वि-
श्वतंस्प्पात् । सम्ब्बाहुब्भ्यान्धमंतिसम्पतंत्त्रैर्द्द्या-
वाभूमींजनयंन्देवऽएकः ॥ ॐ नेत्रत्रयाय वौषट्
॥५॥ ॐ मानंस्तोकेतनंयेमानऽआयुंषिमानो
गोषुमानोऽअश्वेंषुरीरिषः । मानोंव्वीरान्रुद्द्रभा-
मिनोंव्वधीर्हविष्मंन्तः सदामित्त्वांहवामहे ॥ ॐ
अस्त्राय फट् ॥६॥

## ध्यानम्

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं
रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्।
पद्मासीनं समन्तात्स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं
विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम् ॥



॥ श्रीः ॥

# अथ रुद्राष्टाध्यायी ।

श्रीगणेशाय नमः ॥ हरिः ॐ गुणानान्त्वा
गणपतिꣳ हवामहेप्प्रियाणान्त्वाप्प्रियपतिꣳ हवा
महेनिधीनान्त्वांनिधिपतिꣳ हवामहेव्वसोमम ॥
आहमंजानिगर्ब्भधमात्त्वमजासिगर्ब्भधम् ॥१॥
गायत्रीत्रिष्टुब्जगत्यनुष्टुप्पङ्क्त्यासह ॥ बृहत्यु

ष्णिहाकुकुप्सूचीभिः शम्म्यन्तुत्त्वा ॥२॥ द्विप
दायाश्चतुष्पदास्त्रिपदायाश्चषट्पदाः ॥ विच्छ
दायाश्चसच्छन्दाः सूचीभिः शम्म्यन्तुत्त्वा ॥३॥
सहस्तोमाः सहच्छन्दसऽआवृतः सहप्रमाऽऋष
यः सप्तदैव्याः ॥ पूर्वेषाम्पन्थामनुदृश्यधीराऽअ
न्वालेभिरेरथ्योनरश्मीन् ॥४॥ ॐ यज्जाग्रतो
दूरमुदैतिदैवन्तदुसुप्तस्यतथैवैति ॥ दूरङ्गमञ्ज्योति

तिंषाञ्ज्योतिरेकन्तन्मेमनंः शिवसङ्कल्प्पमस्तु
॥५॥ येनकर्म्मांण्यपसोमनीषिणोयज्ञेकृण्वन्तिवि
दथैषुधीराः ॥ यदपूर्व्वंय्यक्षमन्तः प्प्रजानान्तन्मे
मनःशिवसङ्कल्प्पमस्तु ॥ ६ ॥ यत्प्रज्ञानमुतचे
तोधृतिश्चयज्ज्योतिरन्तरमृतम्प्रजासु ॥ यस्मान्नऽ
ऋतेकिञ्चनकर्म्मंक्रियतेतन्मेमनःशिवसङ्कल्प्प
मस्तु ॥७॥ येनेदम्भूतम्भुवनम्भविष्यत्परिगृहीं

तममृतेनसर्व्वम् ॥ येनंयज्ञस्तायतेसप्तहोतातन्मे
मनं÷शिवसंङ्कल्पमस्तु॥८॥यस्मिन्नृचःसाम
यजूंषियस्मिन्प्रतिष्ठितारथनाभाविवाराः॥
यस्मिंश्चित्तंसर्व्वमोतंप्रजानान्तन्मेमनं÷शि
वसंङ्कल्पमस्तु ॥ ९ ॥ सुषारथिरश्वांनिवयन्मनु
ष्यान्नेनीयतेभीशुभिर्व्वाजिनऽइव ॥ हृत्प्रतिष्ठंय
दजिरञ्जविष्ठन्तन्मेमनं÷शिवसंङ्कल्पमस्तु १०॥

इति प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

हरिः ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्र
पात् ॥ स भूमिꣳ सर्वतस्पृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्
॥ १ ॥ पुरुषऽएवेदꣳ सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम् ॥
उतामृतत्त्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति ॥२॥ एता
वानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः ॥ पादोऽस्य
विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि ॥३॥ त्रिपाद
र्ध्वऽउदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत्पुनः ॥ ततो वि

ष्ष्वङ्व्यक्क्रामत्साशनानशनेऽअभि ॥४॥ ततोँव्वि
राडजायतव्विराजोऽअधिपूरुषः ॥ सजातोऽअत्य
रिच्च्यतपश्चाद्भूमिमथोपुरः ॥५॥ तस्माद्यज्ञात्सर्व्व
हुतःसम्भृतम्पृषदाज्ज्यम् ॥ पशूँस्ताँश्चक्क्रेव्वायव्व्या
नारण्ण्याग्ग्राम्म्याश्च्चये ॥६॥ तस्माद्यज्ञात्सर्व्वहु
तऽऋचःसामानिजज्ञिरे ॥ छन्दाँसिजज्ञिरेत
स्म्माद्यजुस्तस्म्मादजायत ॥७॥ तस्म्मादश्वाऽ

अजायन्तसेकेचोभयादंतः ॥ गावोहजज्ञिरेत
स्म्मात्तस्म्माज्जाताऽअंजावयं÷ ॥८॥ तंयुज्ञम्ब
हिंषिप्प्रौक्षन्न्पुरुंषञ्जातमंग्ग्रतः ॥ तेनंदेवाऽअंयज
न्तसाद्धयाऽऋषंयश्श्चये ॥९॥ यत्पुरुंषंव्व्यदंधुःक
तिधाव्व्यंकल्प्पयन् ॥ मुखङ्किमंस्यासीत्किम्बाहू
किमूरूपादांऽउच्च्येते ॥१०॥ ब्राह्मणोऽस्यमुखं
मासीद्बाहूराजन्न्यःकृतः ॥ ऊरूतदस्ययद्वैश्यं÷

पद्भ्याᳫंशूद्रोऽअजायत ॥११॥ चन्द्रमामनसोजा
तश्चक्षोःसूर्य्योऽअजायत ॥ श्रोत्राद्वायुश्चप्राणश्च
मुखादग्निरजायत ॥१२॥ नाभ्याऽआसीदन्तरि
क्षᳬंशीर्ष्णोद्यौः समवर्त्तत ॥ पद्भ्याम्भूमिर्दिशः
श्रोत्रात्तथालोकाँ२ऽअकल्पयन् ॥१३॥ यत्पुरु
षेणहविषादेवायज्ञमतन्वत ॥ वसन्तोऽस्यासी
दाज्यङ्ग्रीष्मऽइध्मःशरद्धविः ॥१४॥ सप्तास्या

सन्त्परिधयस्त्रिःसप्तसमिधंः कृताः ॥ देवायद्यज्ञ
न्तंन्वानाऽअबध्नन्पुरुषम्पशुम् ॥१५॥ यज्ञेनय
ज्ञमयजन्तदेवास्तानिधर्म्माणिप्रथमान्यासन् ॥
तेहनाकम्महिमानः सचन्तयत्रपूर्वेसाध्याः स
न्तिदेवाः ॥१६॥ अद्भ्यः सम्भृतः पृथिव्यैरसाच्चवि
श्वकर्म्मणः समवर्त्तताग्ग्रे ॥ तस्यत्वष्टाविदधद्रूपमे
तितन्मर्त्यस्यदेवत्वमाजानमग्ग्रे ॥१७॥ वेदाहमे

त्म्पुरुषम्महान्तमादित्यवर्ण्णन्तमसःपुरस्तात् ॥
तमेवव्विदित्वातिमृत्युमेतिनान्न्यःपन्थाव्विद्यतेऽयं
नाय ॥१८॥ प्रजापतिश्चरतिगर्ब्भेऽअन्तरजायमा
नोबहुधाव्विजायते ॥ तस्ययोनिम्परिपश्यन्तिधी
रास्तस्मिन्हतस्थुर्ब्भुवनानिव्विश्वा ॥१९॥ योदेवे
ब्भ्यऽआतपतियोदेवानाम्पुरोहितः ॥ पूर्व्वोयोदेवे
ब्भ्योजातोनमोरुचायब्ब्राह्मये ॥२०॥ रुचम्ब्राह्म

ञ्जनयन्तोदेवाऽअग्ग्रेतदब्ब्रुवन्॥यस्त्वैवंब्ब्राह्मणो
व्विद्यात्तस्यदेवाऽअसन्व्वशे ॥२१॥ श्रीश्चतेलक्ष्मी
श्चपत्क्न्यावहोरात्रे पार्श्वेनक्षत्राणिरूपमश्विनौ
व्व्यात्तम् ॥ इष्ष्णन्निषाणामुम्मऽइषाणसर्व्वलोक
म्मऽइषाण ॥२२॥

इति द्वितीयोऽध्यायः ॥२॥

हरिः ॐ आशुः शिशानोव्वृषभोनभीमोघ

नाघनःक्षोभणश्चर्षणीनाम् ॥ सङ्क्रन्दनोनिमिषऽ
एकवीरःशतꣳसेनाऽअजयत्साकमिन्द्रः ॥ १ ॥
सङ्क्रन्दनेनानिमिषेणजिष्णुनायुत्कारेणदुश्च्यव
नेनधृष्णुना ॥ तदिन्द्रेणजयततत्सहध्वंयुधो
नरऽइषुहस्तेनवृष्णा ॥२॥ सऽइषुहस्तैःसनिष
ङ्गिभिर्वशीसꣳस्रष्टासयुधऽइन्द्रोगणेन ॥ सꣳसृष्ट
जित्सोमपाबाहुशर्द्ध्युग्रधन्वाप्रतिहिताभिरस्ता

॥ ३ ॥ बृहस्पतेपरिदीयारथेनरक्षोहामित्राँ२॥ऽअ
पबाधमानः ॥ प्प्रभञ्जन्त्सेनाः प्प्रमृणोयुधाजय
न्नस्माकमेद्धयवितारथानाम् ॥ ४ ॥ बलविज्ञाय
स्त्थविरः प्प्रवीरःसहस्वान्वाजीसहमानऽउग्ग्रः ॥
अभिवीरोऽअभिसत्त्वासहोजाजैत्रमिन्द्ररथमाति
ष्ठगोवित् ॥५॥ गोत्रभिदङ्गोविदंवज्ज्रबाहुञ्जय
न्तमज्ज्मप्प्रमृणन्तमोजसा ॥ इमᳪसजाताऽअनु

वीरयद्ध्वमिन्द्रꣳ सखायोऽअनुसꣳ रभद्ध्वम
॥६॥ अभिगोत्राणिसहसागाहमानोदयोव्वीरः श
तमन्न्युरिन्द्रः ॥ दुश्च्यवनः पृतनाषाडयुद्ध्यो
ऽस्माकꣳ सेनाऽअवतुप्प्रयुत्सु ॥७॥ इन्द्रऽआसा
न्नेताबृहस्प्पतिर्द्दक्षिणायज्ञः पुरऽएतुसोमः ॥ देव
सेनानामभिभञ्जतीनाञ्जयन्तीनाम्मरुतो सन्त्व
ग्ग्रम् ॥८॥ इन्द्रस्यव्वृष्ष्णोव्वरुणस्यराज्ञऽआदि

त्यानांम्मरुतांᳬंशर्द्धऽउग्ग्रम् ॥ मुहामंनसाम्भुव
नच्च्युवानाङ्घोषोदेवानाञ्जयंतामुदस्थात् ॥९॥ उर्द्धं
र्षयमघवन्नायुंधान्न्युत्सत्त्वंनाम्मामुकानाम्मनां
ᳬंसि ॥ उद्वृत्रहन्न्वाजिनांव्वाजिनान्न्युद्रथानां
ञ्जयंतांय्यन्तुघोषाᳬं ॥१०॥ अस्म्माकमिन्द्रᳬं स
मृतेषुद्ध्वजेष्ष्वस्माकंय्याऽइषंवस्ताजंयन्तु ॥
अस्माकंव्वीराऽउत्तंरेभवन्त्वस्माँ२॥ऽउंदेवाऽअव

ताहवैषु ॥११॥ अमीषांञ्चित्तम्प्प्रतिलोभयन्तीगृ
हाणाङ्गान्न्यप्प्वेपरेहि ॥ अभिप्प्रेहिनिर्द्दहहृत्सु
शोकैरन्धेनामित्त्रास्तमसासचन्ताम् ॥१२॥ अवं
सृष्टापरापतशरव्व्येब्रह्मसꣳशिते ॥ गच्छामित्त्रा
न्प्प्रपद्यस्वमामीषाङ्कञ्चनोच्छिषः ॥१३॥ प्रेताज
यंतानरऽइन्द्रोवः शर्म्मयच्छतु ॥ उग्ग्रावः सन्तु
बाहवोनाधृष्ष्यायथासथ ॥१४॥ असौयासेनाम

स्तः परेषामभ्यैतिनऽओजंसास्पर्द्धमाना ॥ ता
ङ्‌हततमसापव्रतेनयथामीऽअन्न्योऽअन्न्यन्ने
जानन् ॥ १५ ॥ यत्रंबाणाः सम्पतन्तिकुमाराविं
शिखाऽइव ॥ तन्नऽइन्द्रोबृहस्पतिरदितिःशर्म्म
यच्छतुविश्वाहाशर्म्मयच्छतु ॥ १६ ॥ मर्म्मा
णितेवर्म्मणाच्छादयामिसोमस्त्वाराजाऽमृतेनानु
वस्ताम् ॥ उरोर्वरीयोवरुणस्तेकृणोतुजयन्तन्त्वा

नुदेवासंदन्तु ॥ १७ ॥

इति तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

हरिः ॐ व्विभ्राड्बृहत्पिबतुसोम्म्यम्मद्ध्वा
युर्द्दधंद्यज्ञपंतावविहुतम् ॥ व्वातंजूतोयोऽअभिरक्ष
तित्मनाप्प्रजाः पुंपोषपुरुधाव्विराजति ॥ १ ॥ उदु
त्यञ्जातवेदसन्देवंव्वहन्तिकेतवः ॥ दृशेव्विश्वाय
सूर्य्यम् ॥ २ ॥ येनापावकचक्षसाभुरण्यन्तञ्ज

नाँर॥ऽअनु ॥ त्वंव्वरुणपश्यसि ॥ ३ ॥ दैव्व्यांव
द्ध्वर्य्यूऽआगंतहूरथेनसूर्य्यत्वचा ॥ मद्ध्वायुज्ञ
६समञ्जाथे॥तम्प्रत्क्नथाऽयंव्वेनश्चित्रन्देवानाम्॥
॥४॥तम्प्रत्क्नथापूर्व्वथाव्विश्वथेमथाज्ज्येष्ठतातिम्ब
र्हिषदंऽस्वर्व्विदम् ॥ प्रतीचीनंव्वृजनन्दोहसेधुनि
माशुञ्जयन्तमनुयासुवर्द्धसे ॥५॥ अयंव्वेनश्चोद
यत्पृश्निगर्ब्भाज्ज्योतिर्ज्जरायूरजसोव्विमाने॥इम

मुपाꣳ संङ्क्रमेसूर्य्यस्यशिशुन्नविप्प्रामतिभीरिह

न्ति ॥६॥ चित्रन्देवानामुदगादनीकञ्चक्षुर्म्मित्रस्य

व्वरुणस्याग्नेः ॥ आप्प्राद्यावापृथिवीऽअन्तरिक्षꣳ

सूर्य्यऽआत्माजगतस्तस्थुषश्च ॥ ७॥ आनऽइ

डाभिर्व्विदथेसुशस्तिव्विश्वानरꣳसवितादेवऽएतु॥

अपियथायुवानोमत्सथानोव्विश्वञ्जगदभिपित्वे

मनीषा ॥ ८ ॥ यदद्यकच्चव्वृत्रहन्नुदगाऽअभिसू

र्य्य ॥ सर्व्वन्तदिन्द्रतेव्वशे ॥ ९ ॥ तरणिर्व्विश्वद
र्शतोज्ज्योतिष्कृदसिसूर्य्य ॥ व्विश्वमाभासिरोच
नम् ॥१०॥ तत्सूर्य्यस्यदेवत्वन्तन्महित्वम्मद्ध्या
कर्त्तोर्व्विततꣳसञ्जभार ॥ सदेदयुक्तहरितः सध
स्त्थादाद्रात्रीव्वासस्तनुतेसिमस्मै ॥११॥ तन्मि
त्रस्यव्वरुणस्याभिचक्षेसूर्य्योरूपङ्कृणुतेद्योरुप
स्त्थे ॥ अनन्तमन्न्यद्रुशदस्यपाजः कृष्णमन्न्य

दुरितं सम्भरन्ति ॥ १२ ॥ बण्महाँ२॥ऽअसिसू
र्य्यंबडादित्यमहाँ२॥ऽअसि ॥ महस्तेसतोमहि
मापनस्यतेद्धादेवमहाँ२॥ऽअसि ॥१३॥ बट्सूर्य्य
श्रवसामहाँ २॥ऽअसिसत्रादेवमहाँ २॥ऽअसि ॥
मन्हादेवानामसुर्य्यः पुरोहितोविभुज्योतिरदा
ब्भ्यम् ॥ १४ ॥ श्रायन्तऽइवसूर्य्यंविश्वेदिन्द्रस्य
भक्षत ॥ वसूनिजातेजनमानऽओजसाप्रतिभा

गन्नदींधिम ॥१५॥ अद्यादेंवाऽउदितासूर्य्यस्यानि
रंहंसः पिपृतानिरंवद्यात् ॥ तन्नोंमित्रोवरुंणोमा
महन्तामदिंतिःसिन्धुंःपृथिवीऽउतद्यौः ॥ १६ ॥
आकृष्णेनरजंसावर्त्तमानोनिवेशयंन्नमृतम्मर्त्यं
ञ्च ॥ हिरण्ययेंनसवितारथेनादेवोयांतिभुवंना
निपश्यंन् ॥ १७ ॥

इति चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

हरिः ॐ नमस्तेरुद्रमन्न्यवऽउतोतऽइषवेन
मः ॥ बाहुब्भ्यामुततेनमः ॥१॥ यातेरुद्रशिवा
तनूरघोराऽपापकाशिनी ॥ तयानस्तन्न्वाशन्तम
यागिरिशन्ताभिचाकशीहि ॥२॥ यामिषुङ्गिरिश
न्तहस्तेबिभर्ष्यस्तवे ॥ शिवाङ्गिरित्रताङ्कुरुमा
हिꣳसीः पुरुषञ्जगत् ॥३॥ शिवेनव्वचसात्त्वागिरि
शाच्छावदामसि ॥ यथानः सर्व्वमिज्जगदयक्ष्मꣳसु

मनाऽअसंत् ॥४॥ अद्ध्यंवोचदाधिवक्क्ताप्प्रथमो
दैव्योंभिषक् ॥ अहींश्चसर्व्वाञ्जम्भयन्त्सर्व्वाश्चसा
तुधान्न्योऽधराचीः परासुव ॥५॥ असौयस्ताम्म्रोऽ
अरुणऽउतबब्भ्रुः सुमङ्गलः॥ येचैनᳬंरुद्द्राऽआ
तोंदिक्षुश्श्रिताः सहस्स्रशोऽवैषाᳬंहेडंऽईमहे ॥ ६ ॥
असौयोंऽवसर्प्पतिनीलंग्ग्रीवोव्विलोंहितः ॥ उतैनं
ङ्गोपाऽअंदृश्श्रन्नदृश्श्रन्नुदहार्य्युः सदृष्ष्टोमृंडयाति

नहं ॥७॥ नमोऽस्तुनीलग्ग्रीवायसहस्राक्षायमीढु

षे॥ अथोयेऽअस्यसत्त्वानोऽहन्तेब्भ्योऽकरन्नमः

॥ ८ ॥ प्रमुञ्चधन्न्वनस्त्वमुभयोरार्त्न्योज्ज्याम् ॥

याश्चतेहस्तऽइषवः परातभगवोव्वप ॥९॥ व्विज्य

न्धनुः कपर्द्दिनोव्विशल्ल्योबाणवाँ२॥ऽउत ॥ अनै

शन्नस्ययाऽइषवऽआभुरस्यनिषङ्गधिः ॥१०॥ या

तेहेतिर्म्मीढुष्टमहस्तेबभूवतेधनुः ॥ तयास्म्मा

न्विश्श्वतस्त्वमंयक्ष्म्मयापरिंभुज ॥११॥ परितेधं
न्न्वंनोहेतिरस्म्मान्वृंणक्तुविश्श्वतं÷ ॥ अथोयऽइं
षुधिस्तवारेऽअस्म्मान्निधेंहितम् ॥१२॥ अवतत्त्य
धनुष्ठ्वंसहंस्राक्षशतेषुधे ॥ निशींर्य्यंशल्ल्यानां
म्मुखांशिवोनं÷सुमनांभव ॥१३॥ नमंस्तऽआयु
धायानांततायधृष्ष्णवें ॥ उभाभ्यांमुततेनमोबा
हुभ्यान्तवधन्न्वंने ॥१४॥ मानोंमहान्तंमुतमानों

ऽअर्भकम्मानऽउक्षन्तमुतमानऽउक्षितम् ॥ मा
नोंव्वधीः पितरम्मोतमातरम्मानं ÷ प्रियास्तन्वो
रुद्ररीरिषः ॥१५॥ मानस्तोकेतनयेमानऽआयुषि
मानोगोषुमानोऽअश्वेषुरीरिषः ॥ मानोंव्वीरान्रुद्र
भामिनोंव्वधीर्हविष्मन्तःसदमित्त्वाहवामहे १६॥
नमोहिरण्यबाहवेसेनान्येदिशाञ्चपतयेनमोनमो
वृक्षेभ्योहरिकेशेभ्यः पशूनाम्पतयेनमोनमः ÷

शष्पिञ्जरायत्त्विषीमतेपथीनाम्पतयेनमोनमोह
रिकेशायोपवीतिनेपुष्टानाम्पतयेनमोनमोबभ्लु
शाय ॥१७॥ नमोबभ्लुशायव्याधिनेऽन्नानाम्पत
येनमोनमोभवस्यहेत्यैजगताम्पतयेनमोनमोरु
द्रायाततायिनेक्षेत्राणाम्पतयेनमोनमः सूतायाह
न्त्यैवनानाम्पतयेनमोनमोरोहिताय ॥१८॥ नमो
रोहितायस्थपतयेवृक्षाणाम्पतयेनमोनमोभुवन्त

यैब्वारिवस्कृतायौषधीनाम्पतयेनमोनमोमन्त्रिणे
ब्वाणिजायकक्षाणाम्पतयेनमोनमऽउच्चैर्घोषाया
क्रन्दयतेपत्तीनाम्पतयेनमोनमः कृत्स्नायतया
॥ १८ ॥ नमः कृत्स्नायतयाधावतेसत्त्वनाम्पतये
नमोनमः सहमानायनिव्याधिनऽआव्याधिनीना
म्पतयेनमोनमोनिषङ्गिणेककुभायस्तेनानाम्पत
येनमोनमोनिचेरवेपरिचरायारण्यानाम्पतयेन

मोनमोव्वञ्चते ॥२०॥ नमोव्वञ्चतेपरिवञ्चतेस्तायू
नाम्पतयेनमोनमोनिषङ्गिणऽइषुधिमतेतस्करा
णाम्पतयेनमोनमः सृकायिभ्योजिघांसद्भ्यो
मुष्णताम्पतयेनमोनमोऽसिमद्भ्योनक्तञ्चर
द्भ्योविकृन्तानाम्पतयेनमः ॥ २१ ॥ नमऽउ
ष्णीषिणेगिरिचरायकुलुञ्चानाम्पतयेनमोनमऽइ
षुमद्भ्योधन्वायिभ्यश्चवोनमोनमऽआतन्वाने

ब्भ्यं÷प्प्रातिदधानेब्भ्यश्चवोनमोनमंऽआयच्छ
द्भ्योऽस्यद्भ्यश्चवोनमोनमोव्विसृजद्भ्यं÷
॥ २२ ॥ नमोव्विसृजद्भ्योव्विद्ध्यद्भ्यश्चवो
नमोनमं÷स्वपद्भ्योजाग्ग्रद्भ्यश्चवोनमोनमः
शयानेब्भ्यऽआसीनेब्भ्यश्चवोनमोनमस्तिष्ठ
द्भ्योधावद्भ्यश्चवोनमोनमं÷सभाब्भ्यं÷॥२३॥
नमं÷सभाब्भ्यं÷सभापतिब्भ्यश्चवोनमोनमो

ऽश्वेभ्योऽश्वपतिभ्यश्चवोनमोनमऽआव्याधिनी
भ्योविविद्ध्यन्तीभ्यश्चवोनमोनमऽउगणाभ्य
स्तृँहतीभ्यश्चवोनमोनमोगणेभ्यः ॥२४॥ न
मोगणेभ्योगणपतिभ्यश्चवोनमोनमोव्रातेभ्यो
व्रातपतिभ्यश्चवोनमोनमोगृत्सेभ्योगृत्सपति
भ्यश्चवोनमोनमोविरूपेभ्योविश्वरूपेभ्यश्च
वोनमोनमः सेनाभ्यः ॥ २५ ॥ नमः सेनाभ्यः

सेनानिभ्यश्च वो नमो नमो रथिभ्योऽअरथेभ्यश्च
वो नमो नमः क्षत्तृभ्यः सङ्ग्रहीतृभ्यश्च वो नमो
नमो महद्भ्योऽअर्भकेभ्यश्च वो नमः ॥ २६ ॥
नमस्तक्षभ्यो रथकारेभ्यश्च वो नमो नमः कुलाले
भ्यः कर्मारेभ्यश्च वो नमो नमो निषादेभ्यः पु
ञ्जिष्ठेभ्यश्च वो नमो नमः श्वनिभ्यो मृगयुभ्य
श्च वो नमो नमः श्वभ्यः ॥ २७ ॥ नमः श्वभ्यः श्व

पतिभ्यश्चवोनमोनमोभवायचरुद्रायचनमः शर्वायचपशुपतयेचनमोनीलग्रीवायचाशितिकण्ठायचनमः कपर्दिने ॥२८॥ नमः कपर्दिनेचव्युप्तकेशायचनमः सहस्राक्षायचशतधन्वनेचनमोगिरिशयायचाशिपिविष्टायचनमोमीढुष्टमायचेषुमतेचनमोह्रस्वाय ॥२९॥ नमोह्रस्वायचवामनायचनमोबृहतेचवर्षीयसेचनमोवृद्धायचसवृधे

चनमोऽग्र्याय चप्प्रथमाय चनमऽआशवे ॥ ३० ॥
नमऽआशवे चाजिराय चनमः शीग्घ्र्याय चशी
भ्याय चनमऽऊर्म्म्याय चावस्वन्याय चनमोनादे
याय चद्द्वीप्प्याय च ॥ ३१ ॥ नमोज्ज्येष्ठाय चकनि
ष्ठाय चनमः पूर्व्वजाय चापरजाय चनमोमद्ध्य
माय चापगल्भाय चनमोजघन्न्याय चबुध्न्याय चन
मः सोभ्याय ॥ ३२ ॥ नमः सोभ्याय चप्प्रतिस

र्व्यायच नमोसाम्भ्याय चक्षेम्भ्याय चनमः श्लोक्या
यचावसान्याय चनमऽउर्वर्य्याय चखल्याय चन
मोवन्याय ॥३३॥ नमोवन्याय चकक्ष्याय चन
मःश्रवाय चप्रतिश्रवाय चनमऽआशुषेणाय चा
शुरथाय चनमःशूराय चावभेदिने चनमोविल्मिने
॥३४॥ नमोविल्मिने चकवचिने चनमोवार्म्मिणे
चवरूथिने चनमःश्रुताय चश्रुतसेनाय चनमो

दुन्दुभ्यायचाहनन्यायचनमोधृष्णवे ॥ ३५ ॥
नमोधृष्णवेचप्रमृशायचनमोनिषङ्गिणेचेषुधि
मतेचनमस्तीक्ष्णेषवेचायुधिनेचनमः स्वायुधाय
चसुधन्वनेच ॥३६॥ नमःस्रुत्यायचपथ्यायच
नमःकाट्यायचनीप्यायचनमःकुल्यायचसर
स्यायचनमोनादेयायचवैशन्तायचनमःकूप्या
य ॥ ३७ ॥ नमःकूप्यायचावट्यायचनमोवी

दृध्र्यायचातप्प्यायचनमोमेग्घ्यायचविद्द्युत्त्या
यचनमोव्वर्ष्ष्यायचाव्वर्ष्ष्यायचनमोव्वात्त्याय
॥३८॥ नमोव्वात्त्यायचरेष्म्म्यायचनमोव्वास्तव्व्या
यचव्वास्तुपायचनमः सोमायचरुद्द्रायचनमस्ता
म्म्रायचारुणायचनमः शङ्गवे ॥३९॥ नमः शु
ङ्गवेचपशुपतयेचनमऽउग्ग्रायचभीमायचनमोऽ
ग्ग्रेवधायचदूरेवधायचनमोहन्त्त्रेचहनीयसेचनमो

वृक्षेभ्योहरिकेशेभ्योनमस्ताराय ॥४०॥ नमः
शम्भवायचमयोभवायचनमः शङ्करायचमय
स्करायचनमः शिवायचाशिवतरायच॥४१॥नमः
पार्य्यायचावार्य्यायचनमः प्रतरणायचोत्तरणा
यचनमस्तीर्थ्यायचकूल्यायचनमः शष्प्यायच
फेन्यायचनमः सिकत्याय ॥ ४२ ॥ नमः सिक
त्यायचप्रवाह्यायचनमः किंशिलायचक्षय

गायं च नमः कपर्दिने च पुलस्तये च नमऽइरिण्याय च प्रपथ्याय च नमो व्रज्याय ॥ ४३ ॥ नमो व्रज्याय च गोष्ठ्याय च नमस्तल्प्याय च गेह्याय च नमो हृदय्याय च निवेष्प्याय च नमः काट्याय च गह्वरेष्ठाय च नमः शुष्क्याय ॥ ४४ ॥ नमः शुष्क्याय च हरित्याय च नमः पांसव्याय च रजस्याय च नमो लोप्याय चोलप्याय च नमऽऊर्व्याय च सूर्व्याय

यच्चनमं÷पुण्णार्यं ॥ ४५ ॥ नमं÷पुण्णार्यंचपर्ण्ण
शुदायंचुनमंऽउद्गुरमांणायचाभिघ्नुतेचुनमंऽ
आखिदुतेचंप्प्रखिदुतेचुनमंऽइषुकृद्भ्योधनुष्कृद्
भ्यंश्चवोनमुोनमोंवः किरिकेभ्योंदेवानाᳪंहृदंये
भ्योनमोंविचिन्वत्केभ्योनमोंविक्षिणत्केभ्यो
नमंऽआनिर्हृतेभ्यं÷॥४६॥ द्रापेऽअन्धंसस्पतेद
रिंद्रुनीलंलोहित ॥ आसाम्प्रजानांमेषाम्पशूना

स्माभेर्मारोङ्मो चंनः किञ्चनाममत् ॥४७॥ इमा
रुद्रायंतवसेकपर्दिनेक्षयद्वीराय प्रभरामहेमतीः ॥
यथाशमसद्द्विपदेचतुष्पदेविश्वंपुष्टंग्रामेऽअ
स्मिन्ननातुरम् ॥ ४८ ॥ यातेरुद्रशिवातनूःशिवा
विश्वाहाभेषजी ॥ शिवारुतस्यभेषजीतयानोमृ
डजीवसे ॥ ४९ ॥ परिनोरुद्रस्यहेतिर्वृणक्तुपरि
त्वेषस्यदुर्मतिरघायोः ॥ अवस्थिरामघवद्भ्य

स्तनुष्वमीड्ढ्वस्तोकायतनयायमृड ॥ ५० ॥
मीढुष्टमशिवतमशिवोनः सुमनाभव ॥ परमेवृ
क्षऽआयुधन्निधायकृत्तिंवसानऽआचरापिनाकम्बि
भ्रदागहि ॥५१॥ विकिरिद्रविलोहितनमस्तेऽअ
स्तुभगवः ॥ यास्तेसहस्रंहेतयोऽन्यमस्मन्निव
पन्तुताः ॥ ५२ ॥ सहस्राणिसहस्रशोबाह्वोस्तव
हेतयः ॥ तासामीशानोभगवः पराचीनामुखाकृ

धि ॥ ५३ ॥ असंङ्ख्यातासहस्राणियेरुद्राऽअधि
भूम्म्यांम् ॥ तेषांᳲसहस्रयोजनेऽवधन्न्वानित
न्न्मसि ॥५४॥ अस्म्मिन्न्महत्त्यर्ण्णवेऽन्तरिक्षेभ
वाऽअधि ॥ तेषांᳲसहस्रयोजनेऽवधन्न्वानित
न्न्मासि ॥५५॥ नीलंग्ग्रीवाः शितिकण्ठादिवंᳮरु
द्राऽउपाश्श्रिताः ॥ तेषांᳲसंहस्रयोजनेऽवधन्न्वा
नितन्न्मासि ॥५६॥ नीलंग्ग्रीवाः शितिकण्ठाःश

व्वीऽअधःक्षमाचराः ॥ तेषाᳪंसहस्रयोजनेऽवध
न्न्वानितन्न्मसि ॥५७॥ येवृक्षेषुशष्पिञ्जरानी
लग्ग्रीवाव्विलोहिताः ॥ तेषाᳪंसहस्रयोजनेऽवध
न्न्वानितन्न्मसि ॥५८॥ येभूतानामधिपतयोव्वि
शिखासः कपर्दिनः ॥ तेषाᳪंसहस्रयोजनेऽवध
न्न्वानितन्न्मसि ॥५९॥ येपथाम्पथिरक्षयऽऐल
बृदाऽआयुर्युधः ॥ तेषाᳪंसहस्रयोजनेऽवध

न्न्वानितन्न्मसि ॥६०॥ येतीर्त्थानिप्प्रचरन्तिसृ
काहस्तानिषङ्गिणं ÷ ॥ तेषां सहस्रयोजनेऽवध
न्न्वानितन्न्मसि ॥६१॥ येन्नेषुव्विविद्ध्यन्तिपात्त्रे
षुपिबतोजनान् ॥ तेषां सहस्रयोजनेऽवधन्न्वा
नितन्न्मसि ॥ ६२ ॥ यऽएतावन्तश्श्चभूयां सश्श्च
दिशोरुद्द्राव्वितस्त्थिरे ॥ तेषां सहस्रयोजनेऽवध
न्न्वानितन्न्मसि ॥६३॥ नमोऽस्तरुद्द्रेब्भ्योयेदि

वियेषांव्वर्षमिषवः ॥ तेब्भ्योदशप्प्राचीर्द्दशांदक्षिणा
दशांप्प्रतीचीर्द्दशोदीचीर्द्दशोद्ध्वाः ॥ तेब्भ्योनमोऽ
अस्तुतेनोऽवन्तुतेनोमृडयन्तुतेयन्द्विष्म्मोयश्च
नोद्वेष्टितमेषाञ्जम्भेदद्ध्मः ॥६४॥ नमोऽस्तुरु
द्द्रेब्भ्योयेऽन्तरिक्षेयेषांव्वातऽइषवः ॥ तेब्भ्योदश
प्प्राचीर्द्दशांदक्षिणादशांप्प्रतीचीर्द्दशोदीचीर्द्दशो
द्ध्वाः ॥ तेब्भ्योनमोऽअस्तुतेनोऽवन्तुतेनोमृड

यन्तुतेयन्द्विष्मोयश्चनोद्वेष्टितमेषाञ्जम्भेद
ध्मः ॥६५॥ नमोऽस्तुरुद्रेभ्योयेपृथिव्यांय्येषा
मन्नमिषवः ॥ तेभ्योदशप्प्राचीर्दशदक्षिणादश
प्प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोद्ध्वाः ॥ तेभ्योनमोऽअ
स्तुतेनोऽवन्तुतेनोमृडयन्तुतेयन्द्विष्मोयश्च
नोद्वेष्टितमेषाञ्जम्भेदध्मः ॥ ६६ ॥

इति पञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

इति पञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥





ह्रीं ÷ ॐ वयꣳ सोमव्व्रततवमनस्तनूषुबि
भ्रतः ॥ प्रजावन्तꣳ सचेमहि ॥१॥ एषतेरुद्रभा
गः सहस्वस्राऽम्बिकयातञ्जुषस्वस्वाहैषतेरुद्रभाग
ऽआखुस्तेपशुः ॥२॥ अवरुद्रमदीमह्यवदेवन्त्र्य
म्बकम् ॥ यथानोवस्यसस्करद्यथानꣳ श्रेयसस्कर
द्यथानोव्यवसाययात् ॥३॥ भेषजमसिभेषजङ्गवे
ऽश्वायपुरुषायभेषजम् ॥ सुखम्मेषायमेष्यै ॥४॥

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम् ॥ उर्व्वारु
कमिव बन्धनान्मृत्योर्म्मुक्षीय मामृतात् ॥ त्र्यम्बकं
यजामहे सुगन्धिम्पतिवेदनम् ॥ उर्व्वारुकमिव
बन्धनादितो मुक्षीय मामुतः ॥५॥ एतत्ते रुद्रावसं
तेन परो मूजवतोऽतीहि ॥ अवततधन्वा पिनाकावसः
कृत्तिवासाऽअहिँसन्नः शिवोऽतीहि ॥६॥
त्र्यायुषञ्जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम् ॥ यद्देवेषु

त्र्यायुषन्तन्नोऽअस्तुत्र्यायुषम् ॥ ७ ॥ शिवोना
मासिस्वधितिस्तेपितानमस्तेऽअस्तुमामाहिᳬ
सीः ॥ निवर्त्तयाम्म्यायुषेऽन्नाद्यायप्प्रजननायरा
यस्प्पोषायसुप्प्रजास्त्वायसुवीर्य्याय ॥ ८ ॥

इति षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

हरिः ॐ उग्रश्चभीमश्चद्ध्वान्तश्चधुनि
श्च ॥ सासह्वाँश्चाभियुग्वाचविक्षिपः स्वाहा ॥१॥

अग्निꣳ हृदयेनाशनिꣳ हृदयाग्रेणं पशुपतिङ्कृत्स्न
हृदयेन भवंय्यक्ना ॥ शर्वम्मतस्नाभ्यामीशान
म्मन्युना महादेवमन्तः पर्शव्येनोग्रन्देवंव्वनिष्ठु
नांव्वसिष्ठुहनुः शिङ्गीनिकोश्याभ्याम् ॥२॥ उग्रँ
ल्लोहितेनामित्रꣳ सौव्व्रत्त्येन रुद्रन्दौव्व्रत्त्येनेन्द्रं
म्प्रक्क्रीडेन मरुतो बलेनं साद्ध्यान्प्रमुदा ॥ भव
स्य कण्ठ्यꣳ रुद्रस्यान्तः पार्श्व्यम्महादेवस्य यकृ

चक्षुर्देवस्य वनिष्ठुः पशुपतेः पुरीतत् ॥ ३ ॥ लोमभ्यः
स्वाहा लोमभ्यः स्वाहा त्वचे स्वाहा त्वचे स्वाहा लो
हिताय स्वाहा लोहिताय स्वाहा मेदोभ्यः स्वाहा मे
दोभ्यः स्वाहा ॥ मांसेभ्यः स्वाहा मांसेभ्यः
स्वाहा स्नावभ्यः स्वाहा स्नावभ्यः स्वाहाऽस्थ
भ्यः स्वाहाऽस्थभ्यः स्वाहा मज्जभ्यः स्वाहा
मज्जभ्यः स्वाहा ॥ रेतसे स्वाहा पायवे स्वाहा ॥ ४ ॥

आयासायस्वाहा प्रायासायस्वाहा संयासायस्वा
हा वियासायस्वाहोद्यासायस्वाहा ॥ शुचेस्वाहा
शोचतेस्वाहा शोचमानायस्वाहा शोकायस्वाहा
॥५॥ तपसेस्वाहा तप्यतेस्वाहा तप्यमानायस्वाहा
तप्तायस्वाहा घर्म्मायस्वाहा ॥ निष्कृत्यैस्वाहा
प्रायश्चित्त्यैस्वाहा भेषजायस्वाहा ॥ ६ ॥ यमाय
स्वाहाऽन्तकायस्वाहा मृत्यवेस्वाहा ॥ ब्रह्मणेस्वा

हांब्रह्महत्यायैस्वाहाविश्वेभ्योदेवेभ्यःस्वाहा
द्यावापृथिवीभ्याᳬस्वाहा ॥ ७ ॥

इति सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

हरिः ॐ वाजश्चमेप्रसवश्चमेप्रयतिश्चमे
प्रसितिश्चमेधीतिश्चमेक्रतुश्चमेस्वरश्चमेश्लो
कश्चमेश्रवश्चमेश्रुतिश्चमेज्योतिश्चमेस्व
श्चमेयज्ञेनकल्पन्ताम् ॥ १ ॥ प्राणश्चमेऽपान

श्चमे व्यानश्चमेऽसुश्चमे चित्तञ्चमऽआधीतञ्चमे
वाक्चमे मनश्चमे चक्षुश्चमे श्रोत्रञ्चमे दक्षश्चमे
बलञ्चमे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ २ ॥ ओजश्चमे सह
श्चमऽआत्मा चमे तनूश्चमे शर्म्म चमे वर्म्म चमेऽ
ङ्गानि चमेऽस्थीनि चमे परूँषि चमे शरीराणि चमे
ऽआयुश्चमे जरा चमे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ ३ ॥
ज्यैष्ठ्यञ्चमऽआधिपत्त्यञ्चमे मन्युश्चमे भामश्च

मेऽमंश्चमेऽम्भंश्चमेजेमाचंमेमहिमाचंमेवरिमा
चंमेप्प्रथिमाचंमेवर्षिमाचंमेद्राघिमाचंमेवृद्धञ्चं
मेव्वृद्धिश्चमेयज्ञेनंकल्पन्ताम् ॥४॥ (न०)॥
सत्त्यञ्चमेश्श्रद्धाचंमेजगच्चमेधनंञ्चमेविश्वञ्चमे
महंश्चमेक्क्रीडाचंमेमोदंश्चमेजातञ्चमेजनि
ष्यमांणञ्चमेसूक्तञ्चमेसुकृतञ्चमेयज्ञेनंकल्प
न्ताम् ॥५॥ ऋतञ्चमेऽमृतञ्चमेऽयक्ष्मञ्चमेऽनां

मयच्च मे जीवातुश्च मे दीर्घायुत्वञ्च मेऽनमित्रञ्च
मेऽभयञ्च मे सुखञ्च मे शयनञ्च मे सूषाश्च मे सुदिनं
ञ्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ ६ ॥ यन्ता च मे धर्त्ता च
मे क्षेमश्च मे धृतिश्च मे विश्वञ्च मे महश्च मे सं
विच्च मे ज्ञात्रञ्च मे सूश्च मे प्रसूश्च मे सीरञ्च मे लयं
श्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ ७ ॥ शञ्च मे मयश्च
मे प्रियञ्च मेऽनुकामश्च मे कामश्च मे सौमनस

श्च्चमे भगश्च्चमे द्रविणञ्चमे भद्रञ्चमे श्श्रेयश्च्च
मेव्वसीयश्च्चमे यशश्च्चमे यज्ञेनकल्प्पन्ताम्
॥८॥ ( न० ) ॥ ऊर्क्कच्चमे सूनृताचमे पयश्च्चमे
रसश्च्चमे घृतञ्चमे मधुचमे सग्धिश्च्चमे सपीति
श्च्चमे कृषिश्च्चमे व्वृष्टिश्च्चमे जैत्रञ्चमऽऔद्भि
द्यञ्चमे यज्ञेनकल्प्पन्ताम् ॥ ८ ॥ रयिश्च्चमे राय
श्च्चमे पुष्टञ्चमे पुष्टिश्च्चमे व्विभुचमे प्प्रभुचमे पु

र्णञ्च मे पूर्णतरञ्च मे कुयवञ्च मेऽक्षितञ्च मेऽन्नञ्च मे
ऽक्षुच्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥१०॥ वित्तञ्च मे वेद्य
ञ्च मे भूतञ्च मे भविष्यच्च मे सुगञ्च मे सुपथ्यञ्च मऽ
ऋद्धञ्च मऽऋद्धिश्च मे क्लृप्तञ्च मे क्लृप्तिश्च मे मति
श्च मे सुमतिश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ ११ ॥
व्रीहयश्च मे यवाश्च मे माषाश्च मे तिलाश्च
मे मुद्गाश्च [illegible] श्च मेऽणव

मेमुद्गाश्च्चमेखल्वाश्च्चमेप्रियङ्गवश्च्चमेऽणव





श्च्चमेश्यामाकांश्च्चमेनीवारांश्च्चमेगोधूमांश्च्च
मेमसूरांश्च्चमेयज्ञेनंकल्पन्ताम् ॥१२॥ (न०)॥
अश्मांचमेमृत्तिकाचमेगिरयंश्च्चमेपर्वताश्च्च
मेसिकताश्च्चमेवनस्पतयश्च्चमेहिरंण्यञ्चमेऽ
यंश्च्चमेश्यामञ्चमेलोहञ्चमेसीसंञ्चमेत्रपुंचमेय
ज्ञेनंकल्पन्ताम् ॥१३॥ अग्निश्च्चंमऽआपंश्च्च
मेवीरुधंश्च्चमऽओषंधयश्च्चमेकृष्टपच्याश्च

मेऽकृष्टपच्याश्चचंमेग्राम्याश्चचंमेपशवऽआर
ण्याश्चचंमेवित्तञ्चंमेवित्तिंश्चचमेभूतञ्चंमेभूतिं
श्चचमेयज्ञेनकल्पन्ताम् ॥ १४ ॥ वसुंचमेवसाति
श्चचंमेकर्म्मचमेशक्तिंश्चचमेऽर्थश्चमऽएमश्च
मऽइत्याचंमेगतिंश्चचमेयज्ञेनंकल्पन्ताम् ॥१५॥
(न०)॥ अग्निश्चचंमऽइन्द्रश्चचमेसोमंश्चचमऽ
इन्द्रश्चचमेसविताचमऽइन्द्रश्चचमेसरस्वतीचम

ऽइन्द्रश्चमेसावितीचमेऽइन्द्रश्चमेसरस्वतीचमे

ऽइन्द्रश्चमेपूषाचमेऽइन्द्रश्चमेबृहस्पतिश्च मऽइन्द्रश्चमेयज्ञेनकल्पन्ताम् ॥१६॥ मित्रश्च मऽइन्द्रश्चमेवरुणश्चमऽइन्द्रश्चमेधाताच मऽइन्द्रश्चमेत्वष्टाचमऽइन्द्रश्चमेमरुतश्चमऽ इन्द्रश्चमेविश्वेचमेदेवाऽइन्द्रश्चमेयज्ञेनकल्प न्ताम् ॥१७॥ पृथिवीचमऽइन्द्रश्चमेऽन्तरिक्ष ञ्चमऽइन्द्रश्चमेद्यौश्चमऽइन्द्रश्चमेसमाश्चमऽ

इन्द्रश्चमेनक्षत्राणिचमऽइन्द्रश्चमेदिशश्चमऽइ
न्द्रश्चमेयज्ञेनकल्पन्ताम् ॥१८॥ (न०)॥ अꣳशु
श्चमेरश्मिश्चमेऽदाभ्यश्चमेऽधिपतिश्चमऽउपा
ꣳशुश्चमेऽन्तर्यामश्चमऽऐन्द्रवायवश्चमेमैत्रा
वरुणश्चमऽआश्विनश्चमेप्रतिप्रस्थानश्चमेशुक्र
श्चमेमन्थीचमेयज्ञेनकल्पन्ताम् ॥१९॥ आग्रय
णश्चमेवैश्वदेवश्चमेध्रुवश्चमेवैश्वानरश्चमऽ

ऐन्द्राग्नश्चमेमहावैश्वदेवश्चमेमरुत्वतीयाश्च
मेनिष्कैवल्यश्चमेसावित्रश्चमेसारस्वतश्चमेपा
त्नीवतश्चमेहारियोजनश्चमेयज्ञेनकल्पन्ताम्
॥ २० ॥ स्रुचश्चमेचमसाश्चमेवायव्यानिचमेद्रो
णकलशश्चमेग्रावाणश्चमेऽधिषवणेचमेपूतभृ
च्चमऽआधवनीयश्चमेवेदिश्चमेबर्हिश्चमेऽ
वभृथश्चमेस्वगाकारश्चमेयज्ञेनकल्पन्ताम्

॥२१॥(न०)॥ अग्निश्च्चमे घर्म्मश्च्चमेऽर्कश्चमे
सूर्य्यश्चमे प्प्राणश्च्चमेऽश्वमेधश्च्चमे पृथिवीचमे
ऽदितिश्च्चमे दितिश्चमे द्यौश्च्चमेऽङ्गुलयः शक्क
रयोदिशश्च्चमे यज्ञेनकल्पन्ताम् ॥२२॥ व्व्रतञ्च
मऽऋतवश्च्चमे तपश्च्चमे संव्वत्सरश्च्चमेऽहोरा
त्रेऽऊर्व्वष्ठीवेबृहद्रथन्तरेचमे यज्ञेनकल्पन्ताम्
॥२३॥ (न०) ॥ एकाचमे तिस्रश्च्चमे तिस्रश्च्च

मे॒पञ्च॑चमे॒पञ्च॑चमे॒सप्त॑चमे॒सप्त॑चमे॒नव॑चमे॒नव॑च

म॒ऽएका॑दशचम॒ऽएका॑दशचमे॒त्रयो॑दशचमे॒त्रयो॑

दशचमे॒पञ्च॑दशचमे॒पञ्च॑दशचमे॒सप्तद॑शचमे॒सप्त

द॑शचमे॒नव॑दशचमे॒नव॑दशचम॒ऽएका॑विꣳशति

श्चम॒ऽएका॑विꣳशतिश्चमे॒त्रयो॑विꣳशतिश्चमे॒

त्रयो॑विꣳशतिश्चमे॒पञ्च॑विꣳशतिश्चमे॒पञ्च॑विꣳ

शतिश्चमे॒सप्त॑विꣳशतिश्चमे॒सप्त॑विꣳशतिश्च

मेनवविꣳशतिश्चमेनवविꣳशतिश्चमऽएक
त्रिꣳशच्चमऽएकत्रिꣳशच्चमेत्रयस्त्रिꣳशच्चमेयज्ञे
नकल्पन्ताम् ॥ २४ ॥ (न०) ॥ चतस्रश्चमे
ऽष्टौचमेऽष्टौचमेद्वादशचमेद्वादशचमेषोडशचमे
षोडशचमेविꣳशतिश्चमेविꣳशतिश्चमेचतु
र्विꣳशतिश्चमेचतुर्विꣳशतिश्चमेऽष्टाविꣳशति
श्चमेऽष्टाविꣳशतिश्चमेद्वात्रिꣳशच्चमेद्वात्रिꣳ

शच्चमेषट्त्रिꣳशच्चमेषट्त्रिꣳशच्चमेचत्त्वारिꣳश
च्चमेचत्त्वारिꣳशच्चमेचतुश्चत्त्वारिꣳशच्चमे
चतुश्चत्त्वारिꣳशच्चमेऽष्टाचत्त्वारिꣳशच्चमे
यज्ञेनकल्पन्ताम् ॥२५॥ (न०) ॥ त्र्यविश्च
मेत्र्यवीचमेदित्यवाट्चमेदित्यौहीचमेपञ्चावि
श्चमेपञ्चावीचमेत्रिवत्सश्चमेत्रिवत्साचमेतु
र्य्यवाट्चमेतुर्य्यौहीचमेयज्ञेनकल्पन्ताम् ॥२६॥

पष्ठवाट् चंमेपष्ठौहीचंमऽउक्षाचंमेवशाचंमऽऋ
षभश्च्चंमेवेहच्चंमेऽनड्वाँश्च्चंमेधेनुश्च्चंमेयज्ञे
नंकल्पन्ताम् ॥२७॥ (न०) ॥ वाजायस्वाहांप्र
सवायस्वाहांऽपिजायस्वाहाक्रतंवेस्वाहावसंवेस्वा
हांऽहर्पतंयेस्वाहाह्नेमुग्धायस्वाहांमुग्धायंवैनं
शिनायस्वाहाविनंशिनंऽआन्त्यायनायस्वाहा
न्त्यायभौवनायस्वाहाभुवंनस्यपतंयेस्वाहाधिप

तयेस्वाहाम्प्रजापतयेस्वाहा ॥ इयन्तेराण्म्मित्रा
यंसन्तासियमंनऽऊर्जेत्त्वावृष्ट्यैत्त्वाप्रजानां
त्त्वाधिपत्त्याय ॥ २८ ॥ आयुर्यज्ञेनकल्पतां
प्प्राणोयज्ञेनकल्पताञ्चक्षुर्यज्ञेनकल्पताᳬं
श्श्रोत्रंयज्ञेनकल्पतांवाग्यज्ञेनकल्पताम्मनोय
ज्ञेनकल्पतामात्मायज्ञेनकल्पतांब्रह्मायज्ञेनक
ल्पताञ्ज्योतिर्यज्ञेनकल्पताᳬंस्वर्यज्ञेनक

ल्पतां पृष्ठं य्यज्ञेन कल्पतां य्यज्ञो य्यज्ञेन कल्पताम् ॥ स्तोमश्च यजुश्च ऽऋक् च साम च बृहच्च रथन्तरञ्च ॥ स्वर्देवा ऽअगन्मामृता ऽअभूम प्रजापतेः प्रजा ऽअभूम वेट् स्वाहा ॥ २९ ॥

इत्यष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

## अथ शान्त्यध्यायः ।

हरिः ॐ ऋचं वाचं प्रपद्ये मनो यजुः प्रपद्ये

सामंप्प्राणम्मपंद्येचक्षुः श्श्रोत्त्रम्मपंद्ये ॥ व्वागोजं÷

सुहौजोमयिंप्प्राणापानौ ॥ १ ॥ यन्मैंछिद्रञ्चक्षुंषो

हृदंयस्यमनंसोव्वातिंतृण्णम्बृहस्प्पातिंम्मेंतद्दंधातु॥

शन्नोंभवतुभुवंनस्ययस्प्पतिं÷ ॥ २ ॥ भूर्ब्भुवः

स्व ÷। तत्संवितुर्व्वरेंण्ण्यम्भगोंदेवस्यंधीमाहि॥ धियो

योनं÷प्प्रचोदयांत् ॥ ३ ॥ कयांनश्श्चित्रऽआभुव

दूतीसदावृंधःसखां ॥ कयाशचिंष्ठयावृता ॥४॥

कस्त्वांसत्योमदांनाम्मंहिंष्ठोमत्सदन्धंसः ॥
दृढाचिंदारुजेव्वसु ॥५॥ अभीषुणः सखीनामविता
जरितृणाम् ॥ शतम्भंवास्यूतिभिं÷ ॥ ६ ॥ कया
त्वन्नंऽऊत्त्याभिप्प्रमंन्दसेव्वृषन् ॥ कयांस्तोतृब्भ्य
ऽआभंर ॥ ७ ॥ इन्द्रोविश्श्वंस्यराजति ॥ शन्नो
ऽअस्तुद्विपदेशञ्चतुंष्पदे ॥ ८ ॥ शन्नोमित्रःशं
व्वरुंणःशन्नोंभवत्वर्य्यमा ॥ शन्नऽइन्द्रोबृहस्प

तिः शन्नोविष्णुरुरुक्रमः ॥ ८ ॥ शन्नोवातः पव
ताᳪशन्नस्तपतुसूर्य्यः ॥ शन्नः कनिक्रदद्देवः
पर्ज्जन्योऽअभिवर्षतु ॥१०॥ अहानिशम्भवन्तुनः
शᳪरात्रीः प्रतिधीयताम् ॥ शन्नऽइन्द्राग्नीभव
तामवोभिः शन्नऽइन्द्रावरुणारातहव्या ॥ शन्नऽ
इन्द्रापूषणावाजसातौशमिन्द्रासोमासुवितायशं
य्योः ॥ ११ ॥ शन्नोदेवीरभिष्टयऽआपोभवन्तु

प्रीतये ॥ शंय्योरभिस्त्रवन्तुनः ॥ १२ ॥ स्योना
पृथिविनोभवानृक्षरानिवेशनी ॥ यच्छानः शर्म्म
सप्प्रथाः ॥१३॥ आपोहिष्ठामयोभुवस्तानऽऊर्ज्जे
दधातन ॥ महेरणायचक्षसे ॥ १४ ॥ योवः शिव
तमोरसस्तस्यभाजयतेहनः ॥ उशतीरिवमातरः
॥ १५ ॥ तस्माऽअरङ्गमामवोयस्यक्षयायजि
न्वथ ॥ आपोजनयथाचनः ॥ १६ ॥ द्यौः शान्ति

रन्तरिक्षᳯ शान्तिः पृथिवीशान्तिरापः शान्तिरो षधयः शान्तिः॥ वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्मशान्तिः सर्व्वᳯ शान्तिः शान्तिरेवशा न्तिः सामाशान्तिरेधि ॥ १७ ॥ दृतेदᳯहंमामित्र स्यंमाचक्षुषासर्व्वाणिभूतानिसमीक्षन्ताम् ॥ मित्र स्याहञ्चक्षुषासर्व्वाणिभूतानिसमीक्षे ॥ मित्रस्यच क्षुषासमीक्षामहे ॥ १८ ॥ दृतेदᳯहंमा । ज्योक्ते

सुन्दृशिंजीव्व्यासुञ्ज्योक्च्चैसुन्दृशिंजीव्व्यासम्

॥ १९ ॥ नमस्तेहरसेशोचिषेनमस्तेऽअस्त्व

र्चिषे ॥ अन्न्याँस्तेऽअस्म्मत्तपन्तुहेतयः पावकोऽ

अस्म्मब्भ्यꣳशिवोभव ॥ २० ॥ नमस्तेऽअस्तु

व्विद्युतेनमस्तेस्तनयित्नवे ॥ नमस्तेभगवन्नस्तुय

तःस्वः समीहसे ॥ २१ ॥ यतोयतः समीहसेत

तोनोऽअभयङ्कुरु ॥ शन्नः कुरुप्प्रजाब्भ्योऽभयं

न्नꣳ पशुभ्यं÷ ॥ २२ ॥ सुमित्त्रियानऽआपऽओ
षधयꣳ सन्तुदुर्म्मित्त्रियास्तस्म्मैसन्तुयोऽस्म्मान्द्वे
ष्ट्टियञ्चव्वयन्द्विष्म्मः ॥ २३ ॥ तच्चक्षुर्द्देवहितम्पु
रस्ताच्छुक्क्रमुच्चरत् ॥ पश्येमशरदं÷शतञ्जीवेम
शरदं÷शतꣳ शृणुयामशरदं÷शतम्प्रब्रवामशर
दं÷शतमदीनाꣳ स्यामशरदं÷शतम्भूयश्चशर
दं÷शतात् ॥ २४ ॥ इति शान्त्यध्याय: ।

# अथ स्वस्तिप्रार्थनामन्त्राः ।

हरिः ॐ स्वस्तिनऽइन्द्रोवृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषाविश्ववेदाः ॥ स्वस्तिनस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्तिनोबृहस्पतिर्दधातु ॥ १ ॥ ॐ पयः पृथिव्यां पयऽओषधीषु पयोदिव्यन्तरिक्षे पयोधाः ॥ पयस्वतीः प्रदिशः सन्तुमह्यम् ॥ २ ॥ ॐ विष्णोरराटमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थोवि

ष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि ॥ वैष्णवम
सि विष्णवे त्वा ॥ ३ ॥ ॐ अग्निर्देवता वातो देव
ता सूर्य्यो देवता चन्द्रमा देवता वसवो देवता रुद्रा देव
ताऽऽदित्या देवता मरुतो देवता विश्वे देवा देवता बृह
स्पतिर्देवतेन्द्रो देवता वरुणो देवता ॥ ४ ॥

ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै
नमो नमः ॥ भवे भवे नातिभवे भवस्व मां

भवोद्भवाय नमः ॥ ५ ॥ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः ॥ ६ ॥ अघोरेभ्यो ऽथघोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः ॥ सर्वेभ्यः सर्व शर्वेभ्यो नमस्ते ऽअस्तु रुद्ररूपेभ्यः ॥ ७ ॥

तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि ॥ तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ॥ ८ ॥ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानाम् ॥ ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे ऽअस्तु सदा शिवोऽम् ॥ ९ ॥

ॐ शिवोनामासिस्वधितिस्तेपितानमस्ते ऽअस्तुमामाहिᳫसीः॥ निवर्त्तयाम्म्यायुषेऽन्नाद्याय प्रजननायरायस्पोषायसुप्रजास्त्वायसुवीर्य्याय

ॐ विश्वानिदेवसवितर्दुरितानिपरासुव ॥

यद्भद्रन्तन्नऽआसुव ॥११॥ ॐ द्यौः शान्तिरन्तरि

क्षᳪ शान्तिः पृथिवीशान्तिरापः शान्तिरोषधयः

शान्तिः ॥ वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शा

न्तिर्ब्रह्मशान्तिः सर्व्वᳪ शान्तिः शान्तिरेवशान्तिः

सामाशान्तिरेधि ॥ १२ ॥ ॐ सर्व्वेषां वा एष

वेदानाᳬरसो यत्साम सर्व्वेषामेवैनमेतद्वेदानाᳬ

रसेनाभिषिञ्चति ॥१३॥

इति स्वस्तिप्रार्थनामन्त्राः ।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।

अनेन श्रीरुद्राभिषेककर्मणा श्रीभवानीशङ्कर-
महारुद्रः प्रीयतां न मम ।

ॐ सदाशिवार्पणमस्तु ।

इति रुद्राष्टाध्यायी समाप्ता ।



॥ श्रीः ॥

# अथ रुद्रयागहवनमन्त्राः

एकषष्ठ्युत्तरशतधात्रिभागपक्षमाश्रित्य

## रुद्रस्वाहाकारविधिः

ॐ गणानान्त्वा० स्वाहा ।

ॐ अम्बेऽ अम्बिके० स्वाहा । इति हुत्वा,

ॐ यज्जाग्रतः० ( ६ मन्त्राः ) स्वाहा ।

ॐ सहस्रशीर्षा० ( १६ मन्त्राः ) स्वाहा ।

ॐ अद्भ्यः सम्भृतः० ( ६ मन्त्राः ) स्वाहा ।

ॐ आशुः शिशानः० ( १२ मन्त्राः ) स्वाहा ।

ॐ विभ्राड् बृहत्पिबतु० ( १७ मन्त्राः ) स्वाहा ।

ॐ भूः, ॐ भुवः, ॐ स्वः, ॐ नमस्ते रुद्र मन्न्यवऽ उतो तऽ इषवे नमः । बाहुब्भ्यामुत ते नमः स्वाहा ॥ १ ॥

ॐ या ते रुद्र शिवा तनूरघोरापापकाशिनी। तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि स्वाहा ॥ २ ॥

ॐ यामिषुङ्गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे। शिवाङ्गिरित्रताङ्कुरु मा हिꣳसीः पुरुषञ्जगत् स्वाहा ॥ ३ ॥

ॐ शिवेन व्वचसा त्त्वा गिरिशाच्छा व्वदामसि। यथा नः सर्व्वमिज्जगदयक्ष्मꣳ सुमनाऽ असत् स्वाहा ॥ ४ ॥

ॐ अदूध्यवोचदधिवक्ता प्प्रथमो दैव्व्यो भिषक्। अहींश्च सर्व्वाञ्जम्भयन्त्सर्व्वाश्च यातुधान्न्योऽधराचीः परासुव स्वाहा ॥ ५ ॥

ॐ असौ यस्ताम्म्रोऽ अरुण ऽउत बब्भ्रुः सुमङ्गलः। ये चैनꣳ रुद्राऽ अभितो दिक्षु श्रिताः सहस्रशो वैषाꣳ हेडऽ ईमहे स्वाहा ॥ ६ ॥

ॐ असौ योऽवसर्प्पति नीलग्ग्रीवो व्विलोहितः। उतैनङ्गोपाऽ अदृश्श्रन्नदृश्श्रन्नुदहार्य्यः सः दृष्टो मृडयाति नः स्वाहा ॥ ७ ॥

ॐ नमोऽस्तु नीलग्ग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे। अथो येऽ अस्य सत्त्वानो हन्तेब्भ्योऽकरन्नमः स्वाहा ॥ ८ ॥

ॐ प्रमुञ्च धन्न्वनस्त्वमुभयोरात्क्न्योंर्ज्ज्याम्। याश्च ते हस्तऽ इषवः परा ता भगवो व्वप स्वाहा॥ ९॥

ॐ व्विज्ज्यन्धनुः कपर्द्दिनो व्विशल्ल्यो बाणवाँ२ऽ उत। अनेशन्नस्य याऽ इषवऽ आभुरस्य निषङ्गधिः स्वाहा॥ १०॥

ॐ या ते हेतिर्म्मीढुष्टम हस्ते बभूव ते धनुः। तयास्म्मान्न्विश्श्वतस्त्व-मयक्ष्मया परिभुज स्वाहा॥ ११॥

ॐ परि ते धन्न्वनो हेतिरस्मान्न्वृणक्तु व्विश्श्वतः। अथो यऽ इषुधिस्त-वारेऽ अस्मन्निधेहि तम् स्वाहा॥ १२॥

ॐ अवतत्त्य धनुष्ट्वꣳ सहस्राक्ष शतेषुधे। निशीर्य्य शल्ल्यानां मुखा शिवो नः सुमना भव स्वाहा॥ १३॥

ॐ नमस्तऽ आयुधायानातताय धृष्णवे। उभाब्भ्यामुत ते नमो बाहु-ब्भ्यान्तव धन्न्वने स्वाहा॥ १४॥

ॐ मा नो महान्तमुत मा नोऽ अर्ब्भकम्मा नऽ उक्षन्तमुत मा नऽ उक्षि-

ॐ मा नो महान्तमुत मा नो ऽ अर्भकम्मा न ऽ उक्षन्तमुत मा न ऽ उक्षि-

तम्। मा नो व्वधीः पितरम्मोत मातरम्मा नः प्प्रियास्तन्न्वो रुद्र रीरिषः स्वाहा ॥ १५ ॥

ॐ मा नस्तोके तनये मा न ऽ आयुषि मा नो गोषु मा नो ऽ अश्श्वेषु रीरिषः। मा नो व्वीरान् रुद्र भामिनो व्वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे स्वाहा ॥१६॥

ॐ नमो हिरण्यबाहवे सेनान्न्ये दिशाञ्च पतये नमः स्वाहा ॥ १७ ॥

ॐ नमो व्वृक्षेब्भ्यो हरिकेशेब्भ्यः पशूनाम्पतये नमः स्वाहा ॥ १८ ॥

ॐ नमः शष्पिञ्जराय त्विषीमते पथीनाम्पतये नमः स्वाहा ॥ १९ ॥

ॐ नमो हरिकेशायोपवीतिने पुष्टानाम्पतये नमः स्वाहा ॥ २० ॥

ॐ नमो बब्भ्लुशाय व्व्याधिनेन्नानाम्पतये नमः स्वाहा ॥ २१ ॥

ॐ नमो भवस्य हेत्त्यै जगताम्पतये नमः स्वाहा ॥ २२ ॥

ॐ नमो रुद्रायाततायिने क्षेत्राणाम्पतये नमः स्वाहा ॥ २३ ॥

ॐ नमः सूतायाहन्त्यै व्वनानाम्पतये नमः स्वाहा ॥ २४ ॥

ॐ नमो रोहिताय स्थपतये व्वृक्षाणाम्पतये नमः स्वाहा ॥ २५ ॥

ॐ नमो भुवन्तये व्वारिवस्कृतायौषधीनाम्पतये नमः स्वाहा ॥ २६ ॥

ॐ नमो मन्त्रिणे व्वाणिजाय कक्षाणाम्पतये नमः स्वाहा ॥ २७ ॥

ॐ नमऽ उच्चैर्घोषायाक्क्रन्दयते पत्तीनाम्पतये नमः स्वाहा ॥ २८ ॥

ॐ नमः कृत्स्नायतया धावते सत्त्वनाम्पतये नमः स्वाहा ॥ २९ ॥

ॐ नमः सहमानाय निव्याधिनऽ आव्याधिनीनाम्पतये नमः स्वाहा ॥३०॥

ॐ नमो निषङ्गिणे ककुभाय स्तेनानाम्पतये नमः स्वाहा ॥ ३१ ॥

ॐ नमो निचेरवे परिचरायारण्यानाम्पतये नमः स्वाहा ॥ ३२ ॥

ॐ नमो व्वञ्चते परिवञ्चते स्तायूनाम्पतये नमः स्वाहा ॥ ३३ ॥

ॐ नमो निषङ्गिणऽ इषुधिमते तस्कराणाम्पतये नमः स्वाहा ॥ ३४ ॥

ॐ नमः सृकायिभ्यो जिघांसद्भ्यो मुष्णताम्पतये नमः स्वाहा ॥३५॥

ॐ नमोऽसिमद्भ्यो नक्तञ्चरद्भ्यो व्विकृन्तानाम्पतये नमः स्वाहा ॥३६॥

ॐ नमऽ उष्णीषिणे गिरिचराय कुलुञ्चानाम्पतये नमः स्वाहा ॥ ३७ ॥

ॐ नमऽ [illegible] ॥ ३८ ॥

ॐ नमऽ आतन्वानेभ्यः प्रतिदधानेभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ३९ ॥

ॐ नमऽ इषुमद्भ्यो धन्वायिभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ३८ ॥
ॐ नमऽ आतन्वानेभ्यः प्रतिदधानेभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ३९ ॥



ॐ नमऽ आयच्छद्भ्योऽस्यद्भ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ४० ॥
ॐ नमो विसृजद्भ्यो विध्यद्भ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ४१ ॥
ॐ नमः स्वपद्भ्यो जाग्रद्भ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ४२ ॥
ॐ नमः शयानेभ्यऽ आसीनेभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ४३ ॥
ॐ नमस्तिष्ठद्भ्यो धावद्भ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ४४ ॥
ॐ नमः सभाभ्यः सभापतिभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ४५ ॥
ॐ नमोऽश्वेभ्योऽश्वपतिभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ४६ ॥
ॐ नमऽ आव्याधिनीभ्यो विविध्यन्तीभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ४७ ॥
ॐ नमऽ उगणाभ्यस्तृꣳहतीभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ४८ ॥
ॐ नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ४९ ॥
ॐ नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ५० ॥
ॐ नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ५१ ॥

ॐनमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ५२ ॥
ॐनमः सेनाभ्यः सेनानिभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ५३ ॥
ॐनमो रथिभ्योऽ अरथेभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ५४ ॥
ॐनमः क्षत्तृभ्यः सङ्ग्रहीतृभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ५५ ॥
ॐनमो महद्भ्योऽ अर्भकेभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ५६ ॥
ॐनमस्तक्षभ्यो रथकारेभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ५७ ॥
ॐनमः कुलालेभ्यः कर्म्मारेभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ५८ ॥
ॐनमो निषादेभ्यः पुञ्जिष्ठेभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ५९ ॥
ॐनमः श्वनिभ्यो मृगयुभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ६० ॥
ॐनमः श्वभ्यः श्वपतिभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ६१ ॥
ॐनमो भवाय च रुद्राय च स्वाहा ॥ ६२ ॥
ॐनमः शर्वाय च पशुपतये च स्वाहा ॥ ६३ ॥
ॐनमो नील[illegible] ॥ ६४ ॥

ॐ नमः कपर्द्दिने च व्व्युप्तकेशाय च स्वाहा ॥ ६५ ॥

ॐ नमः सहस्राक्क्षाय च शतधन्वने च स्वाहा ॥ ६६ ॥

ॐ नमो गिरिशयाय च शिपिविष्टाय च स्वाहा ॥ ६७ ॥

ॐ नमो मीढुष्टमाय चेषुमते च स्वाहा ॥ ६८ ॥

ॐ नमो ह्रस्वाय च व्वामनाय च स्वाहा ॥ ६९ ॥

ॐ नमो बृहते च व्वर्षीयसे च स्वाहा ॥ ७० ॥

ॐ नमो व्वृद्धाय च सवृधे च स्वाहा ॥ ७१ ॥

ॐ नमोऽग्र्याय च प्प्रथमाय च स्वाहा ॥ ७२ ॥

ॐ नमऽ आशवे चाजिराय च स्वाहा ॥ ७३ ॥

ॐ नमः शीग्घ्याय च शीब्भ्याय च स्वाहा ॥ ७४ ॥

ॐ नमऽ ऊर्म्म्याय चावस्वन्न्याय च स्वाहा ॥ ७५ ॥

ॐ नमो नादेयाय च द्वीप्प्याय च स्वाहा ॥ ७६ ॥

ॐ नमो ज्ज्येष्ठाय च कनिष्ठाय च स्वाहा ॥ ७७ ॥

ॐनमः पूर्व्वजाय चापरजाय च स्वाहा ॥ ७८ ॥
ॐनमो मद्ध्यमाय चापगल्भाय च स्वाहा ॥ ७९ ॥
ॐनमो जघन्न्याय च बुद्ध्न्याय च स्वाहा ॥ ८० ॥
ॐनमः सोब्भ्याय च प्प्रतिसर्य्याय च स्वाहा ॥ ८१ ॥
ॐनमो याम्म्याय च क्षेम्म्याय च स्वाहा ॥ ८२ ॥
ॐनमः श्श्लोक्क्याय चावसान्न्याय च स्वाहा ॥ ८३ ॥
ॐनमऽ उर्व्वर्य्याय च खल्ल्याय च स्वाहा ॥ ८४ ॥
ॐनमो व्वन्न्याय च कक्क्ष्याय च स्वाहा ॥ ८५ ॥
ॐनमः श्श्रवाय च प्प्रतिश्श्रवाय च स्वाहा ॥ ८६ ॥
ॐनमऽ आशुषेणाय चाशुरथाय च स्वाहा ॥ ८७ ॥
ॐनमः शूराय चावभेदिने च स्वाहा ॥ ८८ ॥
ॐनमो बिल्मिने च कवचिने च स्वाहा ॥ ८९ ॥

ॐ नमः श्रुताय च श्रुतसेनाय च स्वाहा ॥ ९१ ॥
ॐ नमो दुन्दुभ्याय चाहनन्याय च स्वाहा ॥ ९२ ॥
ॐ नमो धृष्णवे च प्रमृशाय च स्वाहा ॥ ९३ ॥
ॐ नमो निषङ्गिणे चेषुधिमते च स्वाहा ॥ ९४ ॥
ॐ नमस्तीक्ष्णेषवे चायुधिने च स्वाहा ॥ ९५ ॥
ॐ नमः स्वायुधाय च सुधन्वने च स्वाहा ॥ ९६ ॥
ॐ नमः स्रुत्याय च पथ्याय च स्वाहा ॥ ९७ ॥
ॐ नमः काट्याय च नीप्याय च स्वाहा ॥ ९८ ॥
ॐ नमः कुल्याय च सरस्याय च स्वाहा ॥ ९९ ॥
ॐ नमो नादेयाय च वैशन्ताय च स्वाहा ॥ १०० ॥
ॐ नमः कूप्याय चावट्याय च स्वाहा ॥ १०१ ॥
ॐ नमो वीध्र्याय चातप्याय च स्वाहा ॥ १०२ ॥
ॐ नमो मेघ्याय च विद्युत्याय च स्वाहा ॥ १०३ ॥

ॐनमो ऽवर्ष्याय चावर्ष्याय च स्वाहा ॥ १०४ ॥

ॐनमो ऽवात्याय च रेष्म्याय च स्वाहा ॥ १०५ ॥

ॐनमो ऽवास्तव्याय च ऽवास्तुपाय च स्वाहा ॥ १०६ ॥

ॐनमः सोमाय च रुद्राय च स्वाहा ॥ १०७ ॥

ॐनमस्ताम्राय चारुणाय च स्वाहा ॥ १०८ ॥

ॐनमः शङ्गवे च पशुपतये च स्वाहा ॥ १०९ ॥

ॐनमऽ उग्राय च भीमाय च स्वाहा ॥ ११० ॥

ॐनमोऽग्रेवधाय च दूरेवधाय च स्वाहा ॥ १११ ॥

ॐनमो हन्त्रे च हनीयसे च स्वाहा ॥ ११२ ॥

ॐनमो ऽवृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यः स्वाहा ॥ ११३ ॥

ॐनमस्ताराय स्वाहा ॥ ११४ ॥

ॐनमः शम्भवाय च मयोभवाय च स्वाहा ॥ ११५ ॥

ॐनमः शङ्कराय च [illegible] च स्वाहा ॥ ११६ ॥

ॐनमः शङ्कराय च मयस्कराय च स्वाहा ॥ ११६ ॥

ॐनमः शिवाय च शिवतराय च स्वाहा ॥ ११७ ॥

ॐनमः पार्य्याय चावार्य्याय च स्वाहा ॥ ११८ ॥

ॐनमः प्प्रतरणाय चोत्तरणाय च स्वाहा ॥ ११९ ॥

ॐनमस्तीर्थ्याय च कूल्ल्याय च स्वाहा ॥ १२० ॥

ॐनमः शष्प्याय च फेन्न्याय च स्वाहा ॥ १२१ ॥

ॐनमः सिकत्त्याय च प्प्रवाह्याय च स्वाहा ॥ १२२ ॥

ॐनमः किर्ठ० शिलाय च क्षयणाय च स्वाहा ॥ १२३ ॥

ॐनमः कपर्द्दिने च पुलस्तये च स्वाहा ॥ १२४ ॥

ॐनमऽ इरिण्ण्याय च प्प्रपथ्याय च स्वाहा ॥ १२५ ॥

ॐनमो व्व्रज्ज्याय च गोष्ठ्याय च स्वाहा ॥ १२६ ॥

ॐनमस्तल्प्याय च गेह्याय च स्वाहा ॥ १२७ ॥

ॐनमो हृदय्याय च निवेष्प्याय च स्वाहा ॥ १२८ ॥

ॐनमः काट्याय च गह्वरेष्ठाय च स्वाहा ॥ १२९ ॥

ॐनमः शुष्क्क्याय च हरित्याय च स्वाहा ॥ १३० ॥
ॐनमः पा‌ᳫंसव्व्याय च रजस्याय च स्वाहा ॥ १३१ ॥
ॐनमो लोप्प्याय चोलप्प्याय च स्वाहा ॥ १३२ ॥
ॐनमऽ ऊर्व्व्याय च सूर्व्याय च स्वाहा ॥१३३ ॥
ॐनमः पर्ण्णाय च पर्ण्णशदाय च स्वाहा ॥ १३४ ॥
ॐनमऽ उद्गुरमाणाय चाभिघ्घ्नते च स्वाहा ॥ १३५ ॥
ॐनमऽ आखिदते च प्प्रखिदते च स्वाहा ॥ १३६ ॥
ॐनमऽ इषुकृद्भ्यो धनुष्कृद्भ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ १३७ ॥
ॐनमो वः किरिकेब्भ्यो देवानाᳫं हृदयेब्भ्यः स्वाहा ॥ १३८ ॥
ॐनमो विचिन्न्वत्केब्भ्यो देवानाᳫं हृदयेब्भ्यः स्वाहा ॥ १३९ ॥
ॐनमो विक्षिणत्केब्भ्यो देवानाᳫं हृदयेब्भ्यः स्वाहा ॥१४० ॥
ॐनमऽ आनिर्हतेब्भ्यो देवानाᳫं हृदयेब्भ्यः स्वाहा ॥ १४१ ॥
ॐद्द्रापेऽ अन्धसस्प्पते दरिद्र नीललोहित । आसाम्प्रजाना-

मेषाम्पशूनाम्मा भेर्म्मा रोङ् मो च नः किञ्चनाममत् स्वाहा ॥ १४२ ॥

ॐ इमा रुद्राय तवसे कपर्द्दिने क्षयद्वीराय प्रभरामहे मतीः ।
यथा शमसद् द्विपदे चतुष्पदे विश्वम्पुष्टं ग्रामेऽ
अस्मिन्ननातुरम् स्वाहा ॥ १४३ ॥

ॐ या ते रुद्र शिवा तनूः शिवा विश्वाहा भेषजी ।
शिवा रुतस्य भेषजी तया नो मृढ जीवसे स्वाहा ॥ १४४ ॥

ॐ परि नो रुद्रस्य हेतिर्व्वृणक्तु परि त्वेषस्य दुर्म्मतिरघायोः ।
अव स्थिरा मघवद्भ्यस्तनुष्व मीढ्वस्तोकाय तनयाय
मृड स्वाहा ॥ १४५ ॥

ॐ मीढुष्टम शिवतम शिवो नः सुमना भव । परमे वृक्षऽ आयुध-
न्निधाय कृत्तिं वसानऽ आचर पिनाकम्बिभ्रदागहि स्वाहा ॥ १४६ ॥

ॐ विकिरिद्र विलोहित नमस्तेऽ अस्तु भगवः ।
यास्ते सहस्रꣳ हेतयोऽन्न्यमस्म्मन्निवपन्तु ताः स्वाहा ॥ १४७ ॥

ॐ सहस्राणि सहस्रशो बाह्वोस्तव हेतयः।
तासामीशानो भगवः पराचीना मुखा कृधि स्वाहा॥ १४८॥

ॐ असङ्ख्याता सहस्राणि ये रुद्राऽ अधि भूम्म्याम्।
तेषाᳬ सहस्रयोजनेऽव धन्न्वानि तन्न्मसि स्वाहा॥ १४९॥

ॐ अस्म्मिन्न्महत्यर्ण्णवेऽन्तरिक्षे भवाऽ अधि।
तेषाᳬ सहस्रयोजनेऽव धन्न्वानि तन्न्मसि स्वाहा॥ १५०॥

ॐ नीलग्ग्रीवाः शितिकण्ठाः दिवᳬ रुद्राऽ उपश्श्रिताः।
तेषाᳬ सहस्रयोजनेऽव धन्न्वानि तन्न्मसि स्वाहा॥ १५१॥

ॐ नीलग्ग्रीवाः शितिकण्ठाः शर्व्वाऽ अधः क्षमाचराः।
तेषाᳬ सहस्रयोजनेऽव धन्न्वानि तन्न्मसि स्वाहा॥ १५२॥

ॐ ये व्वृक्षेषु शष्प्पिञ्जरा नीलग्ग्रीवा व्विलोहिताः।
तेषाᳬ सहस्रयोजनेऽव धन्न्वानि तन्न्मसि स्वाहा॥ १५३॥

ॐ ये भूतानामधिपतयो व्विशिखासः कपर्द्दिनः।

तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्न्वानि तन्न्मसि स्वाहा ॥ १५४ ॥

ॐ ये पथाम्पथिरक्षयऽ ऐलवृदाऽ आयुर्य्युधः ।
तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्न्वानि तन्न्मसि स्वाहा ॥ १५५ ॥

ॐ ये तीर्त्थानि प्प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिणः ।
तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्न्वानि तन्न्मसि स्वाहा ॥ १५६ ॥

ॐ येऽन्नेषु व्विविद्ध्यन्ति पात्रेषु पिबतो जनान् ।
तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्न्वानि तन्न्मसि स्वाहा ॥ १५७ ॥

ॐ यऽ एतावन्तश्च भूयाꣳसश्च दिशो रुद्रा व्वितस्त्थिरे ।
तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्न्वानि तन्न्मसि स्वाहा ॥ १५८ ॥

ॐ नमोऽस्तु रुद्रेब्भ्यो ये दिवि येषां व्वर्षमिषवः । तेब्भ्यो दश प्प्राची-
र्द्दश दक्षिणा दश प्प्रतीचीर्द्दशोदीचीर्द्दशोर्द्ध्वाः । तेब्भ्यो नमोऽ अस्तु ते
नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यन्द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषाञ्जम्भे दद्ध्मः
स्वाहा ॥ १५९ ॥

ॐ नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो येऽन्तरिक्षे येषां वात इषवः। तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वाः। तेभ्यो नमोऽ अस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यन्द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषाञ्जम्भे दध्मः स्वाहा ॥ १६० ॥

ॐ नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो ये पृथिव्यां येषामन्नमिषवः। तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वाः। तेभ्यो नमोऽ अस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यन्द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषाञ्जम्भे दध्मः स्वाहा ॥ १६१ ॥



ॐ भूः, ॐ भुवः, ॐ स्वः। ॐ वयꣳ सोम० (८ मन्त्राः) [ पाठमात्रम् ]।

ॐ उग्रश्च० ( ७ मन्त्राः ) [ पाठमात्रम् ]।

ॐ वाजश्च० ॥ १ ॥ प्राणश्च० ॥ २ ॥ ओजश्च० ॥ ३ ॥ ज्यैष्ठ्यं च० ॥४॥ स्वाहा।

२–ॐ नमस्ते० ( १६१ आहुतयः )।

ॐसत्यश्च० ॥१॥ ऋतश्च० ॥२॥ मन्ता च० ॥३॥ शश्च० ॥४॥ स्वाहा।

३–ॐनमस्ते० ( १६१ आहुतयः )।

ॐऊर्क् च० ॥१॥ रयिश्च० ॥२॥ वित्तश्च० ॥३॥ व्रीहयश्च ॥४॥ स्वाहा।

४–ॐनमस्ते० ( १६१ आहुतयः )।

ॐअश्मा च० ॥ १ ॥ अग्निश्च० ॥ २ ॥ वसु च० ॥ ३ ॥ स्वाहा।

५–ॐनमस्ते० ( १६१ आहुतयः )।

ॐअग्निश्च मऽ इन्द्रश्च० ॥१॥ मित्रश्च० ॥२॥ पृथिवी च० ॥३॥ स्वाहा।

६–ॐनमस्ते० ( १६१ आहुतयः )।

ॐअंॅशु० शुश्च० ॥१॥ आग्रयणश्च० ॥२॥ स्रुचश्च० ॥३॥ स्वाहा।

७–ॐनमस्ते० ( १६१ आहुतयः )।

ॐअग्निश्च० ॥१॥ व्रतश्च० ॥२॥ स्वाहा।

८–ॐनमस्ते० ( १६१ आहुतयः )।

ॐएका च० ॥१॥ स्वाहा।

९–ॐनमस्ते० ( १६१ आहुतयः )।

ॐचतस्रश्च० ॥१॥ स्वाहा।

१०–ॐनमस्ते० ( १६१ आहुतयः )।

ॐत्र्यविश्च० ॥१॥ पष्ठवाट् च० ॥२॥ स्वाहा।

( पुनः ) ॐयज्जाग्रतः० ( ६ मन्त्राः ) स्वाहा।

ॐसहस्रशीर्षा० ( १६ मन्त्राः ) स्वाहा।

ॐअद्भ्यः सम्भृतः० ( ६ मन्त्राः ) स्वाहा।

ॐआशुः शिशानः० ( १२ मन्त्राः ) स्वाहा।

ॐविभ्राड् बृहत् पिबतु० ( १७ मन्त्राः ) स्वाहा।

११–ॐनमस्ते० ( १६१ आहुतयः )।

ॐवाजाय स्वाहा० ॥ १ ॥ आयुर्य्यज्ञेन कल्पताम्० ॥ २ ॥ स्वाहा।

ॐऋचं वाचम्० स्वाहा। ॐयन्मे छिद्रम्० स्वाहा।

ॐभूर्भुवः स्वः तत्सवितुः० स्वाहा। ॐकयानश्चित्र० स्वाहा।

ॐकस्त्वा सत्यो मदानाम्० स्वाहा। ॐअभी षु णः० स्वाहा।

ॐकया त्वन्नऽ ऊत्याभि० स्वाहा। ॐइन्द्रो विश्वस्य० स्वाहा।
ॐशं नो मित्रः शं वरुणः० स्वाहा। ॐशं नो वातः पवताᳬं शं नः० स्वाहा।
ॐअहानि शं भवन्तु नः० स्वाहा। ॐशन्नो देवीः० स्वाहा।
ॐस्योना पृथिवि० स्वाहा। ॐआपो हि ष्ठा० स्वाहा।
ॐयो वः शिवतमो रसः० स्वाहा। ॐतस्माऽ अरं गमाम वः० स्वाहा।
ॐद्यौः शान्तिः० स्वाहा। ॐदृते दृᳬंह मा मित्रस्य मा चक्षुषा० स्वाहा।
ॐदृते दृᳬंह मा ज्योक्ते० स्वाहा। ॐनमस्ते हरसे शोचिषे० स्वाहा।
ॐनमस्तेऽ अस्तु विद्युते० स्वाहा। ॐयतो-यतः समीहसे० स्वाहा।
ॐसुमित्रिया नऽ आपः० स्वाहा। ॐतच्चक्षुर्देवहितम्० स्वाहा।
ॐसद्योजातम्० (५ मन्त्राः) [ पाठमात्रम् ]।

ततः षडङ्गन्यासं कुर्यादिति।

इति रुद्रयागहवनमन्त्राः।



## ( १ ) अथ [1]रुद्रयागस्य षड्भिः प्रकारैर्हवनमन्त्रविभागस्तत्र एकधाहवनमन्त्रविभागपक्षः प्रथमः ।

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव इत्यारभ्य तमेषाञ्जम्भे दध्मः स्वाहा ॥

इति षट्षष्ठिमन्त्राणामेकाहुतिः ॥ १ ॥

## ( २ ) अथ त्रेधाहवनमन्त्रविभागपक्षः द्वितीयः ।

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव इत्यारभ्य अर्भकेभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥

इति षड्विंशतिमन्त्राणामेकाहुतिः ॥ १ ॥

ॐ नमस्तक्षभ्य इत्यारभ्य सुधन्वने च स्वाहा ॥

इति दशमन्त्राणामेकाहुतिः ॥ २ ॥



---

१ रुद्रयागे सर्वत्र रौद्राध्यायस्यार्षेयादिकं स्मृत्वा 'श्रीमहारुद्रप्रीतये होमे विनियोगः' इति कथनीयम् ।

ॐ नमः स्तुत्यायेत्यारभ्य तमेषाञ्जम्भे दध्मः स्वाहा ॥
इति त्रिंशन्मन्त्राणामेकाहुतिः ॥ ३ ॥

## ( ३ ) अथ षोढा (षडधा) हवनमन्त्रविभागपक्षस्तृतीयः ।

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव इत्यारभ्य अर्भकेभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥
इति षड्विंशतिमन्त्राणामेकाहुतिः ॥ १ ॥

ॐ नमस्तक्षभ्य इत्यारभ्य सुधन्वने च स्वाहा ॥
इति दशमन्त्राणामेकाहुतिः ॥ २ ॥

ॐ नमः स्तुत्यायेत्यारभ्य स ऽ एतावन्तश्च० मसि स्वाहा ॥
इति सप्तविंशतिमन्त्राणामेकाहुतिः ॥ ३ ॥

ॐ नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो ये दिवि येषां वर्षमिषवः । तेभ्यो दश प्राची० तमेषाञ्जम्भे दध्मः स्वाहा ॥ ४ ॥

ॐ नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो येऽन्तरिक्षे येषां व्वातऽ इषवः। तेभ्यो दश प्राची०

तमेषाञ्जम्भे दध्मः स्वाहा ॥ ५ ॥

ॐ नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो ये पृथिव्यां येषामन्नमिषवः। तेभ्यो दश प्राची०

तमेषाञ्जम्भे दध्मः स्वाहा ॥ ६ ॥

## ( ४ ) अथ षोडशधा हवनमन्त्रविभागपक्षश्चतुर्थः।

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव इत्यारभ्य अर्भकेभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥

इति षड्विंशतिमन्त्राणामेकाहुतिः ॥ १ ॥

ॐ नमस्तक्षभ्य इत्यारभ्य सुधन्वने च स्वाहा।

इति दशमन्त्राणामेकाहुतिः ॥ २ ॥

ॐ नमः स्रुत्यायेत्यारभ्य पराचीना मुखा कृधि स्वाहा।

इति सप्तदशमन्त्राणामेकाहुतिः ॥ ३ ॥

ॐ असङ्ख्याता सहस्राणि ये रुद्राऽ अधि भूम्याम्।
तेषाᳬं सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि स्वाहा ॥ ४ ॥

ॐ अस्मिन्महत्यर्णवेऽन्तरिक्षे भवाऽ अधि।
तेषाᳬं सहस्रयोजऽनेव धन्वानि तन्मसि स्वाहा ॥ ५ ॥

ॐ नीलग्रीवाः शितिकण्ठा दिवᳬं रुद्राऽ उपश्रिताः।
तेषाᳬं सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि स्वाहा ॥ ६ ॥

ॐ नीलग्रीवाः शितिकण्ठाः शर्वाऽ अधः क्षमाचराः।
तेषाᳬं सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि स्वाहा ॥ ७ ॥

ॐ ये वृक्षेषु शष्पिञ्जरा नीलग्रीवा विलोहिताः।
तेषाᳬं सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि स्वाहा ॥ ८ ॥

ॐ ये भूतानामधिपतयो विशिखासः कपर्दिनः।
तेषाᳬं सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि स्वाहा ॥ ९ ॥

ॐ ये पथां पथिरक्षयऽ ऐलबृदाऽ आयुर्युधः।
तेषाᳬं सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि स्वाहा ॥ १० ॥

ॐ ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिणः ।

तेषाᳪं सहस्रयोजनेऽव धन्न्वानि तन्न्मसि स्वाहा ॥ ११ ॥

ॐ येऽन्नेषु व्विविद्ध्यन्ति पात्रेषु पिबतो जनान् ।

तेषाᳪं सहस्रयोजनेऽव धन्न्वानि तन्न्मसि स्वाहा ॥ १२ ॥

ॐ यऽ एतावन्तश्च भूयाᳪंसश्च दिशो रुद्द्रा व्वितस्थिरे ।

तेषाᳪं सहस्रयोजनेऽव धन्न्वानि तन्न्मसि स्वाहा ॥ १३ ॥

ॐ नमोऽस्तु रुद्द्रेभ्यो ये दिवि येषां व्वर्षमिषवः । तेभ्यो दश प्राचीर्द्दश० ।

तेभ्यो नमोऽ अस्तु तेनोऽवन्तु तेनो० तमेषां जम्भे दध्मः स्वाहा ॥ १४ ॥

ॐ नमोऽस्तु रुद्द्रेभ्यो येऽन्तरिक्षे येषां व्वातऽ इषवः । तेभ्यो दश प्राचीर्द्दश० ।

तेभ्यो नमोऽ अस्तु तेनोऽवन्तु तेनो० तमेषां जम्भे दध्मः स्वाहा ॥ १५ ॥

ॐ नमोऽस्तु रुद्द्रेभ्यो ये पृथिव्व्यां येषामन्नमिषवः । तेभ्यो दश प्राचीर्द्दश० ।

तेभ्यो नमोऽ अस्तु तेनोऽवन्तु तेनो० तमेषां जम्भे दध्मः स्वाहा ॥ १६ ॥

# ( ५ ) अथ चतुश्चत्वारिंशद्धवनमन्त्रविभागपक्षः पञ्चमः ।

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव० मुत ते नमः स्वाहा ॥ १ ॥

ॐ या ते रुद्र शिवा० भि चाकशीहि स्वाहा ॥ २ ॥

ॐ यामिषुङ्गिरिशन्त० पुरुषञ्जगत् स्वाहा ॥ ३ ॥

ॐ शिवेन ऽवचसा० सुमनाऽ असत् स्वाहा ॥ ४ ॥

ॐ अद्ध्यवोचदधिवक्ता० परासुव स्वाहा ॥ ५ ॥

ॐ असौ यस्ताम्रो० ईमहे स्वाहा ॥ ६ ॥

ॐ असौ योऽवसर्प्पति० उतैनं गोपा० मृडयाति नः स्वाहा ॥ ७ ॥

ॐ नमोऽस्तु नीलग्ग्रीवाय सहस्राक्षाय० तेभ्योऽकरन्नमः स्वाहा ॥ ८ ॥

ॐ प्रमुञ्च धन्न्वनस्त्वमुभयो० भगवो ऽवप स्वाहा ॥ ९ ॥

ॐ विज्ज्यं धनुः कपर्द्दिनो० निषङ्गधिः स्वाहा ॥ १० ॥

ॐ या ते हेतिर्म्मीढुष्टम हस्ते० परिभुज स्वाहा ॥ ११ ॥

ॐ परि ते धन्न्वनो हेति० निधेहि तम् स्वाहा ॥ १२ ॥

ॐ अवतत्य धनुष्ट्वᳪ᳭. सहस्राक्ष० सुमना भव स्वाहा ॥ १३ ॥

ॐ नमस्तऽ आयुधाया० धन्न्वने स्वाहा ॥ १४ ॥

ॐ मा नो महान्तमुत० रीरिषः स्वाहा ॥ १५ ॥

ॐ मा नस्तोके० हवामहे स्वाहा ॥ १६ ॥

ॐ नमो हिरण्यबाहवे० स्वाहा। ॐ नमो बभ्लुशाय०। ॐ नमो रोहि-ताय० स्वाहा। ॐ नमः कृत्स्नायतया० स्वाहा। ॐ नमो ञ्वञ्चते० ञ्विकृन्तानाम्पतये नमः स्वाहा।

इति पञ्चमन्त्राणामेकाहुतिः ॥ १७ ॥

ॐ नमऽ उष्णीषिणे० स्वाहा। ॐ नमो ञ्विसृजद्भ्यो० स्वाहा। ॐ नमः सभाभ्यः० स्वाहा। ॐ नमो गणेभ्यो० स्वाहा। ॐ नमः सेनाभ्यः० अर्भकेभ्यश्च वो नमः स्वाहा।

इति पञ्चमन्त्राणा ...

इति पञ्चमन्त्राणामेकाहुतिः ॥ १८ ॥



ॐ नमस्तक्षभ्यो॰ स्वाहा । ॐ नमः श्वभ्यः॰ स्वाहा । ॐ नमः कपर्द्दिने॰ स्वाहा । ॐ नमो ह्रस्वाय॰ स्वाहा । ॐ नमऽ आशवे॰ स्वाहा ।

इति पञ्चमन्त्राणामेकाहुति ॥ १९ ॥

ॐ नमो ज्ज्येष्ठाय॰ स्वाहा । ॐ नमः सोभ्याय॰ स्वाहा । ॐ नमो व्वन्न्याय॰ स्वाहा । ॐ नमो बिल्मिने॰ स्वाहा । ॐ नमो घृष्णवे॰

इति पञ्चमन्त्राणामेकाहुतिः ॥ २० ॥

ॐ नमः स्रुत्याय॰ स्वाहा । ॐ नमः कूप्याय॰ स्वाहा । ॐ नमो व्वात्याय॰ स्वाहा । ॐ नमः शङ्गवे॰ नमस्ताराय स्वाहा ।

इति मन्त्रचतुष्टयस्यैकाहुतिः ॥ २१ ॥

ॐ नमः शम्भवाय॰ शिवतराय च स्वाहा ॥ २२ ॥

ॐ नमः पार्य्याय॰ स्वाहा । ॐ नमः सिकत्याय॰ स्वाहा । ॐ नमो व्व्रज्याय॰ स्वाहा । ॐ नमः शुष्क्याय॰ स्वाहा । ॐ नमः पर्ण्णाय॰ आनिर्हतेभ्यः स्वाहा ।

इति पञ्चमन्त्राणामेकाहुतिः ॥ २३ ॥

ॐ नमो वः किरिकेभ्यो देवानाᳬ हृदयेभ्यो नमो विचिन्न्वत्केभ्यो नमो
विक्षिणत्केभ्यो नमऽ आनिर्हतेभ्यः स्वाहा ॥ २४ ॥

ॐ द्रापेऽ अन्धसस्पते० किं चनाममत स्वाहा ॥ २५ ॥

ॐ इमा रुद्राय तवसे० अस्मिन्ननातुरम् स्वाहा ॥ २६ ॥

ॐ या ते रुद्र शिवा तनूः शिवा० मृड जीवसे स्वाहा २७ ॥

ॐ परि नो रुद्रस्य० तनयाय मृड स्वाहा ॥ २८ ॥

ॐ मीढुष्टम शिवतम० बिभ्रदा गहि स्वाहा ॥ २९ ॥

ॐ विकिरिद्र विलोहित० विपन्तु ताः स्वाहा ॥ ३० ॥

ॐ सहस्राणि सहस्रशो० मुखा कृधि स्वाहा ॥ ३१ ॥

ॐ असंख्याता सहस्राणि० तन्न्मसि स्वाहा ॥ ३२ ॥

ॐ अस्मिन् महत्यर्णवे० तन्न्मसि स्वाहा ॥ ३३ ॥

ॐ नीलग्ग्रीवाः शितिकण्ठा दिवᳬ० रुद्रा० तन्न्मसि स्वाहा ॥ ३४ ॥

ॐ नीलग्ग्रीवाः शितिकण्ठाः शर्व्वाऽ अधः० तन्न्मसि स्वाहा ॥ ३५ ॥

ॐ ये वृक्षेषु० तन्नमसि स्वाहा ॥ ३६ ॥

ॐ ये भूतानामधिपतयो० तन्नमसि स्वाहा ॥ ३७ ॥

ॐ ये पथां पथि रक्षयऽ ऐल० तन्नमसि स्वाहा ॥ ३८ ॥

ॐ ये तीर्थानि० तन्नमसि स्वाहा ॥ ३९ ॥

ॐ येऽन्नेषु० तन्नमसि स्वाहा ॥ ४० ॥

ॐ यऽ एतावन्तश्च० तन्नमसि स्वाहा ॥ ४१ ॥

ॐ नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो ये दिवि० जम्भे दध्मः स्वाहा ॥ ४२ ॥

ॐ नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो येऽन्तरिक्षे० जम्भे दध्मः स्वाहा ॥ ४३ ॥

ॐ नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो ये पृथिव्यां येषामन्न० जम्भे दध्मः स्वाहा ॥ ४४ ॥

## ( ६ ) अथाष्टचत्वारिंशद्धवनमन्त्रविभागपक्षः षष्ठः ।

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव० मुतते नमः स्वाहा ॥ १ ॥

ॐ या ते रुद्र शिवा० चाकशीहि स्वाहा ॥ २ ॥

ॐ यामिषुङ्गिरिशन्त० पुरुषं जगत् स्वाहा ॥ ३ ॥

ॐ शिवेन व्वचसा त्वा गिरिशाच्छा० सुमनाऽ असत् स्वाहा ॥ ४ ॥

ॐ अध्यवोचदधिवक्ता० परासुव स्वाहा ॥ ५ ॥

ॐ असौ यस्ताम्रोऽ अरुणऽ उत० हेडऽ ईमहे स्वाहा ॥ ६ ॥

ॐ असौ योऽवसर्प्पति नीलग्ग्रीवो० मृडयाति नः स्वाहा ॥ ७ ॥

ॐ नमोऽस्तु नीलग्ग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे० करन्नमः स्वाहा ॥ ८ ॥

ॐ प्रमुञ्च धन्न्वनस्त्वमुभयोरार्त्न्योर्ज्ज्याम्० भगवो व्वप स्वाहा ॥ ९ ॥

ॐ व्विज्ज्यन्धनुः कपर्द्दिनो० निषङ्गधिः स्वाहा ॥ १० ॥

ॐ या ते हेतिर्म्मीढुष्टम हस्ते० परिभुज स्वाहा ॥ ११ ॥

ॐ परि ते धन्न्वनो हेतिरस्मान्न्वृणक्तु० निधेहितं स्वाहा ॥ १२ ॥

ॐ अवतत्य धनुष्ट्वꣳ० सहस्राक्ष शतेषुधे० सुमना भव स्वाहा ॥ १३ ॥

ॐ नमस्तऽ आयुधायाना० तव धन्न्वने स्वाहा ॥ १४ ॥

ॐ मा नो महान्तमुत० रुद्र रीरिषः स्वाहा ॥ १५ ॥

ॐ मा नस्तोके तनये मा नऽ आयुषि० सदमित्त्वा हवामहे स्वाहा ॥ १६ ॥

ॐ नमो हिरण्यबाहवे० स्वाहा । ॐ नमो बब्भ्लुशाय० स्वाहा । ॐ नमो-रोहिताय० स्वाहा । ॐ नमः कृत्स्नायतया० स्वाहा । ॐ नमो व्वञ्चते परिवञ्चते० व्विकृन्तानां पतये स्वाहा ।

इति पञ्चमन्त्राणामेकाहुतिः ॥ १७ ॥

ॐ नमऽ उष्णीषिणे गिरिचराय० स्वाहा । ॐ नमो व्विसृजद्भ्यो व्विध्यद्भ्यश्च० स्वाहा । ॐ नमः सभाभ्यः सभा० स्वाहा । ॐ नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च० स्वाहा । ॐ नमः सेनाभ्यः सेनानिभ्यश्च० अर्भकेभ्यश्च वो नमः स्वाहा ।

इति पञ्चमन्त्राणामेकाहुतिः ॥ १८ ॥

ॐ नमस्तक्षभ्यो रथकारेभ्यश्च० स्वाहा । ॐ नमः श्वभ्यः श्वपतिभ्यश्च० स्वाहा । ॐ नमः कपर्दिने च व्युप्तकेशाय० स्वाहा । ॐ नमो ह्रस्वाय

च श्यामनाय० स्वाहा। ॐ नमऽ आशवे चाजिराय च० द्वीप्याय च स्वाहा।

इति पञ्चमन्त्राणामेकाहुतिः ॥ १९ ॥

ॐ नमो ज्ज्येष्ठाय च कनिष्ठाय च० स्वाहा। ॐ नमः सोभ्याय च प्रतिसर्व्याय च० स्वाहा। ॐ नमो श्वन्याय च कक्ष्याय च० स्वाहा। ॐ नमो बिल्मिने च कवचिने च० स्वाहा। ॐ नमो धृष्णवे च प्रमृशाय च० सुधन्न्वने च स्वाहा।



इति पञ्चमन्त्राणामेकाहुतिः ॥ २० ॥

ॐ नमः स्तुत्याय च पथ्याय च० स्वाहा। ॐ नमः कूप्याय चावट्याय च० स्वाहा। ॐ नमो श्वात्याय च रेष्म्याय च० स्वाहा। ॐ नमः शङ्खवे च पशुपतये च० हनीयसे च नमो श्वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यो नमस्ताराय स्वाहा।

इति चतुर्मन्त्राणामेकाहुतिः ॥ २१ ॥

इति चतुर्मन्त्राणामेकाहुतिः ॥ २१ ॥



ॐ नमः शम्भवाय च० शिवतराय च स्वाहा ॥ २२ ॥

ॐ नमः पार्य्याय चावार्य्याय च० स्वाहा। ॐ नमः सिकत्याय प्रवाह्याय च० स्वाहा। ॐ नमो व्रज्ज्याय च गोष्ठ्याय च० स्वाहा। ॐ नमः शुष्क्याय च हरित्याय च० स्वाहा। ॐ नमः पर्णाय च पर्णशदाय च० धनुष्कृद्‌भ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ २३ ॥

ॐ नमो वः किरिकेभ्यः स्वाहा ॥ २४ ॥

ॐ देवानार्ठ० हृदयेभ्यः स्वाहा ॥ २५ ॥

ॐ नमो विचिन्वत्केभ्यः स्वाहा ॥ २६ ॥

ॐ नमो विक्षिणत्केभ्यः स्वाहा ॥ २७ ॥

ॐ नमऽ आनिर्हतेभ्यः स्वाहा ॥ २८ ॥

ॐ द्रापेऽ अन्धसस्पते० किञ्चनाममत् स्वाहा ॥ २९ ॥

ॐ इमा रुद्राय तवसे० अस्मिन्ननातुरम् स्वाहा ॥ ३० ॥

ॐ या ते रुद्र शिवा० मृडजीवसे स्वाहा ॥ ३१ ॥

ॐ परि नो रुद्रस्य० तनयाय मृड स्वाहा ॥ ३२ ॥

ॐ मीढुष्टम शिवतम शिवो नः० बिभ्रदा गहि स्वाहा ॥ ३३ ॥

ॐ विकिरिद्र० वि वपन्तु ताः स्वाहा ॥ ३४ ॥

ॐ सहस्राणि सहस्रशो० मुखा कृधि स्वाहा ॥ ३५ ॥

ॐ असंख्याता० धन्वानि तन्मसि स्वाहा ॥ ३६ ॥

ॐ अस्मिन्महत्यर्णवेऽन्तरिक्षे० तन्मसि स्वाहा ॥ ३७ ॥

ॐ नीलग्रीवाः शितिकण्ठा दिवꣳ० तन्मसि स्वाहा ॥ ३८ ॥

ॐ नीलग्रीवाः शितिकण्ठाः शर्वाऽ० तन्मसि स्वाहा ॥ ३९ ॥

ॐ ये वृक्षेषु शष्पिञ्जरा० तन्मसि स्वाहा ॥ ४० ॥

ॐ ये भूतानामधिपतयो० तन्मसि स्वाहा ॥ ४१ ॥

ॐ ये पथां पथि० जनेऽव धन्वानि तन्मसि स्वाहा ॥ ४२ ॥

ॐ ये तीर्थानि प्रचरन्ति० तङ्मसि स्वाहा ॥ ४३ ॥

ॐ येऽन्नेषु विविध्यन्ति० तङ्मसि स्वाहा ॥ ४४ ॥

ॐ यऽ एतावन्तश्च भूयाꣳसश्च० तङ्मसि स्वाहा ॥ ४५ ॥

ॐ नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो ये दिवि० तमेषाञ्जम्भे दध्मः स्वाहा ॥ ४६ ॥

ॐ नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो येऽन्तरिक्षे० तमेषाञ्जम्भे दध्मः स्वाहा ॥ ४७ ॥

ॐ नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो ये पृथिव्यां येषामन्न० तमेषां जम्भे दध्मः स्वाहा ॥४८॥

इति रुद्रयाग-हवनमन्त्राः ।

# ॥श्री रुद्राष्टाकम्॥



जरा जन्म दु:ख पाप के नाश के लिए रुद्राष्टक का पाठ करे इस पाठ के प्रभाव से भगवान शंकर प्रसन्न होते हैं।

नमामीशमीशान निर्वाणरूपं, विभुं व्यापकं ब्रह्म वेदस्वरूपं
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं, चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहं॥१॥
निराकार ओंकार मूलं तुरीयं, गिराग्यान गोतीतमीशं गिरीशं।
करालं महाकाल कालं कृपालं, गुणागार संसारपारं नतोऽहं॥२॥
तुषाराद्रि संकाश गोरं गभीरं, मनोभूत कोटि प्रभा श्रीशरीरं।
स्फुरन्मौलि कल्लोलिनी चारु गंगा, लसद्भालबालेन्दु कंठे भुजंगा॥३॥
चलत्कुंडलं भ्रू सुनेत्रं विशालं, प्रसन्नाननं नीलकंठं दयालं।
मृगाधीशचर्माम्बरं मुण्डमालं, प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि॥४॥

प्रचंडं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं, अखंडं अजं भानुकोटिप्रकाशं।
त्रयः शूल निर्मूलनं शूलपाणिं, भजेऽहं भवानीपतिं भावगम्यं॥५॥
कलातीत कल्याण, कल्पान्तकारी, सदा सच्चिदानन्द दाता पुरारी।
चिदानंद संदोह मोहापहारी, प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी॥६॥
न यावद् उमानाथ पादारविन्दं, भजंतीह लोके परे वा नराणाम्।
न तावत्सुखं शान्ति सन्तापनाशं, प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासं॥७॥
न जानामि योगं जपं नैव पूजां, नतोऽहं सदा सर्वदा शंभु तुभ्यं।
जरा जन्म दुःखौघतातप्यमानं, प्रभो पाहि आपन्नमामीश शंभो॥८॥

॥श्लोक॥

रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतोषये।
ये पठन्ति नरा भक्त्या तेषां शम्भुः प्रसीदति ॥९॥

# ॥शिवपञ्चाक्षरस्तोत्रम्॥



शिव की प्रसन्नता के लिए पंचाक्षर का पाठ करें। शिवपंचाक्षर का पाठ करने से साधक को शिव लोक की प्राप्ति होती है।

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय भस्मांगरागाय महेश्वराय॥
नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय तस्मै नकाराय नमः शिवाय॥१॥
मन्दाकिनीसलिलचन्दनचर्चिताय नन्दीश्वरप्रमथनाथमहेश्वराय॥
मन्दारपुष्पबहुपुष्पसुपूजिताय तस्मै मकाराय नमः शिवाय॥२॥
शिवाय गौरीवदनाब्जवृन्दसूर्याय दक्षाध्वरनाशकाय॥
श्रीनीलकण्ठाय वृषध्वजाय तस्मै शिकाराय नमः शिवाय॥३॥
वसिष्ठकुम्भोद्भवगौतमार्यमुनीन्द्रदेवार्चितशेखराय ॥
चन्द्रार्कवैश्वानरलोचनाय तस्मै वकाराय नमः शिवाय॥४॥
यक्षस्वरूपाय जटाधराय पिनाकहस्ताय सनातनाय।
दिव्याय देवाय दिगम्बराय तस्मै यकाराय नमः शिवाय॥५॥
पञ्चाक्षरमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते॥६॥

इति श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचितं शिवपञ्चाक्षरस्तोत्रं सम्पूर्णम्।

# ।।शिवषडक्षरस्तोत्रम्।।



ऋषि देवताओं अप्सराओं के वन्दनीय ॐकार का ध्यान करते हुए शिवषडक्षर स्तोत्र का पाठ करने से मन को शान्ति की प्राप्ति होकर जीवन सुखमय हो जाता है तथा परलोक में शिवलोक प्राप्त कर मनुष्य शिव के साथ निवास करता है।

ॐकारं विन्दु संयुक्तं नित्यं ध्यायन्ति योगिनः। कामदं मोक्षदं चैव ॐकाराय नमो नमः।।१।।
नमन्ति ऋषयो देवा नमत्यप्सरसां गणाः। नरानमन्ति देवेशं नकाराय नमो नमः।।२।।
महादेवं महात्मानं महाध्यानं परायणम्। महापापहरं देवं मकाराय नमो नमः।।३।।
शिवं शान्तं जगन्नाथं लोकानुग्रह कारकम्। शिवमेकपदं नित्यं शिकाराय नमो नमः।।४।।
वाहनं वृषभोयस्य वासुकिः कष्ठभूषणम्। वामे शक्तिधरं देवं वकाराय नमो नमः।।५।।
यत्र यत्र स्थितो देवः सर्वव्यापी महेश्वरः। यो गुरु सर्व देवानां यकाराय नमो नमः।।६।।
षडक्षरमिदं स्तोत्रं यः पठेच्छि व सन्निधौ। शिवलोकमवाप्नोति शिवेनसह मोदते।।७।।

इति श्री रुद्रयामले उमामहेश्वर संवादे शिवषडक्षरस्तोत्रं सम्पूर्णम्।

# द्वादशज्योतिर्लिङ्गानि

सौराष्ट्रे सोमनाथं च श्रीशैले मल्लिकार्जुनम्।
उज्जयिन्यां महाकालमोङ्कारममलेश्वरम्॥१॥
परल्यां वेद्यनाथं च डाकिन्यां भीमशङ्करम्।
सेतुबन्धे तु रामेशं नागेशं दारुकावने॥२॥
वाराणस्यां तु विश्वेशं त्र्यंब्यकं गौतमीतटै।
हिमालये तु केदारं धुसृणेशं च शिवालये॥३॥
एतानि ज्योतिर्लिङ्गानि सायं प्रातः पठेन्नरः।
सप्तजन्मकृतं पापं स्मरणेन विनश्यति॥४॥

॥इति द्वादशज्योतिर्लिङ्गानि॥

# पुष्पांजलि

कर्पूर गौरं करुणावतारं,
संसार सारं भुजगेद्र हाम्।
सदाबसन्तं हृदयार विन्दे,
भवं भवानी सहितं नमामि॥१॥
रुण्डाल मालाय कपालकाय,
कपाल मालाय विश्वेश्वराय।
दिव्याय देहाय दिगम्बराय,
तस्मै न काराय नमः शिवाय॥२॥
त्वमेव माता च पिता त्वमेव,
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव,
त्वमेव सर्वं मम देव देव॥३॥

# ॥द्वादशज्योतिर्लिङ्गस्तोत्रम्॥

द्वादश ज्योर्लिङ्ग स्तोत्र का पाठ करने से मनुष्य भगवान भक्ति मुक्ति देने वाले पाप राशि का नाश करने वाले भयमुक्त करने वाले होते हैं।

सौराष्ट्रेदेशे विदेशेऽतिरम्ये ज्योतिर्मयं चन्द्रकलावतंसम्।
भक्ति प्रदानाय कृपावतीर्णं तं सोमनाथं शरणं प्रपद्ये॥१॥
श्री शैलसङ्गे विवुधातिसंगे तुलाद्रितुङ्गेऽपिमुदावसंतम्।
तमर्जुनं मल्लिकपूर्वमेकं नमामि संसार समुद्रसेतुम॥२॥
अवंतिकायां विहितावतारं मुक्ति प्रदानाय च सज्जनानाम्।
अकालमृत्योः परिरक्षणार्थं वन्देमहाकाल महासुरेशम्॥३॥
कावेरिकानर्मदयोः पवित्रे समागमे सज्जनतारणाय।
सदैव माधातृपुरे वसंतमोकारमीशं शिवमेकमीडे॥४॥
पूर्वोत्तरे प्रज्वलिकानिधाने सदा वसंतं गिरिजासमेतम्।
सुरासुराराधित पादपद्म श्री वैद्यनाथंतमहं नमामि॥५॥
याम्ये सदंगे नगरेऽतिरम्ये विभूषितांगं विविधेश्चभोगैः।
सद्भक्तिमुक्तिप्रदमीशमेकं श्री नागनाथं शरणं प्रपद्ये॥६॥

महाद्रिपार्श्वे च तटे रमंतं सम्पूज्यमानं सततां मुनिंद्रैः।
सुरासुरैर्यक्षमहोरगाद्यै केदारमीशं शिवमेकमीडे।।७।।

सह्याद्रि शीर्षे विमलेवसंतं गोदावरीतीर पवित्रदेशे।
यद्दर्शनात्पातकमाशु नाशं प्रयाति तं त्र्यम्बकमीशमीडे।।८।।

सुताम्रपर्णीजलराशि योगे निबध्य सेतुं विशिखैरसंख्यै।
श्री रामचन्द्रेण समर्पितं तं रामेश्वराख्यं नियतं नमामि।।९।।

यं डाकिनीशाकिनीका समाजे निषेव्यमानं पिशिताशनैश्च।
सदैवभीमादिपदप्रसिद्धं तं शंकरं भक्त हितंनमामि।।१०।।

सानन्द मानन्दवने वसन्तं मानन्दकन्दं हतपापवृन्दम्।
वाराणसीनाथमनाथनाथ श्री विश्वनाथं शरणं प्रपद्ये।।११।।

इलापुरे रम्य विशालकेऽस्मिन्समुल्लसतं च जगद्वरेण्य।
वन्दे महोदार तर स्वभावं घृष्णेश्वराख्यं शरणं प्रपद्ये।।१२।।

ज्योतिर्मय द्वादश लिंगका नां शिवात्मनां प्रोक्त मिदं क्रमेश।
स्तोत्रं पठित्वा मनुजोऽतिभक्त्या फलं तदालोक्य निजं भजेच्च।।१३।।

।इति श्री द्वादश ज्योतिर्लिंग स्तोत्रम्।।

# ।।लिंगाष्टकम्।।

लिंगाष्टक पाठ करने से आजन्म दुःख का नाश संचित पाप का नाश दरिद्र नाश लक्ष्मी प्राप्ति होती है। इस अष्टक का भक्तिपूर्वक पाठ शिव के समीप करने से अन्त में साधक को शिवलोक प्राप्त होता है।

ब्रह्ममुरारिसुरार्चितलिंग निर्मल भाषितशोभितलिंगम्। जन्मजदुःखविनाशकलिंगं तत्प्रणमामि सदाशिवलिंगम्।।१।।

देवमुनिप्रवरार्चितलिंगं कामदहं करुणाकरलिङ्गम्। रावणदर्पविनाशन लिंगं तत्प्रणमामि सदाशिवलिंगम्।।२।।

सर्वसुगन्धिसुलेपितलिंगं बुद्धिविवर्धनकारणलिंगम्। सिद्धसुरासुरवंदितलिंगं तत्प्रणमामिसदाशिवलिंगम्।।३।।

कनक महामणि भूषितलिंग फणिपतिवेष्टितशोभितलिंगम्। दक्षसुयज्ञविनाशनलिंगं तत्प्रणमामि सदाशिवलिंगम्।।४।।

कुंकुमचन्दनलेपितलिंगं पङ्कजहारसुशोभितलिंगम्। सञ्चितपापविनाशनलिंगं तत्प्रणमामिसदाशिवलिंगम्।।५।।

देवगणार्चितसेवितलिंग भावैर्भक्ति भिरेवचलिंगम्। दिनकर कोटि प्रभाकर लिंगं तत्प्रणमामिसदाशिवलिंगम्।।६।।

अष्टदलोपरि वेष्टितलिंगं सर्वसमुद्भवकारण लिंगम्। अष्टदरिद्रविनाशितलिंग तत्प्रणमामि सदाशिवलिंगम्।।७।।

सुरगुरुसुरवरपूजितलिंग सुवरनपुष्पसदार्चित लिंगम्। परात्परं परमात्मकलिंगं तत्प्रणमामि सदाशिवलिंगम्।।८।।

लिंगाष्टकंमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ। शिवलोकमवाप्नोति शिवेनसह मोदते।।

।इति श्री लिंगाष्टकस्तोत्रं सम्पूर्णम्।।

# ॥कालभैरवाष्टकम्॥

कर्मपाश से मुक्ति, अकाल मृत्यु का नाश, दृष्टिदोष का नाश, पाप का नाश करने के लिए अष्ट सिद्धि प्राप्ति के लिये, कीर्ति प्राप्ति हेतु, पुण्य की वृद्धि तथा शोक, मोह, लोभ, क्रोध, ताप के नाश के लिए काल भैरव अष्टक का पाठक करे, निश्चित सिद्धि प्राप्त होगी।

देवराज सेव्यमानपावनांध्रि पङ्कजं व्यालयज्ञसूत्रमिन्दुशेखरं कृपाकरम्।
नारदादियोगिवृन्दवन्दितं दिगम्बरं काशिकापुराधिनाथ काल भैरवंभजे॥१॥
भानुकोटिभास्वरं भवाब्धितारकं परं नीलकण्ठमीप्सितार्थदायकं त्रिलोचनम्।
करालकालमम्बुजाक्षमक्षशूलमक्षंरं काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे॥२॥
शूलटङ्कपाशदण्डपाणिमादिकारणं श्यामकायमादिदेवमक्षरं निरामयम्।
भीम विक्रमं प्रभुं विचित्र ताण्डवप्रियं काशिका पुराधिनाथ कालभैरवं भजे॥३॥
भुक्तिमुक्तिदायकं प्रशस्तचारुविग्रहं भक्तवत्सलं स्थितं समस्तलोकविग्रहम्।
विनिक्वणन्मनोज्ञहेम किंकिणी लसत्कटिं काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे॥४॥

धर्मसेतुपालकंत्व धर्ममार्गनाशकं कर्मपाश मोचकं सुशर्मदायकं विभुम्।
स्वर्णवर्णशेषपाशशोभिताङ्ग मण्डलं काशिकापुराधिनाथ कालभैरवंभजे॥५॥
रत्नपादुकाप्रभाभिरामपादयुग्मकं नित्यमद्वितीयमिष्ट दैवतं निरञ्जनम्।
मृत्युदर्पनाशनं कराल दष्ट्रमोक्षणं काशिकापुराधिनाथकालभैरवंभजे॥६॥
अट्टाहासभिन्नपद्मजाण्डकोश सन्ततिं दृष्टिपातनष्टपापजालमुग्रशासनम्।
अष्टसिद्धिदायकं कपालमालिकंधरं काशिकापुराधि नाथकालभैरवंभजे॥७॥
भूतसंघनायकं विशालकीर्तिदायकं काशिवासलोकपुण्य पापशोधकं विभुम्।
नीतिमार्ग कोविदं पुरातनं जगत्पतिं काशिकापुराधिनाथ कालभैरवंभजे॥८॥
कालभैरवाष्टकं पठन्तिये मनोहरं ज्ञान मुक्ति साधनं विचित्रपुण्यवर्धनम्।
शोकमोहदैन्यलोभकोपतापनाशनं ते प्रयांति कालभैरवांघ्रिसंनिधिध्रुवम्॥९॥

॥इति श्री मच्छकराचार्य विरचितं काल भैरवाष्टकं सम्पूर्णम्॥

# श्री शिव महिम्न स्तोत्रम्

महिम्नः पारं ते परमविदुषो यद्यसदृशी स्तुतिर्ब्रह्मादीनामपि तदवसन्नास्त्वयि गिरः।
अथावाच्यः सर्वः स्वमतिपरिणामावधि गृणन्। ममाप्येष स्तोत्रे हर निरपवादः परिकरः।१।
अतीतः पन्थानं तव च महिमा वाङ्मनसयो रतद्व्यावृत्त्या यं चकितमभिधत्ते श्रुतिरपि।
स कस्य स्तोतव्यः कतिविधगुणः कस्य विषयः पदें त्वर्वाचीने पतति न मनः कस्य न वचः।२।
मधुस्फीता वाचः परमममृतं निर्मितवतस्तव ब्रह्मन् किं वागपि सुरगुरोर्विस्मयपदम्।
मम त्वेतां वाणीं गुणकथनपुण्येन भवतः। पुनामीत्यर्थेऽस्मिन् पुरमथन बुद्धिर्व्यवसिता।३।
तवैश्वर्यं यत्तज्जगदुदयरक्षाप्रलयकृत् त्रयीवस्तुव्यस्तं तिसृषु गुणभिन्नासु तनुषु।
अभव्यानामस्मिन् वरद् रमणीयामरमणीं विहन्तुं व्याक्रोशीं विदधत इहैके जडधियः।४।
किमीहः किं कायः स खलु किमुपायस्त्रिभुवनं किमाधारो धाता सृजति किमुपादान इति च।
अतर्क्यैश्वर्ये त्वय्यनवसरदुःस्थो हतधियः कुतर्कोऽयं कांश्चिन्मुखरयति मोहाय जगतः।५।
अजन्मानो लोकाः, किमवयववन्तोऽपि जगता। मधिष्ठातारं किं भवविधिरनादृत्य भवति।
अनीशो वा कुर्याद् भुवनजनने कः परिकरो। यतो मन्दास्त्वां प्रत्यमरवर संशेरत इमे।६।
त्रयी सांख्यं योगः पशुपतिमतं वैष्णवमिति प्रभिन्ने प्रस्थाने परमिदमदः पथ्यमिति च।
रुचीनां वैचित्र्यादृजुकुटिलनानापथजुषां नृणामेको गम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव।७।

ॐ नमो शिवाय: ॐ नमो शिवाय: ॐ नमो शिवाय: रुद्राष्टाध्यायी

महोक्षः खट्वांगं परशुरजिनं भस्म फणिनः कपालं चेतीयत्तव वरद तन्त्रोपकरणम्।
सुरास्तां तामृद्धिं दधति च भवद्भ्रूप्रणिहितां नहि स्वात्मारामं विषयमृगतृष्णा भ्रमयति।८।
ध्रुवं कश्चित्सर्वं सकलमपरस्त्वध्रुवमिदं परो ध्रौव्याध्रौव्ये जगति गदति व्यस्तविषये।
समस्तेऽप्येतस्मिन् पुरमथन तैर्विस्मित इव स्तुवञ्जिह्रेमि त्वां न खलु ननु धृष्टा मुखरता।९।
तवैश्वर्यं यत्नाद् यदुपरि विरिञ्चो हरिरधः परिच्छेत्तुं यातावनलमनलस्कन्धवपुषः।
ततो भक्तिश्रद्धा भरगुरुगृणद्भ्यां गिरिश यत् स्वयं तस्थे ताभ्यां तव किमनुवृत्तिर्न फलति।१०।
अयत्नादापाद्य त्रिभुवनमवैरव्यतिकरं दशास्यो यद् बाहूनभृत रणकण्डूपरवशान्।
शिरःपद्मश्रेणी रचितचरणाम्भोरुहबलेः स्थिरायास्त्वद्भक्तेस्त्रिपुरहर विस्फूर्जितमिदम्।११।
अमुष्य त्वत्सेवासमधिगतसारं भुजवनं बलात् कैलासेऽपि त्वदधिवसतौ विक्रमयतः
अलभ्या पातालेऽप्यलसचलितांगुष्ठशिरसि प्रतिष्ठा त्वय्यासीद् ध्रुवमुपचितो मुह्यति खलः।१२।
यदृद्धिं सुत्राम्णो वरद परमोच्चैरपि सतीं मधश्चक्रे बाणः परिजनविधेयस्त्रिभुवनः।
न तच्चित्रं तस्मिन् वरिवसितरि त्वच्चरणयोर्नकस्याप्युन्नत्यै भवति शिरसस्त्वय्यवनतिः॥१३॥
अकाण्डब्रह्माण्डक्षयचकित देवासुरकृपा विधेयस्यासीद्यस्त्रिनयन विषं संहृतवतः।
स कल्माषः कण्ठे तव न कुरुते न श्रियमहो विकारोऽपि श्लोघ्यो भुवनभयभंगव्यसनिनः।१४।
असिद्धार्था नैव क्वचिदपि सदेवासुरनरे निवर्तन्ते नित्यं जगति जयिनो यस्य विशिखाः।
स पश्यन्नीश त्वामितरसुरसाधारणमभूत् स्मरः स्मर्तव्यात्मा नहि वशिषु पथ्यः परिभवः।१५।
मही पादाघाताद् व्रजति सहसा संशयपदं पदं विष्णोर्भ्राम्यदभुजपरिघरुग्णग्रहणम्।

मुहुर्द्यौर्दौस्थ्यं यात्यनिभृतजटाताडिततटा जगद्रक्षायै त्वं नटसि ननु वामैव विभुता।१६।
वियद्व्यापी तारागणगुणितफेनोद्गमरुचिः प्रवाहो वारां यः पृषतलघुदृष्टः शिरसि ते।
जगद्-द्वीपाकारं जलधिवलयं तेन कृतमित्यनेनैवोन्नेयं धृतमहिम दिव्यं तव वपुः।१७।
रथः क्षोणी यन्ता शतधृतिरगेन्द्रो धनुरथो रथांगे चन्द्राकौं रथचरणपाणिः शर इति।
दिधक्षोस्ते कोऽयं त्रिपुरतृणमाडम्बरविधिर्विधेयैः क्रीडन्त्यो न खलु परतन्त्राः प्रभुधियः।१८।
हरिस्ते साहस्त्रं कमलबलिमाधाय पदयोर्यदेकोने तस्मिन् निजमुदहरन्नेत्रकमलम्।
गतो भक्त्युद्रेकः परिणतिमसौ चक्रवपुषा त्रयाणां रक्षायै त्रिपुरहर जागर्ति जगताम्।१९।
क्रतौ सुप्ते जाग्रत्वमसि फलयोगे कृतुमतां क्व कर्म प्रध्वस्तं फलति पुरुषाराधनमृते।
अतस्त्वां सम्प्रेक्ष्य क्रतुषु फलदानप्रतिभुवं श्रुतौ श्रद्धां बद्ध्वा कृतपरिकरः कर्मसु जनः।२०।
क्रियादक्षो दक्षः क्रतुपतिरधीशस्तनुभृतामृषीणामार्त्विज्यं शरणद सदस्याः सुरगणाः।
क्रतुभ्रेषस्त्वत्तः क्रतुफलविधानव्यसनिनो ध्रुवं कर्तुः श्रद्धाविधुरमभिचाराय हि मखाः।२१।
प्रजानाथं नाथ! प्रसभमभिकं स्वां दुहितरं गतं रोहिद्भूतां रिरमयिषुमृष्यस्य वपुषा।
धनुष्पाणेर्यातं दिवमपि सपत्राकृतममुं त्रसन्तं तेऽद्यापि त्यजति न मृगव्याधरभसः २२।।
स्वलावण्याशंसाधृतधनुषमन्हाय तृणवत् पुरः प्लुष्टं दृष्टवा पुरमथन पुष्पायुधमपि।
यदि स्त्रैणं देवी यमनिरतदेहार्धघटना दवैति त्वामद्धा बत वरद मुग्धा युवतयः।२३।
श्मशानेष्वाक्रीडा स्मरहर! पिशाचाः सहचराश्चिताभस्मालेपः स्त्रगपि नृकरोटीपरिकरः
अमगंल्यं शीलं तव भवतु नामैवमखिलं तथाऽपि स्मर्तृणां वरद परमं मंगलमसि।२४।

मनः प्रत्यक्चित्ते सविधमवधायात्तमरुतः प्रहृष्यद्रोमाणः प्रमदसलिलोत्संगतिदृशः।
यदालोक्याह्लादं ह्रद इव निमज्ज्यामृतमये दधत्यन्तस्तत्त्वं किमपि यमिनस्तत्किल भवान्।२५।
त्वमर्कस्त्वं सोमस्त्वमसि पवनस्त्वं हुतवहस्त्वमापस्त्वं व्योम त्वमु धरणिरात्मा त्वमिति च।
परिच्छन्नामेवं त्वयि परिणता बिभ्रतु गिरं न विद्मस्तत्तत्वं वयमिह तु यत्वं न भवसि।२६।
त्रयीं तिस्त्रो वृत्तीस्त्रिभुवनमथो त्रीनपि सुरानकराद्यैर्वर्णैस्त्रिभिरभिदधत् तीर्णविकृतिः।
तुरीयं ते धाम ध्वनिभिरवरुन्धानमणुभिः समस्तं व्यस्तं त्वां शरणद! गृणात्योमिति पदम्।२७।
भवः शर्वो रुद्रः पशुपतिरथोग्रः सहमहांस्तथा भीमेशानाविति यदभिधानाष्टकमिदम्।
अमुष्मिन् प्रत्येकं प्रविचरति देव श्रुतिरपि प्रियायास्मै धाम्ने प्रविहित नमस्योऽस्मि भवते।२८।
नमो नेदिष्ठाय प्रियदव दविष्ठाय च नमो। नमः क्षोदिष्ठाय स्मरहर महिष्ठाय च नमः
नमो वर्षिष्ठाय त्रिनयन यविष्ठाय च नमो नमः सर्वस्मै ते तदिदमिति शर्वाय च नमः।२९।
बहुलरजसे विश्वोत्पत्तौ भवाय नमो नमः प्रबलतमसे तत्संहारे हराय नमो नमः
जनसुखकृते सत्त्वोद्रिक्तौ मृडाय नमो नमः प्रम ऽसि पदे निस्त्रैगुण्ये शिवाय नमो नमः।३०।
कृशपरिणति चेतः क्लेशवश्यं क्व चेदं क्व च तव गुणसीमोल्लंघिनी शश्वदृद्धिः।
इति चकितममन्दीकृत्य मां भक्तिराधाद् वरद चरणयोस्ते वाक्यपुष्पोपहारम्।३१।
असितगिरिसमं स्यात् कज्जलं सिन्धुपात्रे सुरतरुवरशाखा लेखनी पत्रमुर्वी।
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं तदपि तव गुणानामीश पारं! न याति।३२।
असुरसुरमुनीन्द्रैरर्चितस्येन्दुमौलेर्ग्रथितगुणमहिम्नोनिर्गुणस्येश्व ।

सकलगुणवरिष्ठः पुष्पदन्ताभिधानो रुचिरमलघुवृत्तैः स्तोत्रमेतच्चकार।३३।
अहरहरनवद्यं धूर्जटेः स्तोत्रमेतत् पठति परमभक्त्या शुद्धचित्तः पुमान् यः।
स भवति शिवलोके रुद्रतुल्यस्तथात्र प्रचुरतरधनायुः पुत्रवान् कीर्तिमांश्चा।३४।
महेशान्नापरो देवो महिम्नो नापराः स्तुतिः। अघोरान्नापरो मन्त्रो नास्ति तत्त्वं गुरोः परम्।३५।
दीक्षा दानं तपस्तीर्थं ज्ञानं यागादिकाः क्रियाः। महिम्नस्तवपाठस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम्।३६।
कुसुमदशननामा सर्वगन्धर्वराजः शिशुधरवरमौलेदेवदेवस्य दासः।
स खलु निजमहिम्नो भ्रष्ट एवास्य रोषात् स्तवनमिदमकार्षीद् दिव्यदिव्यं महिम्नः।३७।
सुरवरमुनिपूज्यं स्वर्गमोक्षैकहेतुं पठति यदि मनुष्यः प्राञ्जलिर्नान्यचेताः।
व्रजति शिवसमीपं किन्नरैः स्तूयमानः स्तवनमिदममोघं पुष्पदन्तप्रणीतम्।३८।
आसमाप्तमिदं स्तोत्रं पुण्यंगन्धर्वभाषितम् अनौपम्यं मनोहारि शिवमीश्वरवर्णनम्।३९।
इत्येषा वांगमयी पूजा श्रीमच्छकरपादयोः। अर्पिता तेन देवेशः प्रीयतां च सदाशिवः।४०।
तव तत्त्वं न जानामि कीदृशोऽसि महेश्वर। यादृशोऽसि महादेव तादृशाय नमो नमः।४१।
एककालं द्विकालं वा त्रिकालं यः पठेन्नरः। सर्वपापविनिर्मुक्तः शिवलोके महीयते।४२।
श्रीपुष्पदन्तमुखपंकजनिर्गतेन स्तोत्रेण किल्विषहरेण हरप्रियेण।
कण्ठस्थितेन पठितेन समाहितेन, सुप्रीणितो भवति भूतपतिर्महेशः।४३।

॥ इति श्रीशिव महिम्नः स्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

श्रूयतां भो ऋषिश्रेष्ठा येन तुष्टो महेश्वरः। तदहं कथयाम्यद्य शैवं नामसहस्त्रकम्॥१॥
शिवो हरो मृडो रुद्रः पुष्करः पुष्पलोचनः। अर्थिगम्यः सदाचारः शर्वः शम्भुर्महेश्वरः॥२॥
चन्द्रापीडश्चन्द्रमौलिर्विश्वं विश्वम्भरेश्वरः। वेदान्तसारसंदोहः कपाली नीललोहितः॥३॥
ध्यानाधारोऽपरिच्छेद्यो गौरीभर्ता गणेश्वरः। अष्टमूर्तिर्विश्वमूर्तिस्त्रिवर्गस्वर्गसाधनः॥४॥
ज्ञानगम्यो दृढप्रज्ञो देवदेवस्त्रिलोचनः। वामदेवो महादेवः पटुः परिवृढो दृढः॥५॥
विश्वरूपो विरूपाक्षो वागीशः शुचिसत्तमः। सर्वप्रमाणसंवादी वृषांको वृषवाहनः॥६॥
ईशः पिनाकी खट्वांगी चित्रवेषश्चिरंतनः। तमोहरो महायोगी गोप्ता ब्रह्मा च धूर्जटिः॥७॥
कालकालः कृत्तिवासाः सुभगः प्रणवात्मकः। उन्नध्रः पुरुषो जुष्यो दुर्वासाः पुरशासनः॥८॥
दिव्यायुधः स्कन्दगुरुः परमेष्ठी परात्परः। अनादिमध्यनिधनो गिरीशो गिरिजाधवः॥९॥
कुबेरबन्धुः श्रीकण्ठो लोकवर्णोत्तमो मृदुः। समाधिवेद्यः कोदण्डी नीलकण्ठः परश्वधी॥१०॥
विशालाक्षो मृगव्याधः सुरेशः सूर्यतापनः। धर्मधाम क्षमाक्षेत्रं भगवान् भगनेत्रभित्॥११॥
उग्रः पशुपतिस्ताक्ष्र्यः प्रियभक्तः परंतपः। दाता दयाकरो दक्षः कपर्दी कामशासनः॥१२॥
श्मशाननिलयः सूक्ष्मः श्मशानस्थो महेश्वरः। लोककर्ता मृगपतिर्महाकर्ता महौषधि॥१३॥
उत्तरो गोपतिर्गोप्ता ज्ञानगम्यः पुरातनः। नीतिः सुनीतिः शुद्धात्मा सोमः सोमरतः सुखी॥१४॥

सोमपोऽमृतपः सौम्यो महातेजा महाद्युतिः। तेजोमयोऽमृतमयोऽन्नमयश्च सुधापतिः॥१५॥
अजातशत्रुरालोकः सम्भाव्यो हव्यवाहनः। लोककरो वेदकरः सूत्रकारः सनातनः॥१६॥
महर्षिकपिलाचार्यो विश्वदीप्तिस्त्रिलोचनः। पिनाकपाणिर्भूदेवः स्वस्तिदः स्वस्तिकृत्सुधीः॥१७॥
धातृधामा धामकरः सर्वगः सर्वगोचरः। ब्रह्मसृग्विश्वसृक्सर्गः कर्णिकारप्रियः कविः॥१८॥
शाखो विशाखो गोशाखः शिवो भिषगनुत्तमः। गंगाप्लवोदको भव्यः पुष्कलः स्थपतिः स्थिरः॥१९॥
विजितात्मा विधेयात्मा भूतवाहनसारथिः। सगणो गणकायश्च सुकीर्तिश्छिन्नसंशयः॥२०॥
कामदेवः कामपालो भस्मोद्धूलितविग्रहः। भस्मप्रियो भस्मशायी कामी कान्तः कृतागमः॥२१॥
समावर्तोऽनिवृत्तात्मा धर्मपुञ्जः सदाशिवः। अकल्मषश्चतुर्बाहुर्दरावासो दुरासदः॥२२॥
दुर्लभो दुर्गमो दुर्गः सर्वायुधविशारदः। अध्यात्मयोगनिलयः सुतन्तुस्तन्तुवर्धनः॥२३॥
शुभांगों लोकसारंगो जगदीशो जनार्दनः। भस्मशुद्धिकरो मेरुरोजस्वी शुद्धविग्रहः॥२४॥
असाध्यः साधुसाध्यश्च भृत्यमर्कटरूपधृक्। हिरण्यरेताः पौराणो रिपुजीवहरो बली॥२५॥
महाह्रदो महागर्तः सिद्धवृन्दारवन्दितः। व्याघ्रचर्माम्बरो व्याली महाभूतो महानिधिः॥२६॥
अमृताशोऽमृतवपुः पाञ्चजन्यः प्रभञ्जनः। पञ्चविंशतितत्त्वस्थः पारिजातः परावरः॥२७॥
सुलभः सुव्रतः शूरो ब्रह्मवेदनिधिर्निधिः। वर्णाश्रमगुरुर्वर्णी शत्रुजिच्छत्रुतापनः॥२८॥
आश्रमः क्षपणः क्षामो ज्ञानवानचलेश्वरः। प्रमाणभूतो दुर्ज्ञेयः सुपर्णो वायुवाहनः॥२९॥
धनुर्धरो धनुर्वेदो गुणराशिर्गुणाकरः सत्यः सत्यपरोऽदीनो धर्मांगो धर्मसाधनः॥३०॥





अनन्तदृष्टिरानन्दो दण्डो दमयिता दमः। अभिवाद्यो महामायो विश्वकर्मविशारदः॥३१॥

धनुर्धरो धनुर्वेदो गुणराशिर्गुणाकरः।
अनन्तदृष्टिरानन्दो दण्डो दमयिता दमः। अभिवाद्यो महामायो विश्वकर्मविशारदः।।३१।। 
वीतरागो विनीतात्मा तपस्वी भूतभावनः। उन्मत्तवेषः प्रच्छन्नो जितकामोअजितप्रियः।।३२।।
कल्याणप्रकृतिः कल्पः सर्वलोक प्रजापतिः। तरस्वी तारको धीमान् प्रधानः प्रभुरव्ययः।।३३।।
लोकपालोऽन्तर्हितात्मा कल्पादिः कमलेक्षणः। वेदशास्त्रार्थतत्वज्ञोऽनियमो नियताश्रयः।।३४।।
चन्द्रः सूर्यः शनिः केतुर्वरांगो विद्रुमच्छविः। भक्तिवश्यः परब्रह्म मृगबाणार्पणोऽनघः।।३५।।
अद्रिरद्र्यालयः कान्तः परमात्मा जगद्गुरुः। सर्वकर्मालयस्तुष्टो मंगल्यो मंगलावृतः।।३६।।
महातपा दीर्घतपाः स्थविष्ठः स्थविरो ध्रुवः। अहःसंवत्सरो व्याप्तिः प्रमाणं परमं तपः।।३७।।
संवत्सरकरो मन्त्रप्रत्ययः सर्वदर्शनः। अजः सर्वेश्वरः सिद्धो महारेता महाबलः।।३८।।
योगी योग्यो महातेजाः सिद्धिः सर्वादिरग्रहः। वसुर्वसुमनाः सत्यः सर्वपापहरो हरः।।३९।।
सुकीर्तिशोभनः श्रीमान् वेदांगो वेदविन्मुनिः। भ्राजिष्णुर्भोजनं भोक्ता लोकनाथो दुराधरः।।४०।।
अमृतः शाश्वतः शान्तो बाणहस्तः प्रतापवान्। कमण्डलुधरो धन्वी अवाङ्मनसगोचरः।।४१।।
अतीन्द्रियो महामायः सर्वावासश्चतुष्पथः। कालयोगी महानादो महोत्साहो महाबलः।।४२।।
महाबुद्धिर्महावीर्यो भूतचारी पुरंदरः। निशाचरः प्रेतचारी महाशक्तिर्महाद्युतिः।।४३।।
अनिर्देश्यवपुः श्रीमान् सर्वाचार्यमनोगतिः। बहुश्रुतोऽमहामायो नियतात्मा ध्रुवोऽध्रुवः।।४४।।
ओजस्तेजोद्युतिधरो जनकः सर्वशासनः। नृत्यप्रियो नित्यनृत्यः प्रकाशात्मा प्रकाशकः।।४५।।
स्पष्टाक्षरो बुधो मन्त्रः समानः सारसम्प्लवः। युगादिकृद्युगावर्तो गम्भीरो वृषवाहनः।।४६।।

इष्टोऽविशिष्टः शिष्टेष्टः सुलभः सारशोधनः। तीर्थरूपस्तीर्थनामा तीर्थदृश्यस्तु तीर्थदः॥४७॥
अपांनिधिरधिष्ठानं दुर्जयो जयकालवित्। प्रतिष्ठितः प्रमाणज्ञो हिरण्यकवचो हरिः॥४८॥
विमोचनः सुरगणो विद्येशो विन्दुसंश्रयः। बालरूपोऽबलोन्मत्तोऽविकर्ता गहनो गुहः॥४९॥
करणं कारणं कर्ता सर्वबन्धविमोचनः। व्यवसायो व्यवस्थानः स्थानदो जगदादिजः॥५०॥
गुरुदो ललितोऽभेदो भावात्माऽऽत्मनि संस्थितः। वीरेश्वरो वीरभद्रो वीरासनविधिर्विराट्॥५१॥
वीरचूडामणिर्वेत्ता चिदानन्दो नदीधरः। आज्ञाधारस्त्रिशूली च शिपिविष्टःशिवालयः॥५२॥
वालखिल्यो महाचापस्तिग्मांशुर्बधिरः खगः। अभिरामः सुशरणः सुब्रह्मण्यः सुधापतिः॥५३॥
मघुवान्कौशिको गोमान्विरामः सर्वसाधनः। ललाटाक्षो विश्वदेहः सारः संसारचक्रभृत॥५४॥
अमोघदण्डो मध्यस्थो हिरण्यो ब्रह्मवर्चसी। परमार्थः परो मायी शम्बरो व्याघ्रलोचनः॥५५॥
रुचिर्विरञ्चिः स्वर्बन्धुर्वाचस्पतिरहर्पतिः। रविर्विरोचनः स्कन्दः शास्ता वैवस्वतो यमः॥५६॥
युक्तिरुन्नतकीर्तिश्च सानुरागः परंजयः। कैलासाधिपतिः कान्तः सविता रविलोचनः॥५७॥
विद्वत्तमो वीतभयो विश्वभर्तानिवारितः। नित्यो नियतकल्याणः पुण्यश्रवणकीर्तनः॥५८॥
दूरश्रवा विश्वसहो ध्येयो दुःस्वप्ननाशनः। उत्तारणो दुष्कृतिहा विज्ञेयो दुस्सहोऽभवः॥५९॥
अनादिर्भूर्भुवो लक्ष्मीः किरीटी त्रिदशाधिपः। विश्वगोप्ता विश्वकर्त्ता सुवीरो रुचिराङ्गदः॥६०॥
जननो जनजन्मादिः प्रीतिमान्नीतिमान्धवः। वसिष्ठः कश्यपो भानुर्भीमो भीमपराक्रमः॥६१॥
प्रणवः सत्पथाचारो महाकोशो महाधनः। जन्माधिपो महादेवः सकलागमपारगः॥६२॥

ॐ नमो शिवाय: ॐ नमो शिवाय: ॐ नमो शिवाय: रुद्राष्टाध्यायी

तत्त्वं तत्त्वविदेकात्मा विभुर्विश्वविभूषणः। ऋषिर्ब्राह्मण ऐश्वर्यजन्ममृत्युजरातिगः॥६३॥
पाञ्चयज्ञसमुत्पत्तिर्विश्वेशो विमलोदयः। आत्मयोनिरनाद्यन्तो वत्सलो भक्तलोकधृक॥६४॥
गायत्रीवल्लभः प्रांशुर्विश्वावासः प्रभाकरः। शिशुर्गिरिरतः सम्राट् सुषेणः सुरशत्रुहा॥६५॥
अमोघोऽरिष्टनेमिश्च कुमुदो विगतज्वरः। स्वयंज्योतिस्तनुज्योतिरात्मज्योतिरचञ्चलः॥६६॥
पिंगलः कपिलश्मश्रुर्भालनेत्रस्त्रयीतनुः। ज्ञानस्कन्दो महानीतिर्विश्वोत्पत्तिरुपप्लवः॥६७॥
भगो विवस्वानादित्यो योगपारो दिवस्पतिः। कल्याणगुणनामा च पापहा पुण्यदर्शनः॥६८॥
उदारकीर्तिरुद्योगी सद्योगी सदसन्मयः। नक्षत्रमाली नाकेशः स्वाधिष्ठानपदाश्रयः॥६९॥
पवित्रः पापहारी च मणिपूरो नभोगतिः। हृत्पुण्डरीकमासीनः शक्रः शान्तो वृषाकपिः॥७०॥
ऊष्णो गृहपतिः कृष्णः समर्थोऽनर्थनाशनः। अधर्मशत्रुरज्ञेयः पुरुहूतः पुरुश्रुतः॥७१॥
ब्रह्मगर्भो बृहद्गर्भो धर्मधेनुर्धनागमः। जगद्धितैषी सुगतः कुमारः कुशलागमः॥७२॥
हिरण्यवर्णो ज्योतिष्मान्नानाभूतरतो ध्वनिः। अरागो नयनाध्यक्षो विश्वामित्रो धनेश्वरः॥७३॥
ब्रह्मज्योतिर्वसुधामा महाज्योतिरनुत्तमः। मातामहो मातरिश्वा नभस्वान्नागहारधृक्॥७४॥
पुलस्त्यः पुलहोऽगस्त्यो जातूकर्ण्यः पराशरः। निरावरणनिर्वारो वैरञ्च्यो विष्टरश्रवाः॥७५॥
आत्मभूरनिरुद्धोऽत्रिर्ज्ञानमूर्तिर्महायशाः। लोकवीराग्रणीवीरश्चण्डः सत्यपराक्रमः॥७६॥
व्यालाकल्पो महाकल्पः कल्पवृक्षः कलाधरः। अलंकरिष्णुरचलो रोचिष्णुर्विक्रमोन्नतः॥७७॥
आयुः शब्दपतिर्वेगी प्लवनः शिखिसारथिः। असंसृष्टोऽतिथिः शक्रप्रमाथी पादपासनः॥७८॥

वसुश्रवा हव्यवाहः प्रतप्तो विश्वभोजनः। जप्यो जरादिशमनो लोहितात्मा तनूनपात्॥७९॥
बृहदश्वो नभोयोनिः सुप्रतीकस्तमिस्त्रहा। निदाघस्तपनो मेघः स्वक्षः परपुरंजयः॥८०॥
सुखानिलः सुनिष्पन्नः सुरभिः शिशिरात्मकः। वसन्तो माधवो ग्रीष्मो नभस्यो बीजवाहनः॥८१॥
अंगिरा गुरुरात्रेयो विमलो विश्ववाहनः। पावनः सुमतिर्विद्वांस्त्रैविद्यो वरवाहनः॥८२॥
मनोबुद्धिरहंकारः क्षेत्रज्ञः क्षेत्रपालकः। जमदग्निर्बलनिधिर्विगालो विश्वगालवः॥८३॥
अघोरोऽनुत्तरो यज्ञः श्रेष्ठो निःश्रेयसप्रदः। शैलो गगनकुन्दाभो दानवारिररिंदमः॥८४॥
रजनीजनकश्चारुर्निःशल्यो लोकशल्यधृक्। चतुर्वेदश्चतुर्भावश्चतुरश्चतुरप्रियः ॥८५॥
आम्नायोऽथ समाम्नायस्तीर्थदेवशिवालयः। बहुरूपो महारूपः सर्वरूपश्चराचरः॥८६॥
न्यायनिर्मायको न्यायी न्यायगम्यो निरंजनः। सहस्त्रमूर्द्धा देवेन्द्र सर्वशस्त्रप्रभंजनः॥८७॥
मुण्डो विरूपो विक्रान्तो दण्डी दान्तो गुणोत्तमः। पिंगलाक्षो जनाध्यक्षो नीलग्रीवो निरामयः॥८८॥
सहस्त्रबाहुः सर्वेशः शरण्यः सर्वलोकधृक्। पद्मासनः परं ज्योतिः पारम्पर्य्यफलप्रदः॥८९॥
पद्मगर्भो महागर्भो विश्वगर्भो विचक्षणः। परावरज्ञो वरदो वरेण्यश्च महास्वनः॥९०॥
देवासुरगुरुर्देवो देवासुरनमस्कृतः। देवासुरमहामित्रो देवासुरमहेश्वरः॥९१॥
देवासुरेश्वरो दिव्यो देवासुरमहाश्रयः। देवदेवमयोऽचिन्त्यो देवदेवात्मसम्भवः॥९२॥
सद्योनिरसुरव्याघ्रो देवसिंहो दिवाकरः। विबुधाग्रचरश्रेष्ठः सर्वदेवोत्तमोत्तमः॥९३॥
शिवज्ञानरतः श्रीमाञ्छिखिश्रीपर्वतप्रियः। वज्रहस्तः सिद्धखड्गो नरसिंहनिपातनः॥९४॥

ब्रह्मचारी लोकचारी धर्मचारी धनाधिपः। नन्दी नन्दीश्वरोऽनन्तो नग्नव्रतधरः शुचिः॥९५॥
लिंगाध्यक्षः सुराध्यक्षो योगाध्यक्षो युगावहः। स्वधर्मा स्वर्गतः स्वर्गस्वरः स्वरमयस्वनः॥९६॥
बाणाध्यक्षो बीजकर्ता धर्मकृद्धर्मसम्भवः। दम्भोऽलोभोऽर्थविच्छम्भुः सर्वभूतमहेश्वरः॥९७॥
श्मशाननिलयस्त्र्यक्षः सेतुरप्रतिमाकृतिः। लोकोत्तरस्फुटालोकस्त्र्यम्बको नागभूषणः॥९८॥
अन्धकारिर्मखद्वेषी विष्णुकन्धरपातनः। हीनदोषोऽक्षयगुणो दक्षारिः पूषदन्तभित्॥९९॥
धूर्जटिः खण्डपरशुः सकलो निष्कलोऽनघः। अकालः सकलाधारः पाण्डुराभो मृडो नटः॥१००॥
पूर्णः पूरयिता पुण्यः सुकुमारः सुलोचनः। सामगेयप्रियोऽक्रूरः पुण्यकीर्तिरनामयः॥१०१॥
मनोजवस्तीर्थकरो जटिलो जीवितेश्वरः। जीवितान्तकरो नित्यो वसुरेता वसुप्रदः॥१०२॥
सद्गतिः सत्कृतिः सिद्धिः सज्जातिः खलकण्टकः। कलाधरो महाकालभूतः सत्यपरायणः॥१०३॥
लोकलावण्यकर्ता च लोकोत्तरसुखालयः। चन्द्रसंजीवनः शास्ता लोकगूढ़ो महाधिपः॥१०४॥
लोकबन्धुर्लोकनाथः कृतज्ञः कीर्तिभूषणः। अनपायोऽक्षरः कान्तः सर्वशस्त्रभृतां वरः॥१०५॥
तेजोमयो द्युतिधरो लोकानामग्रणीरणुः। शुचिस्मितः प्रसन्नात्मा दुर्जेयो दुरतिक्रमः॥१०६॥
ज्योतिर्मयो जगन्नाथो निराकारो जलेश्वरः। तुम्बवीणो महाकोपो विशोकः शोकनाशनः॥१०७॥
त्रिलोकपस्त्रिलोकेशः सर्वशुद्धिरधोक्षजः। अव्यक्तलक्षणो देवो व्यक्ताव्यक्तो विशाम्पतिः॥१०८॥
वरशीलो वरगुणः सारो मानधनो मयः। ब्रह्मा विष्णुः प्रजापालो हंसो हंसगतिर्वयः॥१०९॥
वेधा विधाता धाता च स्त्रष्टा हर्ता चतुर्मुखः। कैलासशिखरावासी सर्वावासी सदागतिः॥११०॥

हिरयण्यगर्भो द्रुहिणो भूतपालोऽथ भूपतिः। सद्योगी योगविद्योगी वरदो ब्राह्मणप्रियः॥११११॥
देवप्रियो देवनाथो देवज्ञो देवचिन्तकः। विषमाक्षो विशालाक्षो वृषदो वृषवर्धनः॥११२॥
निर्ममो निरहंकारो निर्मोही निरुपद्रवः। दर्पहा दर्पदो दृप्तः सर्वर्तुपरिवर्तकः॥११३॥
सहस्त्रजित् सहस्रार्चिः स्निग्धप्रकृतिदक्षिणः। भूतभव्यभवन्नाथः प्रभवो भूतिनाशनः॥११४॥
अर्थोऽनर्थो महाकोशः परकार्यैकपण्डितः। निष्कण्टकः कृतानन्दो निर्व्याजो व्याजमर्दनः॥११५॥
सत्त्ववान्सात्त्विकः सत्यकीर्तिः स्नेहकृतागमः। अकम्पितो गुणग्राही नैकात्मा नैककर्मकृत्॥११६॥
सुप्रीतः सुमुखः सूक्ष्मः सुकरो दक्षिणानिलः। नन्दिस्कन्धधरो धुर्यः प्रकटः प्रीतिवर्धनः॥११७॥
अपराजितः सर्वसत्त्वो गोविन्दः सत्त्ववाहनः। अधृतः स्वधृतः सिद्धः पूतमूर्तिर्यशोधनः॥११८॥
वाराहश्रृंगधृक्छृंगी बलवानेकनायकः। श्रुतिप्रकाशः श्रुतिमानेकबन्धुरनेककृत॥११९॥
श्रीवत्सलशिवारम्भः शान्तभद्रः समो यशः। भूशयो भूषणो भूतिर्भूतकृद् भूतभावनः॥१२०॥
अकम्पो भक्तिकायस्तु कालहा नीललोहितः। सत्यव्रतमहात्यागी नित्यशान्तिपरायणः॥१२१॥
परार्थवृत्तिर्वरदो विरक्तस्तु विशारदः। शुभवः शुभकर्ता च शुभनामा शुभः स्वयम्॥१२२॥
अनर्थितोऽगुणः साक्षी ह्यकर्ता कनकप्रभः। स्वभावभद्रो मध्यस्थः शत्रुघ्नो विघ्ननाशनः॥१२३॥
शिखण्डी कवची शूली जटी मुण्डी च कुण्डली। अमृत्युः सर्वदृक्सिंहस्तेजोराशिर्महामणिः॥१२४॥
असंख्येयोऽप्रमेयात्मा वीर्यवान् वीर्यकोविदः। वेद्यश्चैव वियोगात्मा परावरमुनीश्वरः॥१२५॥
अनुत्तमो दुराधर्षो मधुरप्रियदर्शनः। सुरेशः शरणं सर्वः शब्दब्रह्म सतां गतिः॥१२६॥

कालपक्षः कालकालः कंकणीकृतवासुकिः। महेष्वासो महीभर्ता निष्कलंको विशृंखलः॥१२७॥
द्युमणिस्तरणिर्धन्यः सिद्धिदः सिद्धिसाधनः। विश्वतः संवृतः स्तुत्यो व्यूढोरस्को महाभुजः॥१२८॥
सर्वयोनिर्निरातंको नरनारायणप्रियः। निर्लेपो निष्प्रपञ्चात्मा निर्व्यंगो व्यंगनाशनः॥१२९॥
स्तव्यः स्तवप्रियः स्तोता व्यासमूर्तिर्निरंकुशः। निरवद्यमयोपायो विद्याराशी रसप्रियः॥१३०॥
प्रशान्तबुद्धिरक्षुण्णः संग्रही नित्यसुन्दरः। वैयाघ्रधुर्यो धात्रीशः शाकल्यः शर्वरीपतिः॥१३१॥
परमार्थगुरुर्दतः सूरिराश्रितवत्सलः। सोमो रसज्ञो रसदः सर्वसत्त्वावलम्बनः॥१३२॥

॥इति श्री शिव सहस्त्रनाम समाप्तम्॥

## ॥शिव ताण्डव स्तोत्रम्॥

भगवान शिव की पूजा के समय इस रावण कृत शिव ताण्डव स्तोत्र का पाठ करने से लक्ष्मी की प्राप्ति तथा भगवान शंकर भयरहित कर साधक को आयु प्रदान करता है। इसलिये साधक शिव ताण्डव स्तोत्र का पाठ करे जिससे जीवन भयमुक्त होकर जीवन यापन कर सके।

जटाटवीगलज्जलप्रवाहपावितस्थले। गलेऽवलम्ब्य लम्बितां भुजङ्गतुङ्गमालिकाम्।
डमड्डमड्डमड्डमन्निनादवड्डमर्वयं। चकार चण्डताण्डवं तनोतु नः शिवः शिवम्।१।
जटाकटाहसम्भ्रमभ्रमन्निलिम्पनिर्झरीविलोलवीचिवल्लरी विराजमानमूर्धनि।
धगद्धगद्धगज्ज्वलललाटपट्टपावके। किशोरचन्द्रशेखरे रतिः प्रतिक्षणं मम।२।

धराधरेन्द्रनन्दिनीविलासबन्धुबन्धुरस्फुरद्दिगन्तसन्ततिप्रमोदमानमानसे ।
कृपाकटाक्षधोरणीनिरुद्धदुर्धरापदि। क्वचिद्दिगम्बरे मनो विनोदमेतु वस्तुनि।३।
जटाभुजंगपिंगलस्फुरत्फणामणिप्रभाकदम्बकुँकमद्रवप्रलिप्तदिग्वधूमुखे ।
मदान्धसिन्धुरस्फुरत्वगुत्तरीयमेदुरे मनोविनोदमद्भुतं विभर्तुभूतभर्तरि।४।
ललाटचत्वरेज्वलद्धनञ्जयस्फुलिंगया-निपीतपञ्चसायकं नमन्निलिम्पनायकम्।
सुधामयूखलेखया विराजमानशेखरं महाकपालिसम्पदे सरिज्जटालमस्तु नः।५।
सहस्त्रलोचनप्रभृत्यशेषलेखशेखरप्रसूनधूलिधोरणीविधूसराङ्घ्रिपीठभूः।
भुजंगराजमालया निबद्धजाटजूटकः श्रियै चिराय जायतां चकोर बन्धुशेखरः।६।
करालभालपट्टिकाधगद्धगद्धगज्जवलद्धनञ्जयाहुतीकृतप्रचण्डपञ्चसायके ।
धराधरेन्द्रनन्दिनीकुचाग्रचित्रपत्रकप्रकल्पनैकशिल्पिनि त्रिलोचने रतिर्मम।७।
नवीनमेघमण्डलीनिरुद्धदुर्धरस्फुर त्कुहूनिशीथिनीतमः प्रबन्धवन्धुकन्धरः ।
निलिम्पनिर्झरीधरस्तनोतु कृत्ति सुन्दरः। कलानिधानबन्धुरः श्रियं जगद्धुरन्धरः।८।
प्रफुल्लनीलपंकजप्रपंचकालिमप्रभा वलम्बिकण्ठकन्दलीरुचिप्रबद्धकन्धरम्।
स्मरच्छिदं पुरच्छिदं भवच्छिदं मखच्छिदं गजच्छिदान्धकच्छिदं तमन्तकच्छिदं भजे।९।
अखर्वसर्वमंगलाकलाकदम्बमंजरी रसप्रवाहमाधुरीविजृम्भणे मधुव्रतम्।
स्मरान्तकं पुरान्तकं भवान्तकं मखान्तकं गजान्तकान्धकान्तकं तमन्तकान्तकं भजे।१०।

जयत्वदभ्रविभ्रमद्‌भुजंग मस्फुर द्धग द्धग द्विनिर्गम त्करालभालहव्यवाट।
धिमिद्धिमिद्धिमदध्वनन्मृदंगतुंगमंगल-ध्वनिक्रमप्रवर्तितः प्रचण्डताण्डवः शिवः।११।
दृषद्विचित्रतल्पयोर्भुजंगमौक्तिकस्त्रजो गरिष्ठरत्नलोष्ठयोः सुहृद्विपक्षपक्षयोः।
तृणारविन्दचक्षुषोः प्रजामहीमहेन्द्रयोः समप्रवृत्तिकः कथा सदाशिवं भजाम्यहम्।१२।
कदा निलिम्पनिर्झरीनिकुंजकोटरे वसन् विमुक्तदुर्मतिः सदा शिरः स्थमंजलि वहन।
विलोललोललोचनो ललामभाललग्नकः शिवेति मंत्रमुच्चरन सदा सुखी भवाम्यहम्। १३।
निलिम्पनाथनागरीकदम्बमौलमल्लिका निगुम्फनिर्झरक्षरन्म धूष्णिकामनोहरः।
तनोतु नो मनोमुदं विनोदिनींमहर्निशं परिश्रय परं पदं तदंगजत्विषां चयः।१४।
प्रचण्डवाडवानलप्रभाशुभप्रचारणी महाष्टसिद्धिकामिनीजनावहूतजल्पना।
विमुक्तवामलोचनो विवाहकालिकध्वनिः शिवेति मन्त्रभूषणो जगज्जयाय जायताम्।१५।
इमं हि नित्यमेवमुक्तमुत्तमोत्तम स्तवं पठन्स्मरन्ब्रवन्नरो विशुद्धिमेति सन्ततिम्।
हरे गुरौ स भक्तिमाशु याति नान्यथा गति विमोहनं हि देहिना तु शंकरस्य चिन्तनम्।१६।
पूजावसानसमये दशवक्त्रगीतं, यः शम्भूपूजनपरं पठति प्रदोषे।
तस्य स्थिरां रथगजेन्द्रतुरंगयुक्तां लक्ष्मीं सदैव सुमुखीं प्रददाति शम्भुः।१७॥

।इति श्रीशिव ताण्डव स्तोत्रम् समाप्तम्॥

# ।।शिवनीराजनार्त्तिः।।

ॐ जय गंगाधर हर जय गिरिजाधीशा। त्वं मां पालय नित्यं कृपया जगदीशा।
ॐ हर हर हर महादेव।।१।।

कैलाशे गिरिशिखरे कल्पद्रुमविपिने। गुञ्जतिमधुकरपुञ्जेकुञ्जवने गहने।।
कोकिल कूजति खेलति हंसावन ललिता। रचयति कलाकलापं नृत्यति मुदसहिता।।
ॐ हर हर हर महादेव।।२।।

तस्मिंल्ललितसुदेशे शालामणि रचिता। तन्मध्येहर निकटे गौरी मुद सहिता।।
क्रीडा रचयित भूषारञ्जित निजमीशं। इंद्रादिकसुरसेवित नामयते शीशम्।।
ॐ हर हर हर महादेव।।३।।

बिबुधबधूर्बहु नृत्यति हृदयेमुद सहिता। किन्नरगानं कुरुते सप्तस्वरसहिता।।
धिनकत थै थै धिनकत मृदङ्ग वादयते। क्वण क्वण ललिता वेणुं मधुरं नादयते।।
ॐ हर हर हर महादेव।।४।।

रुण रुण चरणे रचयति नूपुरमुज्ज्वलिता। चक्रावर्ते भ्रमयति कुरुते तांधिकतां।।
तां तां लुप चुप तां तां डमरू वादयते। अंगुष्ठांगुलिनादं लासिकतांकुरुते।।
ॐ हर हर हर महादेव।।५।।

कर्पूरद्युतिगौरं पंचानन सहितम्। त्रिनयनशशिधर मौलिं विषधर कण्ठयुतम्।।
सुन्दर जटाकलापं पावक युत भालं। डमरुत्रिशूल पिनांक कर धृतनृकपालनम्।।
ॐ हर हर हर महादेव।।६।।

मुण्डै रचयति माला पन्नगमुपवीतम्। वाम विभागे गिरिजा रूपं अतिललितम्।।
सुन्दर सकलशरीरे कृत भस्माभरणम्। इति बृषभध्वजरूपं तापत्रयहरणम्।।
ॐ हर हर हर महादेव।।७।।

शंखनिनादं कृत्वा झल्लरिनादयते। नीराजयते ब्रह्मा वेदऋचां पठते।।
अति मृदुचरण सरोजं हृदिकमले धृत्वा। अवलोकयति महेशं ईशं अभिनत्वा।।
ॐ हर हर हर महादेव।।८।।

ध्यानं आरति समये हृदये इति कृत्वा। रामस्त्रिजटानाथं ईशं अभिनत्वा।
संगीतमेवं प्रतिदिन पठनं यः कुरुते। शिवसायुज्यं गच्छति भक्त्या यः शृणुते।।
ॐ हर हर हर महादेव।।७।।

।।इति शिवनीराजनम्।।

# शिवजी की बड़ी आरती

जै शिव ओंकारा हो शिव पार्वती प्यारा, हो शिव ऊपर जल धारा।।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अर्द्धङ्गी धारा।।1।। ओ3म् हर हर हर महादेव।।टेक।।
एकानन चतुरानन पञ्चानन राजै। हंसासन गरुड़ासन वृषवाहन साजै।।2।। ओ3म् हर हर0
दोय भुज चार चतुर्भुज दशभुज ते सोहै। तीनों रूप निरखता त्रिभुवन मन मोहै।।3।। ओ3म् हर हर0
अक्षमाला वनमाला मुण्डमाला धारी। चन्दन मृगमद सोहे भाले शशिधारी।।4।। ओ3म् हर हर0
श्वेताम्बर पीताम्बर बाघम्बर अङ्गे। सनकादिक ब्रह्मादिक मुनि आदिक सङ्गे।।5।। ओ3म् हर हर0
करमध्ये कमण्डल चक्र त्रिशूल धरता। दुख हर्त्ता सुख कर्त्ता जग पालन करता ।।6।। ओ3म् हर हर0
शिवजी के हाथों में कंगन, कानन में कुण्डल, गल मोतियन माला
जटा में गंङ्गा विराजै, मस्तक में चन्दा साजै, ओढ़त मृगछाला।।7।। ओ3म् हर हर0
चौसठ योगिनी मंगल गावत नृत्य करत भैरू। बाजत ताल मृदङ्ग अरु बाजत डमरू।।8।। ओ3म् हर हर0
सच्चिदानन्द स्वरूपा त्रिभुवन के राजा। चारों वेद उचारत, अनहद के दाता।।9।। ओ3म् हर हर0
सावित्री भावत्री पार्वती अङ्गी। अर्धङ्गी प्रियरङ्गी शिव गौरा सङ्गी।।10।। ओ3म् हर हर0
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका। प्रणव अक्षर दोऊ मध्य ये तीनों एका।।11।। ओ3म हर हर0
पार्वती पर्वत में विराजै शंकर कैलाशा। आक धतूरे का भोजन भस्मि में वासा।।12।। ओ3म् हर हर0
श्री काशी में विश्वनाथ विराजै नन्दा ब्रह्मचारी। नित उठ दर्शन पावै महिमा अति भारी।।13।। ओ3म् हर हर0
शिवजी की आरती जो कोई नर गावे। कहत शिवानन्द स्वामी मन वांछित फल पावे।।14।। ओ3म् हर हर0

ॐ नमो शिवाय: ॐ नमो शिवाय: ॐ नमो शिवाय: रुद्राक्षधारी

# ॥ पुष्पांजलिमंत्र॥

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्रथमान्यासन्।
तेहनाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥
ॐ राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने नमो वयं वैश्रवणायकुर्म हे।
स मे कामान् कामकामाय मह्यम् कामेश्वरो वै श्रवणो ददातु॥
कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः॥ ॐ स्वस्ति साम्राज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायी स्यात्सार्वभौमः सार्वायुषऽआन्तादापरार्धात्पृथिव्यै समुद्र पर्यन्तायाऽएकराडिति। तदप्योश्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारोमरुत्तस्यावसन्गृहे। आविक्षितस्यकामप्रेर्व्विश्वेदेवाः सभासद इति॥
ॐ विश्वतश्चक्षुरुत व्विश्वतोमुखो विश्वतोबाहुरुत विश्वतस्पात्। सं बाहुभ्यां धमति सं पतत्रैर्द्यावाभूमि जनयन्देवऽएकः॥ ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्॥
ॐ नाना सुगन्ध पुष्पाणि यथाकालोभवानि च। पुष्पाञ्जलि मयादत्त गृहाणं परमेश्वरः॥
प्रदक्षिणाा-ॐ ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्तानिषङ्गिणः। तेषा ँ सहस्त्र योजनेऽव धन्वानि तन्मसि॥

## क्षमा प्रार्थना

कर चरण कृतं पर क्कायजं कर्मजं वा, श्रवण नयनजं वा मानसं वा पराधम्।
विहित मविहितं वा सर्वमेतत् क्षमस्व, जय जय करुणाब्धे श्री महादेव शंभो॥
अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम। तस्मात् कारुण्य भावेन रक्ष रक्ष महेश्वर॥

॥ इति क्षमा प्रार्थना॥

## ॥ अथ शिवनामावलि॥

ॐ महादेव शिवशंकर शम्भो, उमाकान्त हर त्रिपुरारे।
मृत्युञ्जय वृषभध्वज शूलिन, गंगाधर मृड मदनारे॥
हर शिवशंकर गौरीशं, वन्दे गंगाधरमीशम्।
रुद्रं पशुपतिमीशानं, कलये काशीपुरिनाथम्॥
जय शंभो जय शंभो, शिव गौरीशंकर जय शम्भो।
जय शंभो जय शंभो, शिव गौरी शंकर जय शम्भो॥
शिव शिवेति शिवेति शिवेति वा, हर हरेति हरेति हरेति वा।
भज मनः शिव मेव निरन्तरम्, रट मनः शिवमेव निरन्तरम्।
जप मनः शिव मेव निरन्तरम्, स्मर मनः शिवमेव निरन्तरम्॥
ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्ण मुदच्यते, पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णम

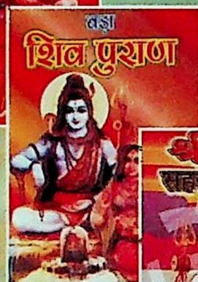
॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

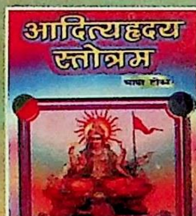
# हमारी अन्य धार्मिक पुस्तकें





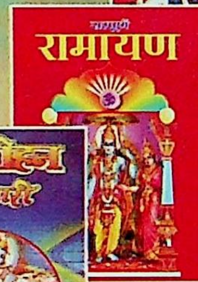


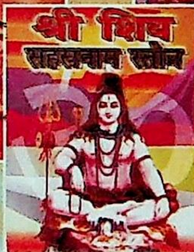




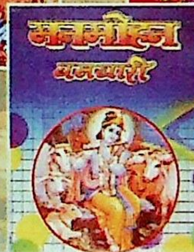




















**कर्म सिंह अमर सिंह पुस्तक विक्रेता, हरिद्वार**